भगवत्कृपानुभूति

डॉ. भगवान दास पटैरया

भगवत्कृपानुभूति

प्रकाशकः स्वयं (Published by Self)

लेखक : डॉ. भगवान दास पटैरया

© **श्रीमती कुसुम पटैरया**
डी-11, सैक्टर-36
नोएडा-201303

सौजन्य सेः श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति
स्थानीय कार्यालयः ए-447, सैक्टर-47, नोएडा
फोनः 0120-4305457

प्रथम संस्करण :
विक्रमी संवत् : 2078
दिसम्बर 2021

ISBN: 978-93-5566-042-8

मुद्रकः
एक्सेलप्रिंट, सी-36, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेस
झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

Bhagwatkripanubhuti (Experiences of Devine Grace) : Rs. 160/-

भगवत्कृपानुभूति

डॉ. भगवान दास पटैरया
ईमेलः bpateria@gmail.com
फोनः +91-9899004263

डी-11, सेक्टर-36
नोएडा-201303

समर्पण

पूज्य पिताजी एवं माता जी

स्व. श्री दुर्गा प्रसाद पटैरया (1914-1995)
स्व. श्रीमती रामा देवी पटैरया (1916-1986)
की पुण्य स्मृति में
जिनके आशीर्वाद से इस मुकाम तक पहुँचा

भगवत्कृपानुभूति

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
01	देवीजी की कृपा से जन्म	8–9
02	अध्ययन काल में भगवत्कृपा	10–16
03	भगवत्कृपा से सत्संग लाभ	17–20
04	परीक्षा पूर्व एवं परीक्षाकाल में ईश्वरीय प्रेरणा	21–26
05	भगवत्कृपा से मनवांछित पदस्थापना (पोस्टिंग)	27–32
06	प्रभु कृपा से संकट टला	33–37
07	पुत्र की निमोनिआ से रक्षा	38–39
08	संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) की परीक्षा	40–48
09	प्राकृतिक चिकित्सा का संबल मिला	49–51
10	जब एक अपरिचित बना देवदूत	52–55
11	कंपनी सेक्रेट्री की परीक्षा का प्रवेश पत्र	56–58
12	ईश्वर की कृपा से भवन निर्माण पूर्ण हुआ	59–61
13	मानस मंत्रों से अभीष्ट की प्राप्ति	62–67
14	विदेश यात्रा प्रकरण	68–70
15	विभिन्न दुर्घटनाओं में भगवत्कृपानुभूति	71–75
16	जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों का संक्षिप्त विवरण	76–85

प्रस्तावना

इस कृति का प्रमुख उद्देश्य भावी पीढ़ी में ईश्वर के प्रति विश्वास उत्पन्न करना है। मेरे जीवन में जब कुछ ऐसे दृश्य उपस्थित हुए, जिनसे मेरे मन में ईश्वर के प्रति आस्था दृढ़ होती गई, उन्हीं में से कुछ प्रसंगों का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिस प्रकार बरगद के वृक्ष के नन्हे पौधे को कोई भी उखाड़कर फेंक सकता है, पर वही पौधा जब पूर्ण वृक्ष बन जाता है, तब उसे एक हाथी भी नहीं उखाड़ सकता। उसी प्रकार जब विचार दृढ़ हो जाते हैं, तब कोई भी अविश्वास पैदा नहीं कर सकता है। ऐसा दृढ़ विश्वास ईश्वर के प्रति हो जाए, इसके लिए प्रारंभ से ही संस्कार डालने की आवश्यकता है। इस हेतु अपने धर्म-ग्रन्थों का सतत् अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान में हिन्दू धर्म का सर्वाधिक सरल एवं लोकप्रिय ग्रन्थ है-'श्रीरामचरितमानस' महाकाव्य अर्थात् गोस्वामी तुलसीदासकृत 'रामायण'। इसके अध्ययन/पाठ से अवश्य सुसंस्कार सृजित होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

ईश्वर की सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। नाम-रूपों में, उपासना विधि आदि में अंतर हो सकता है, पर मूल तत्व एक ही है जिसे पूर्णरूप से आज तक कोई नहीं जान पाया है। जिसने जो कुछ जाना भी, वह वर्णन नहीं कर सकता है, क्योंकि वह वाणी का विषय ही नहीं है, आत्म-अनुभव का विषय है, स्वयं के अनुभव का विषय है। एक बार उस ईश्वर की सत्ता में विश्वास करके कर्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहें, फिर अपने आप विश्वास दृढ़ होता जाएगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि हम पहले जानें तब मानें। पर जान पाना इतना आसान नहीं है, अतः मान लेना ही श्रेयस्कर है। उदाहरण के लिए रेखागणित के प्रमेय (साध्य या थॉरम) सिद्ध करने हेतु पहले कुछ मान लेते हैं और बाद में वह सिद्ध होने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले जो माना था वह सत्य है। ऐसे ही बीजगणित (एलजबरा) में कुछ मान

लेते हैं और बाद में प्रश्न का हल निकल जाने पर उसकी पुष्टि हो जाती है। इसी प्रकार प्रारंभ में ईश्वर की सत्ता में, कर्म–फल के रहस्यों आदि को शास्त्रों के अनुसार यदि मान लिया जाए तो स्वयं के अनुभव से यह सिद्ध हो जाएगा कि हमने जो माना था वही सही है, अतः पहले मानो, तब कालांतर में स्वयं जानो। मेरे जीवन में ऐसा ही हुआ। मुझे जो बताया गया, उसे मैंने अक्षरशः मान लिया और फिर अपने जीवन में उसे स्वयं अनुभव करके सही पाया और तब फिर कोई भी मेरा विश्वास डिगा नहीं सका। इसका एक ज्वलंत उदाहरण मुझे याद आ रहा है–बात सन् 1973 की है जब मैं जगदलपुर, मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) में तैनात था। ईश्वर की कृपा से सत्संग में मेरी रुचि हो गई थी, अतः जहाँ कहीं सत्संग की सूचना मिलती और यदि समय होता तो मैं अवश्य जाता। एक दिन एक मंदिर में आयोजन था। सत्संग से विश्राम पाते ही मैं अपने निवास की ओर जाने लगा, तभी एक सज्जन ने मुझे कुछ चर्चा हेतु बैठा लिया और अपने 'किसी मत' की बात बड़ी मजबूती के साथ प्रस्तुत की, पर मैंने श्रीरामचरितमानस में वर्णित कथा और धर्मनीति की बात रखी, जिसका उन्होंने विरोध किया। यह वाद–विवाद कई घंटों चला, पर मेरी श्रीरामचरितमानस के प्रति आस्था इतनी दृढ़ हो गई थी कि अंततः वे सज्जन मुझ पर अपनी बात का प्रभाव नहीं जमा सके।

जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तब निश्चित रूप से मन में यह विचार आता है कि यह किसने बनाई है। हमारी पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, ग्रह, तारे, नक्षत्र ये सब किसी ने तो बनाए होंगे। क्या यह विचार हमारे मन में नहीं आता है और यदि आता है तो हम सोचने पर बाध्य क्यों नहीं हो जाते कि कोई न कोई शक्ति तो है, जो इन सब पर नियंत्रण कर रही है। कुछ लोग इसे प्रकृति का रूप देते हैं और कुछ लोग इसे भगवान की शक्ति से परिचालित मानते हैं। हमारे देश में बहुत से ऐसे संत हुए है, जिन्होंने इस रहस्य को समझा है और अपने अनुभवों को भावी पीढ़ी के लिए सँजोकर रखा है। हमारे धार्मिक ग्रंथ इस सत्य का स्पष्ट प्रमाण हैं। जब कभी हमारे मन में कोई उद्वेग उठता है और हम उसके समाधान के लिए शांत मन से विचार करते हैं, तब उसका समाधान भी मिल

जाता है। इसे ही ईश्वरीय प्रेरणा कहते हैं। मेरे जीवन में ऐसे बहुत से अवसर आए, जब किसी न किसी कारण से मन उद्विग्न हुआ और मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की, जिससे मुझे समस्या का समाधान मिल गया। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ, बारंबार हुआ और कभी भी मुझे निराश नहीं होना पड़ा। इसे मैं भगवत्कृपानुभूति मानता हूँ। कुछ लोग कह सकते हैं कि यह संयोग की बात है, पर संयोग एक-दो बार हो सकता है, हर बार नहीं हो सकता है। ऐसी ही कुछ अनुभूतियों का विवरण पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। उल्लेखनीय है कि जब-जब मैंने दुखी मन से भगवान को पुकारा, मैं कभी निराश नहीं हुआ और सारे काम ऐसे बनते गए जैसे कि किसी ने पहले से सब कुछ सुनियोजित ढंग से कार्य संपन्न कर दिया हो।

जीवन में संग का बहुत प्रभाव पड़ता है। जिस वातावरण में मनुष्य रहता है और जिन लोगों के साथ रहता है उनके आचार-विचार का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। यह मैं ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ कि जब से मैंने होश संभाला मुझे अच्छे लोगों का ही साथ मिला। ईश्वर की कृपा के संदर्भ में यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि ईश्वर कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं, वे सब पर समान रूप से कृपा करते हैं, किंतु हम उनको समझ नहीं पाते। उदाहरण के लिए सूर्य का प्रकाश सर्वत्र समरूप से बिखर रहा है, किंतु यदि कोई अंधेरे कमरे में बैठ जाए तो इसमें सूर्य का क्या दोष है? इसी प्रकार से ईश्वर की कृपा सर्वत्र समरूप से सब पर हो रही है, किंतु हम उसका अनुभव नहीं कर पाते। कभी-कभी हमारे जीवन में कष्ट आता है और हम दुखी होकर सोचते हैं कि हम पर भगवान की कृपा नहीं है पर ऐसा नहीं है, उस दुख में भी प्रभु की कृपा है, यह हम समझ नहीं पाते। इस रहस्य को जानने के बाद भगवत्कृपानुभूति स्वयं होने लगेगी और तब सर्वत्र प्रभु कृपा का दर्शन होने लगेगा।

ईश्वर के जिस नाम-रूप में जिसकी रुचि हो उसे मानकर आगे बढ़कर अपने विश्वास में दृढ़ता लाने की आवश्यकता है, पर इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि विश्वास सर्व शक्तिमान ईश्वर की सत्ता

में करें। सभी देवी–देवता उसी परम सत्ता से शक्ति प्राप्त करते हैं। श्रीराम–कृष्ण उसी परम सत्ता के अवतार हैं तथा सन्त, भक्त, सदाचारी प्राणी उन्हीं की कृपा से ग्रन्थ लिखते हैं, सिद्धियाँ प्राप्त करके चमत्कार दिखाते हैं। हमें इस सबसे ऊपर उठकर सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर मुझे ईश्वरीय कृपा के जो अनुभव हुए हैं, उन्हें यथासंभव क्रमशः लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सौजन्य से यह प्रकाशित हो रही है, इसलिए मैं समिति का आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अनुग्रहीत हूँ कि समिति के अध्यक्ष पं. दिनेश चंद्र शर्मा एवं उपाध्यक्ष तथा दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली के सेवा निवृत्त मुख्य उप सम्पादक श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल' ने इसकी पाण्डुलिपि को पढ़कर महत्त्वपूर्ण सुझाव सुझाए। इसकी त्रुटिरहित रियायती दर पर टंकण (टाइपिंग) करने हेतु श्री जयपाल सिंह, दुकान नं0 100, ब्लॉक–2, गंगा शॉपिंग कॉम्पलैक्स, सैक्टर–29, नोएडा (फोनः 0120–4252778) को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि इस पुस्तिका को पढ़कर भावी पीढ़ी के मन में ईश्वरीय सत्ता के प्रति विश्वास जाग्रत होगा।

मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी वि.स. 2078
तदनुसार 8 दिसम्बर 2021

डॉ. भगवानदास पटैरया
डी–11, सेक्टर 36
नोएडा–201303

1. देवीजी की कृपा से जन्म

यदि आर्त्त हृदय से ईश्वर की प्रार्थना की जाए, तो कुछ भी दुर्लभ नहीं है। इसी का ज्वलंत उदाहरण है जनवरी 1946 की एक घटना है, जिसे मेरी माताजी ने मुझे बताया था। मेरे ताऊजी स्व0 श्री लक्ष्मी प्रसाद पटैरया अपने पुत्र स्व0 श्री सतीश चन्द्र पटैरया के विवाह की बात कर रहे थे। मेरी माता स्व0 रामा देवी उस वार्ता को छिपकर सुन रही थीं। उस समय मुझसे बड़ी पाँच बहिनें थीं। उस जमाने में यह प्रथा थी कि केवल पुत्र को ही धन-संपत्ति दी जाती थी। पुत्रियों को विवाह में जो दहेज दिया जाता था, वही उनका हिस्सा मान लिया जाता था। अलग से उन्हें धन-संपत्ति का हिस्सेदार नहीं बनाया जाता था। इस स्थिति में यदि स्वयं के कोई पुत्र नहीं हो तो जमीन-जायदाद सगे भाई के पुत्र को दी जाती थी। विवाह संबंधी वार्ता यह हो रही थी कि मेरे ताऊजी कह रहे थे कि देखिए मेरे छोटे भाई दुर्गा प्रसाद के तो कोई पुत्र नहीं है। पाँच बेटियाँ हैं, अतः सारी जमीन-जायदाद का उत्तराधिकारी मेरा ही पुत्र है। इस वार्ता को सुनकर मेरी माताजी को अत्यंत दुख हुआ। वे सोचने लगीं कि यदि मेरे एक पुत्र होता तो वे (उनके जेठजी) ऐसी बात न करते। दूसरे दिन वे सुबह जल्दी से गृह कार्य निपटाकर गाँव के बाहर स्थित देवीजी के मंदिर में गईं और रो-रोकर पुत्र प्राप्ति हेतु देवी से प्रार्थना करने लगीं। रोते-रोते उनको नींद सी आ गई और अर्द्ध निद्रा की स्थिति में देवीजी ने दर्शन देकर उनके सिर पर हाथ रखकर कहा जाओ मैंने तुम्हें एक ऐसा पुत्र दिया, जो दुनियाँ में तुम्हारा नाम रोशन करेगा। उठो, चिंता छोड़ो। आज से दसवें माह में तुम्हारे पुत्र होगा। मेरी माताजी की निद्रा टूटी। वे बहुत प्रसन्न मुद्रा में देवीजी की विनती करके घर आईं। देवीजी की कृपा से मार्गशीर्ष (अगहन मास) शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि शुक्रवार संवत् 2003 तदनुसार 29 नवंबर सन् 1946 को मेरा जन्म हुआ।

उस समय चिकित्सा व्यवस्था न के बराबर थी और विशेषकर छोटे गाँव-देहात में तो यदि कोई बीमार हो जाता तो पास के किसी अस्पताल में ले जाना भी बहुत मुश्किल था। छोटे बच्चों को तो भगवान के भरोसे ही छोड़ दिया जाता था। जब तक मैंने होश सँभाला, मेरी चार बहनें चल बसी थीं, केवल एक बड़ी बहिन को ही मैंने देखा। उनका विवाह भी हो गया था और जब मैं छटवीं कक्षा में पढ़ रहा था, उनका भी देहान्त हो गया। इस प्रसंग को लिखने का एकमात्र आशय यह बताने का है कि जब मैं बहुत छोटा था, (मुझे तो याद नहीं, माताजी बताया करती थीं) कई बार ऐसा बीमार पड़ा कि बचना मुश्किल था, किंतु मेरी माताजी मुझे देवीजी के मंदिर में ले जाकर उलहना देतीं कि माता आपने तो कहा था कि ये तुम्हारा नाम रोशन करेगा, पर जब इस बीमारी से बच पाएगा तब न। देवीजी से प्रार्थना करके माताजी मुझे लेकर घर आ जातीं और मैं ठीक हो जाता। इस प्रकार बचपन से ही **भगवत्कृपानुभूति** हुई और ऐसे संस्कार पड़े कि ईश्वर के प्रति आस्था दृढ़ होती गई।

मेरी माता कहा करती थीं कि तुम देवी के दिए हुए हो, जब कभी संकट आए तो उन्हीं को याद करना। वे एक बात और कहा करती थीं कि हमारे पूर्वजों का 'धनुषधारी श्रीराम' का एक मंदिर उदेपुरा (ग्राम सूपा, तहसील चरखारी, जिला महोबा, उत्तर प्रदेश) में है, अतः तुम धनुषधारी श्रीराम की उपासना करना। वही हमारे कुल देवता (स्वामी) हैं और उनकी विशेष पूजा मैराई छट (भाद्रपद शुक्ल पक्ष षष्ठी) को होती है। हमेशा उस दिन विशेष पूजा करते रहना।

श्रीराम और देवी (दुर्गा, लक्ष्मी, सीता आदि) में कोई अन्तर नहीं है, यह तथ्य धीरे-धीरे मेरी समझ में आया। जिस तरह जल और जल की लहर, सूर्य और सूर्य की प्रभा एक ही हैं, दो नहीं हैं। इसी प्रकार ईश्वर के सभी नाम-रूपों में एकता समझनी चाहिए।

2. अध्ययन काल में भगवत्कृपा

भाग्य और कर्म गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। गाड़ी ठीक प्रकार से चले इसके लिए आवश्यक है कि दोनों पहिए ठीक आकार के हों। इसी प्रकार जीवन यात्रा में भाग्य और कर्म का महत्त्व है। भाग्य हस्त रेखाओं, ज्योतिश शास्त्र आदि से कुछ हद तक जाना जा सकता है, पर कर्म हमारे अपने वश की बात है। जैसा बीज डालेंगे वैसा ही पौधा होगा। इस प्रकार से हमारे जीवन में कर्म की प्रधानता है। कर्म से ही भाग्य का निर्माण होता है। इस संदर्भ में जैसा मैंने संतों से सुना, सद्ग्रन्थों में पढ़ा और स्वयं अनुभव किया, उसे वर्णन करने का प्रयास कर रहा हूँः–

हम गैर वर्षाकाल में भी बड़ी नदियों में जलधारा देखते हैं। क्या हमने कभी विचार किया कि यह जल कहाँ से आ रहा है? जल विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार वर्षा का कुछ जल भूमिगत हो जाता है और कालान्तर में वही भूजल नदियों में जलधार के रूप में प्रकट होता रहता है। कुछ नदियों में गर्मी के मौसम में बर्फ पिघलने से जल आता है। इस सिद्धांत के अनुसार हम अनुभव करते हैं कि कुछ लोग बिना सत्कर्म किए ही संसार में सुख भोग रहे हैं और कुछ लोग सत्कर्म एवं सत्प्रयास करने पर भी दुखी दिखाई देते हैं। पर सुख–दुख की परिभाषा अलग–अलग है। जिसे हम बाहर से सुखी देख रहे हैं वह अंदर से कितना दुखी होगा, इसकी कल्पना हम नहीं कर सकते, पर यह सिद्धांत अटल है कि अच्छे कार्य का फल सदा अच्छा प्राप्त होगा और बुरे कार्य का फल कष्टदायक ही होगा। विभिन्न लोगों के जीवन में जो भिन्नताओं का अनुभव हुआ करता है वह उनके भाग्य एवं कर्म के अनुरूप ही होता है। एक जीवात्मा अमीर घराने में आती है और एक अत्यन्त गरीब के यहाँ जन्म लेती है। यह उनके भाग्य के कारण होता है, पर कर्म उनके हाथों में है, जैसा कर्म करेंगे वैसे ही अपने भाग्य का निर्माण वे स्वयं करेंगे।

भाग्य क्या है? हमारे ही कर्मों का फल है भाग्य। कर्म के तीन भेद हैं-क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध (भाग्य)। जो कर्म अभी किया जा रहा है, उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं। क्रियमाण कर्म क्रिया समाप्त होते ही संचित बन जाता है। किसी मनुष्य द्वारा पूर्व जन्मों से लेकर इस क्षण तक जो कर्म किये गये हैं, वे सब कर्म संचित कहे जाते हैं। कर्मफलदाता ईश्वर हमारे संचित कर्मों में से लेकर जिन कर्मों का फल निश्चित कर देते हैं, उन कर्मों के फल को प्रारब्ध कहा जाता है। कर्म करना तो हमारे हाथ में है, परन्तु कर्म का फल हमारे अधीन नहीं, ईश्वर के अधीन है। भाग्य तो कर्म से ही बनता है, इसलिए कर्म प्रधान है। कर्म बीज है, भाग्य वृक्ष है और सुख-दुख उसके मीठे-कड़ुवे फल हैं। यद्यपि प्रारब्धानुसार सुख-दुख भोगना अनिवार्य है, परन्तु इस नियम के अपवाद स्वरूप यदि मनुष्य साधना, तपस्या, सत्संग, पूजा-पाठ आदि उपायों से भाग्य के निर्माता ईश्वर की कृपा प्राप्त कर ले तो भाग्य को बदला जा सकता है। दुखी संसार को महात्मा तुलसीदासजी ने यह आशाजनक संदेश श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में इस प्रकार से दिया है :-

जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी। भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी॥ (1/70/5)

इसी (कर्म के) सिद्धांत के कारण भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥ (2/47)

अर्थात् तेरा कर्म करने मात्रा में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आशक्ति न हो (ऐसा न हो कि भयभीत होकर, इच्छित फल न मिलने के कारण तू कर्म करना ही छोड़ दे, अतः कर्म करना ही श्रेष्ठ है)।

श्रीरामचरितमानस में भी इसी सिद्धांत की पुष्टि करते हुए कर्म की प्रधानता का निरूपण किया है।

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फल चाखा।
(2/219/4)

अब इस कर्म के रहस्य के साथ-साथ भगवत्कृपा का रहस्य भी समझना आवश्यक है। इसके लिए पहले 'जन्म' का रहस्य समझना होगा। श्रीरामचरितमानस के अनुसार-

ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।
(7/117/2)

अर्थात् ईश्वर के ही अंश हम सभी प्राणी हैं। मनुष्य, कीट-पतंग, पेड़-पौधे सभी में एक ही ईश्वर की सत्ता समाई हुई है, ठीक उसी प्रकार से जैसे विद्युत धारा छोटे से छोटे बल्व अथवा भारी-भरकम उपकरणों में प्रवाहित होती है। जब कभी हमारी इच्छा के अनुरूप फल प्राप्ति नहीं होती है तो हम कहते हैं कि प्रभु कृपा नहीं मिली, पर हम उपर्युक्त कर्म सिद्धांत को न समझने के कारण ही भ्रमित होते हैं। कभी-कभी संयोगवश कुछ इच्छित कार्य हो जाते हैं, किंतु यदि बारम्बार ऐसे ही संयोग मिलते गए तो इसे भगवत्कृपा ही समझा जाएगा। यदि हम दृढ़ विश्वास के साथ अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहें तो ईश्वर की कृपा से सभी कार्य स्वतः निर्विघ्न सम्पन्न होते जाएँगे। इस संदर्भ में मुझे अपने अध्ययन काल (सन् 1953 से 1972) में जो अनुभव हुआ उसका विवरण इस प्रकार से है-

मेरा गाँव (बलचौर, जिला-हमीरपुर (अब महोबा, उ0प्र0) बहुत छोटा है। हमारे गाँव से प्राइमरी स्कूल लगभग 5 किलोमीटर दूर था। गाँव के बच्चे जब लगभग आठ-दस वर्ष के हो जाते थे, तब उन्हें उस समय स्कूल भेजा जाता था, क्योंकि आवागमन के साधन नहीं थे। कच्चे रास्तों से नदी पार करके पैदल ही जाना पड़ता था। मैं तो इसे ईश्वर की कृपा ही समझूँगा कि जब मेरी उम्र 6 वर्ष 4 माह की थी तब मार्च 1953 में गाँव में ही स्कूल खुल गया था और हम पंद्रह-बीस बच्चे पढ़ने जाने लगे। पहले ही दिन मैं स्कूल से भागकर अपने पिता श्री के पास गया और कहने लगा कि मुझे नहीं पढ़ना है। मुझे पढ़ना अच्छा नहीं लगता

है। उन्होंने समझाया कि यदि नहीं पढ़ोगे तो मेरी तरह इन्हीं खेतों में घुटते रहोगे और यदि मन लगाकर पढ़ोगे तो तुम एक न एक दिन इस छोटे से गाँव से निकलकर किसी अच्छे शहर में सुख पूर्वक रहोगे। उनका उपदेश सुनते ही मैंने पुनः दौड़ लगाई और स्कूल में जाकर पढ़ने लगा। उस दिन मुझे 20 तक गिनती आ गई। तब मैंने पुनः खेतों की ओर दौड़ लगाई और पिताजी को बताया कि आज ही मुझे बीस तक गिनती आ गईं। इसके बाद मैं नित्य मन लगाकर पढ़ने लगा। अध्ययन में मन लगाने का मेरी बड़ी बहिन (स्वर्गीया मूलवती देवी) का भी हाथ था। वे मुझे सुबह मेरा मन पसंद नाश्ता तैयार कर देतीं और कहतीं कि यदि तुम पढ़ने जाओगे तो रोज इसी तरह तुम्हें हमेशा मन पसंद भोजन मिलता रहेगा। मेरी माता श्री कहा करती थीं-

'मात-पिता बैरी भए, जिन्ह न पढ़ाए बाल।'

उनके इन वचनों से भी पढ़ने में मन लगा। पढ़ने की उम्र होते ही गाँव में स्कूल खुलना, पिताजी का उपदेश, बड़ी बहन की स्कूल जाने की प्रेरणा और माताजी का मुझे पढ़ाने का दृढ़ संकल्प, इन सभी में, मैं **भगवत्कृपानुभूति** करता हूँ। इस प्रकार गाँव के स्कूल से मई 1957 में कक्षा 5 प्रथम श्रेणी (प्रथम स्थान) में उत्तीर्ण कर ली। पर इसके बाद अध्ययन बंद हो गया, क्योंकि छटवीं कक्षा के लिए स्कूल गाँव से बहुत दूर था। वहाँ आवास व्यवस्था का भी प्रश्न था।

मेरे मन लगाकर पढ़ने का एक और कारण यह था कि मेरे चचेरे भाई स्व0 श्री मुकुंदलाल जी, जो मुझसे आठ-दस साल बड़े थे, अनपढ़ थे, किंतु मेरे साथ पढ़ते थे और मुझे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे, हाँलाकि स्कूल नहीं जाते थे (अधिक उम्र के कारण), पर मेरे साथ पढ़ते-पढ़ते कक्षा 5 तक का ज्ञान अर्जित कर चुके थे, तब उन्होंने पहल की कि अब उत्तर प्रदेश में छटवीं की फीस माफ हो गई है और कुलपहाड़ (हमारे गाँव से 16 किलोमीटर दूर) में एक मंदिर में आवास की व्यवस्था हो जाएगी, अतः उनके साथ मैंने छटवीं कक्षा कुलपहाड़, जिला महोबा (उ0प्र0) से पूर्ण कर ली, पर फिर अध्ययन बंद होने लगा, क्योंकि उन्होंने आगे पढ़ने से मना कर दिया और मेरे माता-पिता

अकेला वहाँ भेज नहीं रहे थे। एक वर्ष घर बैठने के पश्चात् तो छटवीं कक्षा मई 1959 में की और फिर अध्ययन बंद दिखाई दिया तो मैं रोता हुआ अपने पिता श्री के पास खेतों में चला गया। उन्होंने धैर्य धारण कराते हुए कहा कि कुछ प्रबंध करेंगे। वे तत्काल मेरे मामा श्री के पास नौगाँव (जिला छतरपुर, म0प्र0) गए और ऐसी व्यवस्था हो गई कि मैं सिगरावनकलाँ में रहूँगा (नानीजी के पास) और रोज 5 किलोमीटर पैदल चलकर नौगाँव पढ़ने जाया करूँगा। इस व्यवस्था से कक्षा 8 तक अध्ययन पूर्ण हो गया। मेरी नानी श्री मुझसे रोज रात्रि में रामायण (श्रीरामचरितमानस) सुना करती थीं। इस कारण मैंने पहली बार अर्थ सहित पूरा मानस पढ़ा और तब से नियमित पाठ करना प्रारंभ कर दिया। यह भगवत्कृपा से ही संभव हुआ। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि यदि मैं कुलपहाड़ में ही पढ़ता रहता तो अध्ययन बंद हो सकता था, क्योंकि सातवीं की फीस माफ नहीं थी और उस फीस को अदा करने की हमारी क्षमता नहीं थी, जबकि मध्य प्रदेश में हायर सेकिन्ड्री तक की फीस माफ थी। इस प्रकार कुलपहाड़ से नौगाँव अध्ययन करने जाने में मैं ईश्वर की कृपा ही समझता हूँ।

आठवीं के पश्चात् फिर अध्ययन बंद होने के कगार पर आ गया, क्योंकि कुछ अपरिहार्य कारणवश अब मैं नानी श्री के पास नहीं रह सकता था और नौगाँव कस्बे में बोर्डिंग में अथवा कमरा किराए पर लेकर रहना मेरी सामर्थ्य से बाहर की बात थी, पर मेरे मामा श्री ने धैर्य बंधाया। तब मैंने विचार किया कि क्या मैं ट्यूशन करके इतना धन अर्जित कर सकता हूँ कि मेरा खर्च पूरा हो सके। ईश्वर की कृपा से यह युक्ति सफल हुई। कभी-कभी हम सोचा करते हैं कि उसी परिस्थिति, जिसमें हम हैं ठीक हैं, उससे भिन्न परिस्थिति में जाने से भयभीत हो जाते हैं जैसे कि मेरा कुलपहाड़ से हटना और फिर सिंगरावनकलाँ से हटना, पर इसमें मैं भगवान की कृपा ही समझता हूँ, क्योंकि यदि सिंगरावनकलाँ में रहकर पढ़ता रहता तो आगे की पढ़ाई का खर्च वहन नहीं कर सकता था। दूसरी बात यह है कि ट्यूशन करने से मेरी बुद्धि का भी विकास हुआ और आर्थिक तंगी भी नहीं रही। इस

प्रकार ट्यूशन पढ़ाकर तथा सरकार से छात्रवृत्ति (वजीफा) प्राप्त करके (स्कूल में हमेशा प्रथम स्थान आने पर) नौगाँव से 1964 में मैंने उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। मेरा इरादा था कि ग्यारहवीं कक्षा (उच्चतर माध्यमिक बोर्ड) परीक्षा पास करके अध्यापकी करके अपने गाँव के आस-पास रहकर माता-पिता की सेवा करूँगा।

बचपन से ही ईश्वर की कृपा में आस्था रही, इसलिए निश्चिन्त था कि जो ईश्वर की कृपा से प्राप्त हो जाएगा उसी में संतोष कर लूँगा। उस समय आजकल जैसी संचार व्यवस्थाएँ नहीं थीं। अखबार खरीद नहीं सकता था, समाचार सुनने के लिए रेडियो नहीं था, समयाभाव के कारण पुस्तकालय जाकर भी समाचार-पत्र पढ़ नहीं सकता था, इन सभी कारणों से मेरा सामान्य ज्ञान शून्य सा था। एक और बात, मेरी मित्र मंडली भी नहीं थी कि आपस में कुछ बात करके सामान्य ज्ञान का आदान-प्रदान हो सके, क्योंकि मैं सुबह 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक स्वयं के अध्ययन, अपने लिए चूल्हे पर भोजन तैयार करना, स्कूल जाना और चार-पाँच घंटे ट्यूशन पढ़ाने में पूर्णतया व्यस्त रहता। मैं अध्यापकी के लिए विचार कर ही रहा था कि एक दिन एक विद्यार्थी को नक्शे बनाने वाले बड़े स्केल (टी) को देखा, तब मैंने किसी से प्रश्न किया कि ये कहाँ पढ़ते हैं और नक्शा बनाने की कला कहाँ सीखते हैं, तब मुझे पता चला कि नौगाँव में एक पॉलीटैक्निक कॉलेज है, जिसमें तीन साल की ट्रेनिंग के पश्चात् ओवरसियर (अब इस पद को जूनियर इंजीनियर कहते हैं) बन जाते हैं। यह भी पता चला कि इसमें प्रवेश के लिए गणित के साथ विज्ञान में उच्चतर माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यक है। यह प्रमाणपत्र मुझे मिलने ही वाला था। उस समय कोई प्रवेश परीक्षा नहीं हुआ करती थी, केवल बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रवेश मिलता था। मैंने आवेदन कर दिया। डिप्लोमा कोर्स में मैंने सिविल इंजीनियरी का विकल्प दिया था जो मुझे मिल गया और इतना ही नहीं, ईश्वर की कृपा से लगभग 150 विद्यार्थियों में मेरा प्रथम स्थान था (बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर), अतः मुझे पूरे अध्ययनकाल तक वजीफा मिलता रहा,

जिससे खर्च आसानी से चल गया। इस बीच मुझे किसी ने बताया कि डिप्लोमा पूरा करने के पश्चात् सर्विस करते हुए इंजीनियरी डिग्री की जा सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए गहन अध्ययन किया जिससे डिग्री भी समय पर कर ली और फिर इसके माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग (U.P.S.C.) की परीक्षा भी उत्तीर्ण करके भारत सरकार में 'प्रथम श्रेणी' राजपत्रित अधिकारी के रूप में नियुक्ति मिल गई। संघ लोक सेवा आयोग के संदर्भ में विस्तृत विवरण कि किस प्रकार ईश्वर की कृपा से यह सब संभव हुआ, अलग से अध्याय 8 में वर्णन किया गया है।

अब विचार करें यदि –

(1) मेरी पढ़ने की उम्र होते ही मार्च 1953 में गाँव में स्कूल का खुलना।

(2) चचेरे भाई की सहायता से कुलपहाड़ पढ़ने की व्यवस्था हो जाना।

(3) सिंगरावन में नानी श्री के आश्रय से सातवीं व आठवीं कक्षा पास हो जाना।

(4) नौगाँव में रहकर ट्यूशन करने की प्रेरणा से आगे की पढ़ाई होना।

(5) पॉलीटैक्निक कोर्स की जानकारी मिलने पर और वहाँ पर वजीफा मिल जाने से वह कोर्स भी आसानी से कर लेना।

(6) इंजीनियरी डिग्री करने की जानकारी मिलने पर वह कोर्स भी समय पर पूर्ण हो जाना।

(7) संघ लोक सेवा आयोग (U.P.S.C.) जैसी कठिनतम परीक्षा प्रथम बार में ही उत्तीर्ण कर लेना।

ये एक के बाद एक सीढ़ी की तरह मिलती गईं सफलताएँ महज संयोग नहीं है, इसे मैं माता–पिता एवं बड़ों के आशीर्वाद के साथ–साथ भगवान की कृपा ही मानता हूँ।

3. भगवत्कृपा से सत्संग लाभ

भगवान की विशेष कृपा से ही विशुद्ध संत से मिलन होता है अर्थात् जीवन यात्रा में जो संयोग-वियोग होता है वह विधाता द्वारा पूर्व निर्धारित समय सारिणी के अनुसार ही होता रहता है। इस क्रम में हमें सुसंग से लाभ और कुसंग से हानि तो होती है, पर हम अपने विवेक से यह सब ईश्वर की कृपा मानकर समबुद्धि भाव से सुसंग के लाभ उठाते हुए कुसंग की हानि से बच सकते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार मुझे अध्ययन काल, विशेषकर नौगाँव, मध्य प्रदेश में कक्षा 9 से डिप्लोमा कोर्स तक अर्थात् जुलाई 1961 से जून 1967 तक, जो अनुभव प्राप्त हुआ वह इस प्रकार से है:-

यह मैं ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ कि मुझे बचपन से सुसंग ही प्राप्त हुआ, हालाँकि कभी-कभार कुसंग भी मिला, पर वह शीघ्र ही या तो सुसंग में बदल गया या उससे छुटकारा ही मिल गया। अध्याय 2 में प्रारंभिक अध्ययन काल का वर्णन है जिसमें मेरे चचेरे भाई स्व0 श्री मुकुंदलाल पटैरया ने मेरे अंदर आस्तिकता की वृद्धि की और फिर जब मैं सिंगरावन में 2 वर्ष रहा, वहाँ नानी श्री को प्रसन्न करने के उद्देश्य से रामायण (गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस) पढ़ता रहा, उन्हें अर्थ सहित सुनाता रहा। इससे मेरे मन में श्रीरामचरितमानस के प्रति श्रद्धा-प्रेम जाग्रत हुआ और जब मैं नौगाँव में अकेला रहकर अध्ययन कर रहा था, तब प्रत्येक रविवार को वहाँ पर होने वाले गायत्री यज्ञ में अवश्य शामिल होता था तथा वहीं पर किसी विशेष दिन होने वाले सत्संग की सूचना मिल जाती थी, जिसके अनुसार यथासंभव उसका भी लाभ उठाता रहा। उल्लेखनीय है कि मथुरा निवासी आचार्य श्रीराम शर्मा उन दिनों विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए 'गायत्री यज्ञ' का प्रचार करते थे। नौगाँव में उन्हीं ने गायत्री यज्ञ उन दिनों प्रारंभ कराया था जो आज भी चल रहा है। कालान्तर में उन्होंने हरिद्वार में शांति कुंज आश्रम की

स्थापना की। इस प्रकार नियमित रूप से गायत्री यज्ञ में भाग लेते हुए सत्संग का लाभ मिलता रहा। जनवरी सन् 1965 में एक रविवार को गायत्री यज्ञ में डॉ0 महेश लाल डिड्डी (ब्राह्मण पंजाब से) पधारे। यज्ञ की समाप्ति पर, वहाँ का नियम था कि कोई न कोई विद्वान भगवच्चर्चा करते थे। उस दिन डॉ0 डिड्डी ने अपने प्रवचन के दौरान बताया कि उनके निवास (अस्पताल का रिहायशी क्षेत्र) पर प्रत्येक सोमवार और गुरुवार रात्रि 8 बजे कीर्तन होता है, इच्छुक महानुभाव उसमें शामिल हो सकते हैं।

यह सूचना प्राप्त कर जिस दिन कुछ व्यस्तता कम होती थी, उस सोमवार को मैं कीर्तन में चला जाता। बहुत आनंद आया, पर अध्ययन में व्यस्तता के कारण फिर करीब एक माह बाद कीर्तन में गया और तब उन्होंने मुझसे कीर्तन में न आने का कारण पूछा। बिना किसी दुराव के मैंने स्पष्ट बता दिया कि मैं चार-पाँच ट्यूशन करके अपना अध्ययन का खर्च पूरा कर पाता हूँ। मुझे प्रत्येक सोमवार-गुरुवार को आने का समय नहीं मिलता। इस पर उन्होंने जो समझाया मुझे आज तक याद है। उन्होंने कहा कि सप्ताह में दो दिन दो घंटे भगवान के नाम पर निकालने से तुम्हारे अध्ययन में रुकावट नहीं होगी, बल्कि उनकी कृपा से तुम्हें और कुशाग्र बुद्धि प्राप्त होगी और तुम पहले से अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होगे। वे अनन्य शिवभक्त थे। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि तुम पर शिवजी की कृपा सदैव बनी रहे। तुम प्रत्येक सोमवार-गुरुवार को कीर्तन में आया करो। मैंने उन्हें मन ही मन अपना गुरु वरण कर लिया और उसके बाद जून 1967 तक, जब तक मैं नौगाँव में रहा, बिना नागा प्रत्येक सोमवार-गुरुवार को कीर्तन में जाता रहा और महा शिवरात्रि को तो पूरी रात उनके सत्संग का लाभ प्राप्त करता। वे नित्य नए-नए कीर्तन बनाकर शिव जी को सुनाया करते थे। हम दस-पाँच लोग जो भी कीर्तन में आते थे, सभी को स्वयं पद, दोहे, कीर्तन आदि चाहे वे दो लाइनों के ही हों, बनाकर शिव जी को सुनाने की प्रेरणा देते थे। इसका विशेष लाभ मुझे यह हुआ कि जब-जब मुझे कोई परेशानी हुई, मैंने कुछ पंक्तियाँ कीर्तन की लिख दीं, इससे मुझे आत्म संतोष मिला। इन सब

दोहे, भजन–कीर्तन को एक डायरी में अलग से नोट करता रहता था जो कालान्तर में 'भक्ति पुष्प' नामक एक काव्य संग्रह के रूप में प्रकाशित हुआ। इसी श्रृंखला में स्वरचित कविताओं का एक और संग्रह 'सप्त सुमन' भी प्रकाशित हुआ।

वे जो कीर्तन गाया करते थे वे अधिकतर 2 पंक्तियों के होते थे। प्रत्येक सोमवार–गुरुवार को कीर्तन मंडली के सभी सदस्य कोई न कोई नया कीर्तन बनाकर गाते थे। जो सदस्य कोई नया कीर्तन नहीं बना पाता था, उसे वे स्वयं एक नया कीर्तन बनाकर बता देते थे। सभी सदस्यों के गायन के बाद वे उसी समय एक नया कीर्तन सृजित कर भाव सहित करताल बजाते हुए नृत्य करके गाते थे। वे सभी सदस्यों को भाव सहित नृत्य करते हुए कीर्तन गायन करने को प्रेरित करते थे। प्रारंभ में जो सदस्य संकोचवश नृत्य नहीं कर पाते थे, उन्हें खड़े होकर कीर्तन करने को कहा जाता था और कुछ दिनों बाद वे सदस्य सबकी देखा देखी नृत्य करके कीर्तन गाने लगते। एक बार उन्होंने कीर्तन में नृत्य करने की प्रेरणा देने हेतु यह कीर्तन गाया:–

भोलेनाथ को रिझाओ नाचो छोड़ के शरम।
गौरीनाथ के प्यारो तुम्हें मेरी है कसम॥

यह सुनकर फिर सभी सदस्य भाव सहित नृत्य करते हुए कीर्तन गाने लगे थे। दो लाइनों के ये कीर्तन बहुत प्रभावशाली हैं और विपत्ति की घड़ी में ईश्वरीय विश्वास जाग्रत करके धैर्य धारण करने हेतु बहुत सहायक हैं। कुछ कीर्तन इस प्रकार से हैं–

मैंने तो चरणों में दे दी अर्जी।
मानो न मानो भोले तेरी मर्जी॥

यह कीर्तन मैंने उस समय लिखा और प्रस्तुत किया जब कि विशेष कार्य के लिए भगवान से प्रार्थना की। इसके उत्तर में धैर्य धारण कराते हुए गुरुजी ने यह उत्तर दिया:–

तेरा नहीं कोई मना तुझे ये मलाल है।
सोच न करो भई गौरीनाथ को ख्याल है॥

इसके साथ यह भी समझाया कि तुम्हारे लिए जो कल्याणकारी होगा, भगवान वही करेंगे, अतः यदि कभी मनचाहा प्राप्त न हो, तब भी ईश्वर के विधान में विश्वास करके सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। इस शिक्षा से जब भी मेरे जीवन में कोई संकट आया, ईश्वर को याद किया और इसी प्रकार की दो लाइनों के कीर्तनों के साथ वह दुख या तो दूर हो गया या फिर मुझे उस दुख को सहन करने का साहस मिला। **समय-समय पर आगे जो घटनाएँ घटीं, जिनसे भगवत्कृपानुभूति हुई, उनका वर्णन आगे के अध्यायों में किया गया है।**

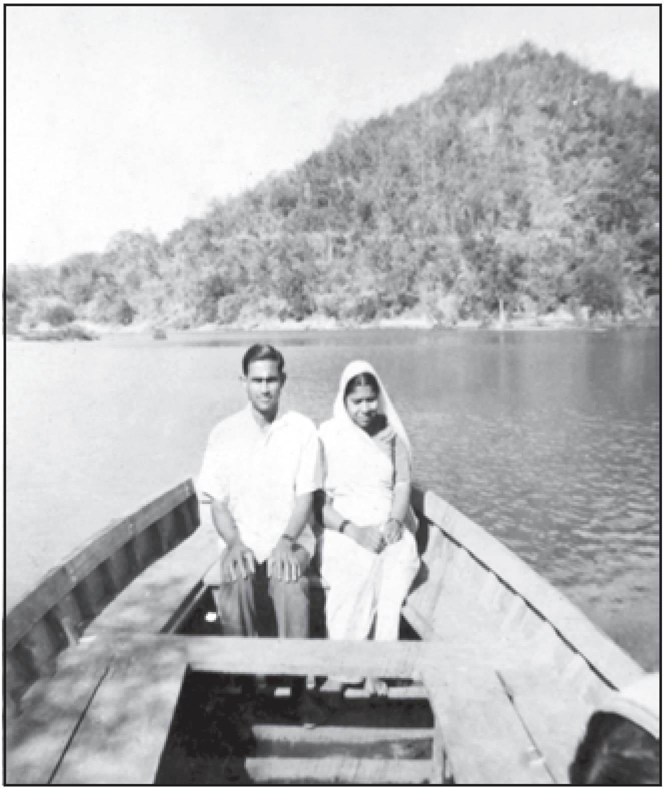

सात्धार (सन् 1968) में इन्द्रावती नदी में वही नाव जिसमें हम बाल-बाल बचे थे। (संदर्भ अध्याय 15)

4. परीक्षा पूर्व एवं परीक्षा काल में ईश्वरीय प्रेरणा

अधिकांश लोगों को, विशेषकर जो आस्तिक हैं अनुभव होगा कि जब कभी कोई संकट आता है, तब हम ईश्वर का स्मरण अवश्य करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमें कुछ न कुछ सहारा मिल जाता है। एकाएक किसी तथ्य पर ध्यान चला जाता है जिसकी सहायता से संकट टल जाता है या संकट को झेलने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। मेरे जीवन में कई बार ऐसे अवसर आए और जब मैंने भगवान का स्मरण किया मुझे संकट से उबार लिया गया। अध्ययन काल की ऐसी ही तीन घटनाओं का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

4.1 डिप्लोमा कोर्स की अंतिम परीक्षा :-

पिछले अध्याय में जैसा कि वर्णन किया गया है कि मैं प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को कीर्तन में जाता था। दिसंबर 1966 की बात है जब डिप्लोमा कोर्स की अंतिम परीक्षा का डिजाइन का पेपर शुक्रवार को था, ऐसी स्थिति में विचार कर रहा था कि गुरुवार रात्रि को कीर्तन में जाऊँ कि न जाऊँ, पर मुझे गुरुजी का वह आश्वासन याद आ गया कि कीर्तन में आने से तुम्हारी पढ़ाई का कोई नुकसान नहीं होगा बल्कि तुम परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करोगे। यह स्मरण करते ही मैं कीर्तन में चला गया और लौटते हुए रात्रि के ग्यारह बज गए क्योंकि उस दिन मंडली के सभी सदस्य आए थे और यह नियम था कि चाहे जितनी रात हो जाए सभी को एक-एक कीर्तन गायन करना होता था। यहाँ पर डिजायन के पेपर के संदर्भ में यह बताना आवश्यक है कि यह पेपर साढ़े चार घंटे का होता है और इसमे 80% नम्बर का एक मुख्य प्रश्न डिजाइन का होता है जिसमें किसी संरचना जैसे रेल का पुल, पानी की टंकी, किसी बिल्डिंग की छत आदि की पूरी डिजायन करके उसका

नक्शा बनाना होता है। हमारे कोर्स में ऐसी कुल 16 डिजाइनें थीं जिनको बनाने का पूरे साल अभ्यास किया था, पर परीक्षा के समय के पहले सभी को एक बार देखना उनके सूत्रों को याद करना आवश्यक होता है। अब मेरे पास केवल एक घंटे का समय था, क्योंकि 12 बजे सो जाना आवश्यक था, सुबह 7 बजे से पेपर था। मैंने शिवजी का स्मरण किया और गुरुजी के आश्वासन की उन्हें याद दिलाई कि अब मेरा मार्गदर्शन करें कि मैं क्या पढ़ूँ? यह सोचते ही मुझे ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि तुम रेलवे पुल (प्लेट गरडर) की डिजाइन-ड्राइंग देख लो। इतने कम समय में सिर्फ एक दृष्टि ही डालनी होती है और सूत्र (फारमूले) एक बार मस्तिष्क में बैठा लेना होता है। मैंने यही किया और जब सुबह प्रश्नपत्र देखा तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा क्योंकि जो डिजाइन मैंने रात्रि में 11 से 12 बजे के बीच देखी, ठीक वही प्रश्नपत्र में थी। पूरी तन्मयता से प्रश्नपत्र हल किया और जब परीक्षा परिणाम आया तब इस पेपर में 82% अंक थे जबकि मेरा मध्य प्रदेश तकनीकी बोर्ड की मैरिट लिस्ट में चतुर्थ नम्बर था और औसतांक 80.6% था और जिसको प्रथम स्थान मिला उनका औसतांक 83.3% ही था। किसी पेपर विशेषकर डिजाइन के पेपर में 82% अंक प्राप्त करना मुश्किल की बात होती है। यह शिव जी की कृपा का ही परिणाम था कि वही प्रश्न पेपर में था जो रात्रि में एक बार पढ़ा था।

4.2 ए.एम.आई.ई. की परीक्षा में ईश्वरीय प्रेरणाः-

डिप्लोमा कोर्स के समय ही मुझे यह जानकारी प्राप्त हो गई थी कि 'दि इस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) की ए.एम.आई.ई. की सदस्यता हेतु सैक्सन 'ए' और 'बी' की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करनी होती हैं। ये परीक्षाएँ इंजीनियरी स्नातक समकक्ष होती हैं और इनकी मान्यता पूरे विश्व में है। ईश्वर की ऐसी प्रेरणा रही कि मैंने डिप्लोमा कोर्स में विषयों को अच्छी तरह समझने और अभ्यास करने का प्रयास किया ताकि उपर्युक्त परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को समझने में आसानी हो। मैंने मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में 19 जून 1967 में कार्यभार ग्रहण किया जिसका विवरण अध्याय 5 में विस्तार से वर्णन किया गया है। नवंबर

1968 में पहली बार ए.एम.आई.ई. के सैक्सन 'ए' की परीक्षा में बैठा और मई 1970 में पूर्ण कर ली, पर इस आखिरी प्रयास में अर्थात् मई 1970 की परीक्षा में जो ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त हुई उसका विवरण यहाँ पर दे रहा हूँ–

4.2.1 सैक्सन 'ए' की परीक्षाः–

इस परीक्षा का यह नियम है कि किसी विषय में 50% अंक प्राप्त करने पर उस विषय की फिर परीक्षा नहीं देनी होती है। दोनों सैक्सनों में कुल 17 पेपर होते थे (उस समय) और एक–एक, दो–दो पेपर भी इसी तरह से पास किए जा सकते हैं, पर सैक्सन के आखिरी प्रयास में यदि किसी पेपर में न्यूनतम 35% अंक प्राप्त हों और सभी विषयों के अंकों का औसत 50% हो तो परीक्षा उत्तीर्ण मानी जाती है। सैक्सन 'ए' का इंजीनियरी ड्राइंग का पेपर मुझे सबसे कठिन लगता था जो मैंने मई 1970 की परीक्षा में दिया और इसमें यदि मुझे 35% अंक ही मिल जाते तो सैक्सन 'ए' पूर्ण हो जाता, क्योंकि एक अन्य विषय में मुझे पिछली परीक्षा में 96% अंक मिल चुके थे। जब मैंने उक्त पेपर (इंजीनियरी ड्राइंग) का प्रश्नपत्र पढ़ा तो घबरा गया, क्योंकि मुख्य प्रश्न जिसको हल किए बिना 35% अंक प्राप्त करना कठिन था, मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था, तथापि मैं अन्य प्रश्नों को करता रहा और जब आधे घंटे का समय शेष रहा तब निराश होकर कॉपी रखने ही वाला था कि जैसे किसी ने मेरे कान में कहा हो कि एक बार फिर से उस प्रश्न को पढ़ तो लो और मैं शिवजी का स्मरण करते हुए पुनः उस प्रश्न को पढ़ने लगा। वह प्रश्न एक वक्र (कर्व) की ड्राइंग से संबंधित था, किंतु घुमाफिरा कर इस तरह लिखा था कि पहले कई बार पढ़ने पर भी समझ में नहीं आया, किंतु अब उस पर दृष्टि डालते ही समझ गया कि यह पैराबोलिक कर्व का प्रश्न है। यह जानकर कि अब केवल 29 मिनट का समय शेष है और आता हुआ प्रश्न भी शायद ही पूर्ण हो सके, मेरे हाथ काँपने लगे। ईश्वर का स्मरण करते हुए हाथों को मला और प्रश्न के अनुरूप कर्व खींचने लगा। समय पर प्रश्न पूर्ण होने पर मैंने राहत की साँस ली। मुझे विश्वास हो गया कि इस पेपर में 35%

अंक अवश्य आ जाएँगे जिससे सैक्सन 'ए' पूर्ण हो जाएगा।

उल्लेखनीय है कि मेरा परीक्षा केन्द्र भिलाई, मध्य प्रदेश (अब छत्तीसगढ़) में था और मैं मध्य प्रदेश विद्युत मंडल के अतिथिगृह में रुका हुआ था जो परीक्षा केन्द्र से तीन-चार किलोमीटर की दूरी पर था। आते-जाते मैं प्रभु स्मरण करता रहता था। इस दिन वापिसी यात्रा में यह कीर्तन स्मरण करते हुए आया:-

दुखी हो आज मैंने शिव को पुकारा।
सुनिके भोलेनाथ मेरा काज सँवारा।।

उल्लेखनीय है कि उक्त पेपर में मुझे 35% अंक प्राप्त हुए और सभी आठ पेपरों का औसत 59.5% था। इस प्रकार मैं सैक्सन 'ए' में उत्तीर्ण हो गया। इससे ईश्वर की कृपा में मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया। विचारणीय है कि अगर वह प्रश्न, जो आखिरी समय में हल हो गया, यदि न कर पाता तो फिर से परीक्षा देनी पड़ती और इसका प्रभाव आगामी परीक्षाओं पर पड़ता।

4.2.2 सैक्सन 'बी' की परीक्षा:-

सैक्सन 'ए' की परीक्षा के पश्चात् एक वर्ष के अंतराल में ही सैक्सन 'बी' की परीक्षा दी जा सकती है। इस एक वर्ष में किसी अनुभवी इंजीनियर के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए एक रिपोर्ट तैयार करनी होती है और इस रिपोर्ट के साथ इंस्टीट्यूशन द्वारा निर्धारित किसी विशेषज्ञ के साथ साक्षात्कार होता है जिसमें उस रिपोर्ट पर चर्चा की जाती है तथा उनकी संतुष्टि के पश्चात् उनकी संस्तुति पर ही सैक्सन 'बी' की परीक्षा में बैठ सकते हैं। विभागीय कर्मचारी को पूरे साल के कार्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना होता है। मैं सरकारी विभाग में कार्यरत था, अतः मैंने जो सर्वेक्षण का कार्य किया उसके नक्शे तैयार करके उनके 'ब्लू प्रिंट' इकट्ठे कर लिए। मुझे अशोक नगर पॉलीटैकनिक के प्रिंसिपल के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा गया। उस समय आजकल जैसी फोन की सुविधा नहीं थी। मैंने विभाग से एक सप्ताह का अवकाश पहले से स्वीकृत कराके उसी के अनुसार प्रिंसिपल

महोदय को पत्र लिख दिया कि मैं अमुक तारीख को रिपोर्ट के साथ उनके सम्मुख साक्षात्कार हेतु उपस्थित होऊँगा। मैं निर्धारित तिथि को उनके कार्यालय पहुँच गया, पर पता चला कि वे महोदय कुछ कार्यवश अशोकनगर से बाहर गए हुए हैं। मैं परेशान था कि इतनी छुट्‌टी बेकार गईं, खर्च भी हुआ और यदि आज काम नहीं बना तो अगली परीक्षा देने में भी विलम्ब हो जाएगा। कहावत है ''हारे को हरि नाम'' और फिर मुझे तो अब पूर्ण विश्वास हो गया था कि प्रभु कृपा से सब ठीक ही होगा। ईश्वर को स्मरण करते ही मेरे मन में विचार आया कि किसी अन्य अधिकारी से बात की जाए, इतने में एक सज्जन आ गए और बोले कि जो रिपोर्ट आप लाए हो, मुझे दे दो मैं प्रिंसिपल साहब को दे दूँगा। संपूर्ण रिपोर्ट उन्हें सौंपकर वापिस अपने कार्यस्थल पर आ गया और ईश्वर से प्रार्थना करता रहा कि शीघ्र यह प्रैक्टीकल का कार्य पूर्ण जो जाए। लगभग दो माह बाद मुझे इंस्टीट्यूशन से पत्र प्राप्त हो गया कि आपको सैक्सन 'बी' की परीक्षा की अनुमति प्रदान की जाती है। मुझे विश्वास है कि यह ईश्वर की कृपा से ही संभव हो सका, क्योंकि केवल रिपोर्ट देखकर बिना साक्षात्कार के सामान्यत: कोई भी अधिकारी प्रैक्टीकल में उत्तीर्ण की संस्तुति नहीं करता।

4.2.3 सैक्सन 'बी' की परीक्षा में अप्रत्याशित सहायता:–

मई 1970 में सैक्सन 'ए' की परीक्षा के पश्चात् एक साल का अंतराल रहता है, इस बीच प्रैक्टीकल ट्रेनिंग उत्तीर्ण होना आवश्यक है, जो उपर्युक्त वर्णन के अनुसार ईश्वर कृपा से ही पूर्ण हो गई और मैं मई 1971 की परीक्षा में शामिल हुआ तथा सभी 9 प्रश्नपत्रों को एक साथ पास करने का प्रयास किया किंतु 4 पेपर में ही 50% से अधिक अंक मिले। अब नवंबर 1971 की परीक्षा के लिए इनकी तैयारी प्रारंभ कर दी, किंतु इंजीनियरी डिजाइन–ड्राइंग का पेपर बहुत कठिन लग रहा था। सब कुछ आते हुए भी गणना निर्धारित समय 4 घंटे के अंदर नहीं हो पाती क्योंकि मुझे लॉग टेबिल से गणना करने का अभ्यास था। मैं शहर से 110 किलोमीटर दूर जंगल में इन्द्रावती नदी के किनारे सर्वे कैम्प में तैनात था और वहाँ पर कोई इंजीनियर मेरा मार्गदर्शन करने

वाला नहीं था, क्योंकि वहाँ तैनात सभी कर्मचारी मेरी तरह डिप्लोमा होल्डर थे और डिप्लोमा कोर्स में लॉग टेबिल से गणना करने से ही काम चल जाता है। इसे ईश्वर की कृपा ही नहीं तो और क्या कहें कि जून 1971 में एक स्नातक इंजीनियर की वहाँ पदस्थापना (पोस्टिंग) हो गई। मैंने उन्हीं को अपनी समस्या सुनाई। मुझे आश्वासन दिया कि निराश न हों, शीघ्र गणना करने की सर्वोत्तम विधि बताता हूँ। उन्होंने कहा कि हाथी दांत का बना 'स्लाइड रूल' खरीद लो उसका प्रचालन सिखा दूँगा। मैं अगले दिन ही जगदलपुर शहर (कैम्प से 110 किलोमीटर दूर जिसमें 32 किलोमीटर पैदल चलना होता था) गया और वह उपकरण ले आया। एक सप्ताह के अंदर ही ईश्वर की कृपा से मैं उससे बहुत तेजी से गणना करने लगा। सभी डिजाइन जो कोर्स में थीं, घड़ी से समय देखकर, एक-एक करके चार घंटे के अंदर करता गया, जिसके परिणामस्वरूप नवंबर 1971 की परीक्षा में डिजायन-ड्राइंग के पेपर में मुझे 43% अंक प्राप्त हुए जबकि न्यूनतम 35% अंकों की आवश्यकता थी, क्योंकि अन्य प्रश्नपत्रों में लगभग 60% अंक प्राप्त हुए थे। इस प्रकार नवंबर 1971 में दोनों सैक्सन (केवल तीन वर्ष में) पूर्ण हो गए और मुझे इंजीनियरी स्नातक की डिग्री मिल गई।

विचारणीय है कि एक के बाद एक प्रकरण ऐसे जुड़ते गए जैसे कोई प्रबंधक एक के बाद एक-एक कड़ी जोड़ते हुए गन्तव्य तक पहुँचाने में सहायता कर रहा हो। जरा सोचिए-जो व्यक्ति हायर सैकिन्ड्री पास करके अध्यापकी करने की सोच रहा हो, वह इंजीनियरी स्नातक हो जाए और फिर एक ही बार में देश की सबसे प्रतिष्ठित और कठिनतम परीक्षा में उत्तीर्ण होकर प्रथम श्रेणी के अधिकारी का पद प्राप्त कर ले, इसे मात्र सहयोग नहीं समझना चाहिए। यह माता-पिता, गुरु और बड़ों के आशीर्वाद और ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ।

4.3 संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) परीक्षा :-

इसका विवरण अलग से अध्याय 8 में किया जा रहा है, क्योंकि इसमें ईश्वर की ऐसी विशेष कृपा हुई है, जिसका बिंदुवार वर्णन करना उचित होगा।

5.भगवत्कृपा से मनवांछित पदस्थापना (पोस्टिंग)

सन् 1962 में भारत–चीन के युद्ध के पश्चात् पूरे देश में निर्माण कार्यों में तेजी आ गई, जिसके परिणामस्वरूप इंजीनियरों की कमी का अनुभव होने लगा, विशेषकर सिविल इंजीनियरों की। इंजीनियरी के क्षेत्र में सबसे निचली कड़ी ओवरसियर (जूनियर इंजीनियर) की होती है और ये पद डिप्लोमा होल्डर्स को दिए जाते हैं। डिप्लोमा विभिन्न पॉलीटैकनिकों में तीन वर्ष के अध्ययन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्राप्त होता है। किसी पॉलीटैकनिक को प्रारंभ करने में काफी लागत आती है। इसे ध्यान में रखकर मध्य प्रदेश शासन ने तीन वर्ष के डिप्लोमा कोर्स को ढ़ाई साल अर्थात् छः–छः माह के पाँच सिमिस्टरों में प्रारंभ कर दिया। मैंने जुलाई 1964 में इसी योजना के तहत पॉलीटैकनिक, नौगाँव (मध्य प्रदेश) में प्रवेश प्राप्त किया और दिसंबर 1966 में कोर्स पूर्ण कर लिया। सप्लाई और डिमांड के सिद्धांत के अनुसार छात्रों की रुचि सिविल इंजीनियरी में अधिक होने के कारण सन् 1966 में यह स्थिति हो गई कि सिविल इंजीनियरी में डिप्लोमा किए बहुत से छात्रों को सर्विस नहीं मिल रही थी, जबकि 1962–63 में यह हाल था कि डिप्लोमा की फाइनल परीक्षा में फेल होने पर भी तत्काल सब–ओवरसियर के पद पर पोस्टिंग हो जाती थी और सरकारी सेवा करते हुए फाइनल के पेपर उत्तीर्ण करने पर डिप्लोमा प्रमाण पत्र मिलते ही ओवरसियर के पद पर प्रोन्नत कर दिया जाता था। बड़ी मुश्किल से तो मैं डिप्लोमा कर पाया था और अब बेरोजगारी की स्थिति बन रही थी, पर जैसा कि पूर्व अध्याय में वर्णन है, मुझे ईश्वर की कृपा पर विश्वास था। मेरे एक सहपाठी श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी ने तो उत्तर प्रदेश शासन में प्राइमरी में अध्यापक की नौकरी ही प्रारंभ कर दी थी, मैं भी विचार कर रहा था किंतु उस समय प्राइमरी अध्यापक का कुल वेतन मात्र 60 रुपये प्रतिमाह होता था। इसी के आस–पास तो मैं ट्यूशन पढ़ा के अर्जित कर

लेता था, अतः मैंने प्राइमरी अध्यापक की नौकरी का विचार छोड़ दिया।

एक दिन जिला छतरपुर (मध्य प्रदेश) में जाकर रोजगार कार्यालय में रजिस्ट्रेशन करा लिया कि शायद कहीं से कुछ सूचना आ जाए, पर कुछ नहीं हुआ और चार-पाँच माह बीत गए। इस बीच मैंने टाइपिंग कोर्स भी कर लिया कि शायद कहीं टाइपिस्ट की ही सर्विस मिल जाए। एक दिन (सोमवार) शिव मंदिर जाकर आर्त हृदय से भगवान से प्रार्थना की कि कहीं तो सर्विस लगवा दीजिए। उल्लेखनीय है कि मई 1966 में मेरा विवाह भी हो गया था। इससे जिम्मेदारी और भी बढ़ गई थी। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि जिस किसी विभाग में नौकरी मिले, मुझे सर्वेक्षण का कार्य मिले, क्योंकि निर्माण कार्यों में तो ऊपरी कमाई के लिए लोग ईमानदार को भी रिश्वतखोर बना देते हैं और यदि अधिक ईमानदारी दिखाई तो वहाँ से भागना पड़ता है। मेरा लक्ष्य ए.एम.आई.ई. (डिग्री कोर्स) की ओर था और यह तभी पूर्ण हो सकता था जब मुझे सर्वे डिवीजन में पोस्टिंग मिले, क्योंकि सर्वे (बाँधों का) बरसात के मौसम में नहीं होता है और उस समय अध्ययन के लिए समय मिल जाएगा। मैं प्रतीक्षा कर ही रहा था कि शायद रोजगार कार्यालय से इन्टरव्यू के लिए कोई सूचना आए कि किसी ने बताया कि आपका पोस्टिंग आर्डर पॉलीटैकनिक कार्यालय में आया हुआ है। मैं तुरंत प्रिंसिपल महोदय से मिला और उन्होंने मुझे मध्य प्रदेश विद्युत मंडल का नियुक्ति पत्र दे दिया। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश विद्युत मंडल ने प्रदेश में मैरिट लिस्ट के अनुसार प्रथम 10 छात्रों को अपने सर्वे डिवीजन में नियुक्ति का आदेश संबंधित पॉलीटैकनिक को भेजा था। मध्य प्रदेश तकनीकी बोर्ड में मैरिट के अनुसार मेरा चतुर्थ स्थान था, इसी कारण यह बिना इन्टरव्यू के पोस्टिंग आर्डर मिल गया। मैंने इसमें ईश्वर की कृपा का अनुभव किया और विशेषकर सर्वे डिवीजन में तैनाती होने पर। अब मुझे विश्वास हो गया कि डिग्री कोर्स शीघ्र पूर्ण कर सकूँगा। यह नियुक्ति-पत्र सोमवार दिनांक 12 जून 1967 को प्राप्त हुआ और मैंने 19 जून 1967 सोमवार को जगदलपुर, मध्य प्रदेश (अब छत्तीसगढ़) में कार्यभार ग्रहण कर लिया।

मेरी पोस्टिंग इंद्रावती नदी के किनारे सात्धार नामक स्थान पर थी। इन्द्रावती नदी की सात धाराएँ सिमिटकर उस स्थान पर एक धारा बन जाती हैं, इसलिए विभाग ने इसका नाम 'सात्धार' रखा। यह नदी के किनारे पहाड़ की तलहटी में है और नदी से लगभग 10 मीटर की ऊँचाई पर मात्र 25 मीटर की दूरी पर है। यह स्थान जगदलपुर से 110 किलोमीटर है। जगदलपुर से गीदम तक 78 किलोमीटर तक सड़क है और बसें चलती हैं, इसके आगे 32 किलोमीटर की दूरी उस समय केवल निजी वाहन से तय की जाती थी, वह भी जब बरसात न हो। मार्ग कच्चा था, जिससे बरसात में वाहन नहीं चल पाते थे। मुझे सम्भागीय कार्यालय में कार्यभार ग्रहण कराके कहा गया कि दो चार दिन में कोई ऑफीसर वहाँ दौरे पर जाएगा, तब आपको वहाँ पहुँचा देगा। पाँचवें दिन स्वयं डी.ई. (डिवीजनल इंजीनियर) साहब उस परियोजना के प्रभारी असिस्टेंट इंजीनियर के साथ मुझे लेकर सात्धार पहुँचे। गीदम के आगे के मार्ग को मैं अच्छी तरह समझता गया, क्योंकि भविष्य में जब कभी निजी कार्य से छुट्टी पर जाना होगा तो यह मार्ग पैदल ही पार करना पड़ेगा। गीदम से आगे 24 किलोमीटर की दूरी पर 'बारसूर' नामक छोटा कस्बा है जिसकी आबादी उस समय करीब एक हजार रही होगी। यहाँ पर डाकघर भी था। इससे आगे 4 किलोमीटर पर 'माण्डेर' नाम का एक नाला है जिसे बरसात में जीप से पार नहीं कर सकते थे, अधिकारी भी उसके आगे पैदल ही जाते थे। माण्डेर नाले से सात्धार तक का 4 किलोमीटर का रास्ता घने जंगलों और पहाड़ी का है जिसमें हिंसक जानवर भी हैं। इस पर रात्रि में चलना खतरनाक है। जून का महीना था अतः हमारी जीप सात्धार कैंप तक पहुँच गई।

मैंने देखा कि कैंप की बाउन्ड्री बाँसों की बनी है, जिसके अंदर सात झोपड़ीनुमा मकान हैं। एक झोपड़ी मुझे निवास हेतु दे दी गई। उसकी दीवालें बाँस के बने जाल पर मिट्टी के लेप से बनी थीं तथा छत घास की थी। दरवाजे के नाम पर टीन सीट का एक ढक्कन जैसा था। डी.ई. साहब ने मुझसे पूछा कि कैसा स्थान है, मैंने कहा रमणीक स्थल है। दूसरे दिन जब डी.ई. साहब चले गए तब वहाँ पर तैनात पाँचों

कर्मचारियों ने मेरी खिंचाई की कि तुम इस स्थान को रमणीक कह रहे हो, पता चलेगा बच्चू जब यहाँ रहोगे। इन पाँच कर्मचारियों में केवल एक ही सिविल ओवरसियर था जिसके साथ मुझे कार्य करने को कहा गया, क्योंकि मेरी पोस्टिंग छः माह के लिए सब-ओवरसियर के पद पर हुई थी। मैंने अगले दिन ओवरसियर महोदय (श्री डी0 पात्रा) को अपना इरादा 'डिग्री कोर्स' करने का बताया जिसे सुनकर उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि वे भी यह कोर्स करना चाहेंगे। यह भी ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ कि सर्वे का काम जिसके साथ काम करना है वह भी अध्ययन करने की सोच रहा है। इस स्थान पर अधिकारी महीने में एक या दो बार आकर बाँध और टनल के सर्वे का काम बता जाते थे जो अगली बार उनको उसका नक्शा बनाकर दिखाना होता था। हम लोग शीघ्र ही काम निपटाकर अध्ययन में लग जाते थे। जुलाई आते ही वर्षा के कारण अक्तूबर तक पूरी तरह सर्वे का काम बंद रहता था। इस समय हम औसतन 12 घंटे तो पढ़ ही लेते थे। डिग्री कोर्स की पुस्तकें नई सड़क, दिल्ली से डाक से मँगाते थे जो हमें बारसूर डाकघर से मिल जाती थीं।

अब तक के सत्संग के प्रभाव से सुबह-शाम पूजा-पाठ का नियम पक्का था। आरती के समय घंटी भी बजाता था, इससे वहाँ पर रहने वाले पाँचों कर्मचारी और चौकीदार/खलासी/खानसामा सभी प्रभावित हुए और मुझे 'महाराज' कहने लगे। आगे चलकर अधिकारी भी इसी नाम से मुझे बुलाने लगे। उल्लेखनीय है कि 6 माह पश्चात् मुझे ओवरसियर/सुपरवाइजर (जूनियर इंजीनियर) के पद पर प्रोन्नत कर दिया गया और फिर मुझे स्वतंत्र रूप से सर्वे का कार्य मिलने लगा, तथापि मैं वरिष्ठ ओवरसियर के साथ पूर्ववत् व्यवहार करता रहा।

उस समय वहाँ तैनात सभी कर्मचारी अविवाहित थे। मैंने बताया कि मेरा विवाह हो गया है और अपने परिवार को यहाँ लाना चाहता हूँ, पर इस छोटी सी झोपड़ी में कैसे रह पाएँगे। ईश्वर की कृपा से सभी कर्मचारियों की मेरे प्रति सहानुभूति थी और जब अगली बार अधिकारी आए तब यह बात उनसे कही गई। उन्होंने सुझाव दिया कि सर्वे में

लगने वाले मजदूरों से ही एक दो कमरों का एक मकान बनवा लो, छत के लिए घास की जगह टीन सीट का प्रबंध कर दिया जाएगा। एक साल के अंदर ही मेरे लिए मकान बनवा दिया गया, जिसमें दो कमरों के साथ लगभग 70 वर्ग फीट का एक पूजा रूम और उसके सामने बरामदा भी बनवा दिया गया। जून 1968 में मैं अपना परिवार (पत्नी और माँ) ले आया।

दो साल बाद यह परियोजना (बोधघाट जल विद्युत परियोजना) सिंचाई विभाग को स्थानांतरित हो गई, हालाँकि मध्य प्रदेश विद्युत मंडल का कार्य भी पूर्ववत् चलता रहा। सिंचाई विभाग ने एक कॉलोनी का निर्माण हमारी बाउन्ड्री के बगल में ही कर लिया जिसमें असिस्टैंट इंजीनियर (एस.डी.ओ.) सहित दस-बारह कर्मचारी थे। उन सभी से मेरा परिचय हो गया। उनमें से चार-पाँच ओवरसियर (सर्व श्री राधाकृष्ण पाठक, के0पी0 गुप्ता, श्रीवास्तवजी आदि) मुझसे अधिक घनिष्ठता रखने लगे और तब हमने प्रत्येक सोमवार-गुरुवार को रात्रि 8 बजे 'शिव कीर्तन' करना प्रारंभ कर दिया। हमने हारमोनियम-ढोलक का भी प्रबंध कर लिया था। हमारी कीर्तन मंडली अप्रैल 1973 तक इसी प्रकार कार्यशील रही। मई 1973 में मेरी असिस्टैंट इंजीनियर के पद पर जगदलपुर पोस्टिंग होने पर कीर्तन मंडली तो बिखर गई, पर उसी कैम्पस में 1974 के प्रारंभ में ही कीर्तन मंडली के सदस्यों ने एक शिव मंदिर का निर्माण करवा दिया जो संभवतः आज भी होगा।

जब कभी निजी कार्य से जगदलपुर जाना होता था तब हम सुबह करीब 6 बजे टिफिन लेकर पैदल निकल जाते थे और दोपहर 2 बजे के आस-पास गीदम पहुँचते थे। वहाँ से बस से जगदलपुर जाते थे। यदि दो बजे की बस न मिल सकी तो फिर 4 बजे तक दूसरी बस की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। एक बार पहुँचने में कुछ देर हो गई तो दो बजे वाली बस निकल गई और मैं वहीं प्रतीक्षा करते हुए श्रीरामचरितमानस की कुछ चौपाइयाँ गुनगुना रहा था। तभी बस स्टैण्ड के सामने ही जिनका मकान था वे एक वृद्ध सज्जन वहीं आए और मुझसे पूँछा कि क्या श्रीरामचरितमानस पढ़ते हो। मेरी स्वीकारोक्ति सुनकर बोले सामने

बरामदे में चलो, अभी बस आने में काफी देर है। मैं उनके साथ उनके मकान के बरामदे में बैठ गया। वे अंदर जाकर श्रीरामचरितमानस की एक पुस्तक लाए और मुझसे कहा कि रामायण सुनाओ। मैंने उत्तरकाण्ड का श्रीकाकभुसुंडि-गरुड़ संवाद निकाला और पढ़ने लगा। वे अर्थ बताकर व्याख्या करते रहे। जब बस आ गई तब मैंने कहा कि एक-दो मिनट लगेंगे अगले दोहे तक पढ़ लूँ। वे बोले-बस। अब तुम्हारा मन बस की ओर चला गया, यहीं विराम दे दो। अगली बार यहीं से पढ़ना। इस प्रकार से ईश्वर की कृपा से अनजाने कस्बे में एक सज्जन व्यक्ति से अच्छा परिचय हो गया। उन्होंने मुझसे पूँछा था कि तुम्हारा कौन सा वर्ण है, मैंने बताया-ब्राह्मण। तब वे और प्रभावित हुए और बोले हम भी ब्राह्मण हैं 'अवस्थी'। भविष्य में जब कभी इधर आओ तब मुझसे जरूर मिलना। एक बार मैं अपने परिवार के साथ गाँव से आया, तब सरकारी वाहन न मिलने के कारण जगदलपुर से गीदम तक बस से आया और इन्हीं सज्जन के यहाँ रात्रि विश्राम करके दूसरे दिन इनके ही प्रयास से बारसूर तक जाने का प्रबंध हो सका। बारसूर के आगे तो नाला पार करके जंगल के रास्ते से जाने की तो आदत पड़ गई थी। ईश्वर की कृपा से जंगली जानवरों से भी कभी कोई खतरा नहीं हुआ।

विचारणीय है कि बिना इंटरव्यू दिए मनवांछित पोस्टिंग मिल जाना ईश्वर की कृपा नहीं तो और क्या है। साथ ही सात्धार जैसी जगह में परिवार के साथ रहने की सुविधा उपलब्ध हो जाना, कर्मचारियों का मेरे प्रति अत्यंत सद्भाव होना, अधिकारियों की भी मेरे ऊपर प्रसन्नता रहना, गीदम जैसे कस्बे में अवस्थी जैसे सज्जन से परिचय हो जाना आदि-आदि ये सभी मैं ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ। यदि मेरी पोस्टिंग सात्धार जैसी सूनसान जगह में न होकर किसी कस्बे/शहर में हो गई होती तो शायद मैं डिग्री भी न कर पाता। ईश्वर की कृपा से सात्धार जैसा निर्जन स्थान भी मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ।

6. प्रभु कृपा से संकट टला

मई 1970 में दि इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) की सैक्सन 'ए' की परीक्षा देने के उपरान्त मैं लम्बी छुट्टी पर अपने गाँव आ गया वहाँ हमारे परिवार में एक विवाह था। विवाह पूर्ण ही हुआ था कि विभाग से टेलीग्राम आ गया कि आपकी छुट्टी रद्द की जाती है, तुरंत कार्यभार ग्रहण करो। मई के अंदर ही छुट्टी से वापिस आते ही मुझे नर्मदा नदी पर प्रस्तावित बाँध के सर्वे पर लगा दिया गया। यह स्थान मध्य प्रदेश के मंडला जिले के आस-पास है।

हमारी सर्वे टीम में एक असिस्टैंट इंजीनियर और उनके अधीनस्थ हम चार सुपरवाइजर (जूनियर इंजीनियर) थे। जुलाई प्रथम सप्ताह में घनघोर वृष्टि हुई और हम सर्वे का कार्य नहीं कर पाये थे। सामान्यतया बरसात के मौसम में पहाड़ों पर सर्वे का कार्य बंद रहता है। इसी सिद्धांत के अनुसार असिस्टैंट इंजीनियर महोदय ने कहा कि हम सभी वापिस मुख्यालय जगदलपुर जाएँगे। मैंने उनसे निवेदन किया कि मेरा गाँव यहाँ से नजदीक है, मैं अपने परिवार को लेकर जगदलपुर पहुँच जाऊँगा, मुझे 5 दिनों की छुट्टी प्रदान कर दीजिए। उनकी स्वीकृति पाकर मैं अपने गाँव गया और अपने परिवार (पत्नी एवं बड़ा पुत्र जो उस समय गोद में था) को लेकर नियत समय पर जगदलपुर पहुँच गया। वहाँ का दृश्य आशातीत था। डी.ई.साहब असिस्टैंट इंजीनियर पर गुस्सा हो रहे थे कि किसकी अनुमति से सर्वे का कार्य बंद कर दिया। पहाड़ों पर सर्वे नहीं हो सकता है, पर रोड पर तो हो सकता है। नर्मदा नदी पर प्रस्तावित सभी बाँध स्थलों को जी0टी0एस0 से जोड़ना है। तुरंत पूरी टीम को इस कार्य में लगा दो। उन्होंने पूँछा महाराज (मुझे) को छुट्टी क्यों दे दी और अब वे कब तक यहाँ पहुँचेंगे। इसी बीच मैं उनके समक्ष हाजिर हो गया। मैंने बताया कि महोदय पूर्व वर्षों की भाँति मैं अपना परिवार लेकर आया हूँ, मुझे सर्वे पर न भेजिए, पर वे नहीं माने और कहा कि अपनी

पत्नी और बच्चे को वापिस गाँव भेज आयें या साथ में सर्वे कैम्प में रखें, इससे हमें कोई मतलब नहीं है आप कल इस वाहन को लेकर सर्वे के लिए मंडला चले जाएँ। उच्च अधिकारी का आदेश तो पालन करना ही था। अब समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? तभी हमारे ड्राइवर ने सुझाव दिया कि सर्वे कैम्प के नजदीक किसी कस्बे में पत्नी और बच्चे को एक कमरा किराए पर लेकर रख दीजिए और आप आते-जाते रहिएगा। डी.ई. साहब अभी गुस्से में हैं इस कारण वे आपको बरसात में भी सर्वे पर भेज रहे हैं। वे आपकी भक्तिभाव से बहुत प्रभावित हैं, मुझे विश्वास है कि कुछ समय बाद वे किसी दूसरे सुपरवाइजर को भेजकर आपको वापिस सात्धार पहुँचा देंगे।

यह सुझाव मैंने मान लिया और हम मण्डला शहर पहुँच गए। वहाँ पर सर्वे टीम के दूसरे लोग भी मिल गए और सभी ने कहा कि मण्डला से तो सर्वे स्थल बहुत दूर पड़ेगा, हम चाबी (मण्डल के पास का एक छोटा कस्बा) में कुछ प्रबंध कर लेंगे, क्योंकि वहाँ पर सरकारी विश्रामगृह भी है। चाबी पहुँचकर पता चला कि तुरंत कोई भी मकान नहीं मिल सकता है, तब पहले से ही सरकारी विश्रामगृह के सामने प्रथम तल पर एक कमरे में दूसरी सर्वे टीम के 2 सुपरवाइजर रह रहे थे। मेरी स्थिति देखकर उन्हें दया आ गई और बोले कि आप हमारे कमरे में आ जाएँ और हम विश्रामगृह में कुछ दिन रह लेंगे, जब तक कि आपके लिए किसी मकान की व्यवस्था नहीं हो जाती। उस कमरे में हमने अपना डेरा डाल दिया। वहाँ के एक आदमी को मैंने सर्वे के काम में लगा लिया और उसकी दस-बारह साल की लड़की को पत्नी और बच्चे के साथ छोड़कर मैं अगले दिन चाबी से लगभग 15 किलोमीटर दूर नर्मदा नदी के किनारे सर्वे करने चला गया। वहाँ पर एक थानागोड़ी (गाँव का छोटा सा विश्रामगृह) में अपना डेरा डाल दिया। ड्राइवर हमें छोड़कर वापिस चाबी आ गया। अब यदि चाबी आना हो तो 15 किलोमीटर पैदल चलकर ही आना होगा। मैंने दो-तीन दिन में इतना कार्य कर दिया जो एक सप्ताह के कार्य के बराबर था और फिर चाबी आ गया। एक दिन रुककर फिर सर्वे कैंप को चला गया और जाते

जाते उन सुपरवाइजरों से कह गया कि जो उचित मकान मिल जाए, मेरे परिवार को उसमें शिफ्ट कर दीजिए क्योंकि हमारे कारण आप लोगों को कष्ट हो रहा है।

एक–दो दिन में उन्होंने मेरे परिवार को विश्रामगृह के बगल में ही एक कमरे में शाम के लगभग 4 बजे शिफ्ट कर दिया। कमरे के पीछे कुछ खण्डहर सा था जिसमें घास लगी हुई थी। ईश्वर की कृपा से मेरी पत्नी को आभास हुआ कि यहाँ सर्प निकलेगा और चूँकि हम तीनों (स्वयं, पुत्र और उस मजदूर की लड़की) को जमीन पर ही सोना है, अतः किसी न किसी को सर्प काट लेगा। मेरी पत्नी ने तुरंत उस लड़की को वरिष्ठ सुपरवाइजर (श्री घई) के पास भेजकर कहला दिया कि हमें वे उसी कमरे में पुनः वापिस कर दें और जब पटैरयाजी टूर से वापिस आएँगे तब कुछ दूसरा प्रबंध कर लेंगे, क्योंकि यहाँ तो सर्प निकलेगा। श्री घई ने आकर समझाया कि ऐसा कुछ नहीं होगा, यह आपका भ्रम है किंतु वे अपने विश्वास पर अटल थीं कि यहाँ तो रात में सर्प अवश्य निकलेगा। इसे सुनकर उनके आत्मविश्वास को परखने हेतु श्री घई ने मेरे परिवार को तो पूर्ववत् उस कमरे में शिफ्ट कर दिया और स्वयं अपने दूसरे साथी के साथ दो पलंग डालकर, एक पैट्रोमैक्स जलाकर लेट गए, पर सोए नहीं कि देखें कि सर्प आता है कि नहीं। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब रात के बारह बजे एक काला नाग पीछे के खण्डहर में से निकला। ये दोनों डंडा लेकर मानो उसी का इंतजार कर रहे थे। उन्होंने तुरंत उसे मार डाला और सुबह मेरी पत्नी को दिखाया और कहा कि मान गए आपके विश्वास को।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि मैं नित्य नर्मदा मैया में प्रातः स्नान कर शिवार्चना करके अपने परिवार की कुशलता की कामना करता था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिवजी की कृपा से ही मेरी पत्नी को ऐसी प्रेरणा हुई थी कि यहाँ रात में नहीं सोना चाहिए, क्योंकि यहाँ तो सर्प निकलेगा।

वहाँ पर इसी प्रकार की एक और घटना घटी जिससे मैं बाल–बाल बच गया। वह इस प्रकार से है:–

तीन–चार दिन के बाद मैं सर्वे कैम्प से वापिस चाबी आया और दूसरे दिन दोपहर बाद जाने को तैयार हुआ कि बहुत तेज वर्षा होने लगी। लगभग एक घंटे तक मैंने प्रतीक्षा की कि पानी बरसना बंद हो जाए तब निकलूँ किंतु पानी नहीं रुका तब मैंने बरसाती पहिनकर छाता लगाया और चल दिया ताकि रात होने तक सर्वे कैम्प में पहुँच जाऊँ और दूसरे दिन से सर्वे का काम करने लगूँ। करीब दो किलोमीटर चलते हुए भी पानी वैसे ही तेज बरसता रहा, पर मैं रुका नहीं आगे चलते रहने का निश्चय किया। चलते हुए ईश्वर स्मरण तो करता ही जा रहा था। एकाएक मुझे ऐसा लगा कि जैसे कोई कह रहा हो कि रुक जाओ। मैं रुक गया और विचार करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। मुझे ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि लौट जाओ आगे खतरा है। बिना विलम्ब किए मैं तुरंत लौट पड़ा और वापिस चाबी में अपने कमरे में आकर आग तापने लगा क्योंकि भींग जाने से ठंड बहुत लग रही थी। अगले दिन सूचना मिली कि जिस मार्ग पर मैं जा रहा था उसमें एक बहुत तेज बहाव वाला बरसाती नाला पड़ता था, जिसमें दो आदमी उस दिन बह गए थे। यदि मैं नहीं लौटता तो मैं नाला अवश्य पार करता जिससे कोई दुर्घटना हो सकती थी। यह ईश्वर की कृपा ही है कि मुझे लौट आने की प्रेरणा दी जिससे मैं सुरक्षित आ गया।

ईश्वर की कृपा से इस घटना के दूसरे ही दिन डी.ई. (डिवीजनल इंजीनियर श्री जी.डी. अग्रवाल) एक वरिष्ठ सुपरवाइजर (श्री दिवाकर पात्रा) को लेकर चाबी आ गए। साथ में अलग से एक वाहन भी लाए और मुझसे कहा कि श्री पात्रा को चार्ज देकर आप सपरिवार अपने मुख्यालय सात्धार चले जाएँ। उनको धन्यवाद कहकर हम लोग दूसरे दिन ही सात्धार के लिए चले गए। बरसात का समय था, इस कारण बड़ी मुश्किल से हम जगदलपुर–गीदम के रास्ते बारसूर के आगे माण्डेर नाले तक पहुँच सके। उसके आगे नाला पार करके (उस समय उसमें कमर तक पानी बह रहा था) हम सात्धार पहुँच गए।

एक छोटे से कस्बे में बरसात के समय ईश्वर ने हमारी रक्षा की, यह कोई संयोगमात्र नहीं है, भगवान कृपा ही है कि हम सुरक्षित सात्धार

पहुँच गए और मैं फिर से अध्ययन में लग गया, क्योंकि अब ए.एम. आई.ई. की सैक्सन 'बी' की परीक्षा नवंबर 1971 में देनी थी।

विचारणीय है कि मेरी पत्नी ने किसकी प्रेरणा से श्री घई सुपरवाइजर से दृढ़तापूर्वक कहा कि यहाँ सर्प निकलेगा। उनके बारम्बार समझाने पर भी नहीं मानी और फिर सर्प निकला। यदि वे हठ करके वहाँ से नहीं हठतीं और नीचे जमीन पर बच्चे और उस लड़की के साथ सोतीं और सर्प निकलता तो क्या हाल होता यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह ईश्वरीय प्रेरणा से उनसे कहलवाया गया कि यहाँ सर्प निकलेगा। इसी प्रकार से दूसरी घटना में मैं बच गया। यह मात्र कोई संयोग की बात नहीं है। कोई माने या न माने, मैं तो इसे केवल और केवल ईश्वर की कृपा ही समझता हूँ।

सात्धार सर्वे कैम्प में अपने ज्येष्ठ सुपुत्र गिरीश के साथ (सन् 1971) संदर्भ (अध्याय 05)

7. पुत्र की निमोनिया से रक्षा

सात्धार में पदस्थापना (पोस्टिंग) का विवरण अध्याय 5 में वर्णित है जिसके अनुसार यदि कभी निजी कार्य से जगदलपुर जाना पड़ा और यदि कोई वाहन न मिला तो गीदम तक 32 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था और सूखे मौसम में भी यदि माण्डेर नाले में पानी अधिक रहा तो वहाँ तक 4 किलोमीटर घनघोर जंगल के रास्ते से पैदल ही जाना होता था। एक बार नवंबर माह में मेरा बड़ा पुत्र गिरीश (उस समय उसकी उम्र डेढ़ साल की थी) दो फीट गहरे पानी के टब में गिर गया और जब इसकी आवाज सुनाई दी तो तुरंत निकाल लिया, किंतु उसे सर्दी लग गई और बुखार आ गया। दूसरे दिन बुखार और तेज हो गया। मेरी पत्नी 'कुसुम' ने कहा कि जैसे भी हो सके इसे जगदलपुर ले जाना होगा। मैंने कहा आज मुझे सर्वे का काम पूरा कर लेने दो, कल तक ठीक नहीं होगा तो सुबह ही चल देंगे क्योंकि अभी जाने से यदि वाहन न मिला तो कैसे पहुँचेंगे। ऐसा कहकर मैं सर्वे स्थल, जो कैम्प के नजदीक ही था, चला गया और कार्य प्रारंभ कर दिया। थोड़ी ही देर में मुझे ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा हो कि देर मत करो, बच्चे को तुरंत अस्पताल ले जाओ। मैंने सर्वे कार्य उसी समय बंद करके मजदूरों को कुछ काम बता दिया और कहा कि जब तक मैं जगदलपुर से वापिस न आऊँ तुम लोग अपनी छुट्टी समझना। आने पर पुनः काम प्रारंभ करने की सूचना दूँगा।

तुरंत घर आकर बच्चे को देखा कि बुखार तेज होता जा रहा है। मैंने कहा कि तुम जाने के लिए तैयार रहो मैं माण्डेर नाले के पास देखता हूँ यदि कोई वाहन मिल जाए। मैंने कैम्प से तुरंत दौड़ लगाई और शीघ्र ही 4 किलोमीटर दौड़कर माण्डेर नाला तक पहुँच गया। ईश्वर की कृपा देखिए उसी समय मेरे वरिष्ठ सहकर्मी श्री पात्रा बारसूर से लौट रहे थे। उन्हें पूरा हाल सुनाया। यह भी ईश्वर की कृपा मानता हूँ कि माण्डेर

नाले के उस पार मध्य प्रदेश विद्युत मंडल के निर्माण खण्ड की एक जीप खड़ी थी। मेरे सहकर्मी ने कहा कि मैं इस जीप को रोककर रखता हूँ आप तुरंत बच्चे को ले आओ। मैंने पुनः 4 किलोमीटर की दौड़ लगाई और एक चपरासी के साथ पत्नी और बच्चे को लेकर जितना तेज चल सकते थे माण्डेर नाला पहुँच गए। वहाँ पर देखा कि नाले में कमर तक पानी था। किसी तरह बच्चे के साथ नाला पार करके भीगे वस्त्रों में ही जीप में बैठ गए और रात्रि में जगदलपुर पहुँच कर डॉक्टर को दिखाया। उन्होंने बताया कि इसे निमोनिया हो गया है, तीन दिनों की दवा देता हूँ, अभी वापिस न जाइएगा क्योंकि कोई और समस्या पैदा न हो जाए, वैसे आप लोग ठीक वक्त पर बच्चे को ले आए। यदि देर कर देते तो बच्चे को ठीक कर पाना बहुत मुश्किल होता। ईश्वर की कृपा से तीन–चार दिन में बच्चा ठीक हो गया और सरकारी वाहन की भी व्यवस्था हो गई। हम लोग माण्डेर नाले तक जीप से आए और वहाँ से पूर्व की भाँति नाला पार करके पैदल सात्धार कैंप आ गए।

इस परिप्रेक्ष्य में निम्नांकित तथ्य उल्लेखनीय हैं :–

- सर्वे के दौरान मुझे ईश्वरीय प्रेरणा से बच्चे के इलाज हेतु तुरंत जाने का निर्णय लेना,
- माण्डेर नाले पर श्री पात्रा का मिल जाना,
- और माण्डेर नाले पर ही विभागीय वाहन का उपलब्ध होना।

ये सभी केवल संयोग मात्र नहीं हैं, इसमें हमें साक्षात् ईश्वर की कृपा दिखाई दी जिससे बच्चे को बचाया जा सका। उपर्युक्त तीन कड़ियों में से यदि एक भी कड़ी न जुड़ती तो उसी दिन जगदलपुर पहुँचना मुश्किल था और यदि उस दिन जगदलपुर नहीं पहुँचते तो फिर डॉक्टर के कथनानुसार कुछ भी हो सकता था।

इस प्रकार ईश्वर की कृपा से ही बच्चे की निमोनिया से रक्षा हो सकी।

8. संघ लोक सेवा आयोग (यू०पी०एस०सी०) की परीक्षा

जनवरी 1972 में दि इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) की सैक्सन 'बी' की परीक्षा जो मैंने नवंबर 1971 में दी थी, का परिणाम आया जिसमें मैं उत्तीर्ण हो गया। इस प्रकार से सिविल इंजीनियरी में डिग्री कोर्स पूर्ण हो गया। इसे मैं मात्र संयोग नहीं मानता, यह ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ। 'सात्धार' जैसे दुर्गम स्थान में पोस्टिंग होने पर ही यह संभव हो सका और यह पोस्टिंग भी भगवत्कृपा से प्राप्त हुई थी जैसा कि अध्याय 5 में वर्णन किया गया है। परीक्षा परिणाम आये कुछ ही दिन हुए थे कि केन्द्रीय जल आयोग से एक निदेशक बोधघाट परियोजना (सात्धार) निरीक्षण हेतु पधारे। उनके स्वागत में तथा उनसे परामर्श करने हेतु मध्य प्रदेश विद्युत मंडल तथा मध्य प्रदेश सिंचाई विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी आये हुए थे। लगभग आठ–दस गाड़ियों का काफिला था। उनके जाने के बाद मैंने सिंचाई विभाग के असिस्टेंट इंजीनियर श्री चौबेजी से पूँछा कि केन्द्रीय जल आयोग के निदेशक तो अभी 40 वर्ष के अंदर के लग रहे थे, इतनी जल्दी इतनी बड़ी पोस्ट पर कैसे आ गए। तब उन्होंने समझाया कि चाहे डिप्लोमा पास हो या डिग्री, सरकारी विभागों में सबसे पहले तृतीय श्रेणी में नियुक्ति होती है जैसी आपकी हुई है और कालान्तर में पदोन्नति से उच्च पद मिलते जाते हैं। द्वितीय श्रेणी के अधिकारी का चयन राज्य लोक सेवा आयोग के माध्यम से होता है, पर इसमें डिग्री कोर्स वाले भी भाग ले सकते हैं। प्रथम श्रेणी के अधिकारियों का चयन संघ लोक सेवा आयोग (यू. पी.एस.सी.) द्वारा किया जाता है, इसकी परीक्षाओं के लिए भी डिग्री कोर्स न्यूनतम अर्हता (क्वालीफिकेशन) है। मुझे पता चला है कि आपने तीन साल के अंदर ही सिविल इंजीनियरी में डिग्री प्राप्त कर ली, जबकि यह सामान्यतया 5 वर्ष का कोर्स है, पर डिप्लोमा वालों को दूसरे

वर्ष के सत्र में प्रवेश मिल जाता है तो उन्हें भी 4 वर्ष लग जाते हैं। आपने तो बिना किसी कोचिंग के इस स्थान पर रहते हुए 4 वर्ष का कोर्स तीन वर्ष में पूर्ण कर लिया। मैंने कहा यह सब ईश्वर की कृपा एवं आप लोगों के आशीर्वाद से संभव हुआ है।

आगे चर्चा करते हुए उन्होंने समझाया कि तुम तुरंत संघ लोक सेवा आयोग जो धौलपुर हाउस दिल्ली में है, एक रुपये का मनी आर्डर भेजकर परीक्षा फार्म मँगवा लो। उन्होंने पता बताकर मार्गदर्शन तो पूरा किया पर यह नहीं बताया कि किस परीक्षा का फार्म मँगवाना है, संभवतः वे जानते थे कि इतनी जानकारी तो मुझे होगी ही। मेरा सामान्य ज्ञान नगण्य था, क्योंकि मैं कोर्स की किताबें और गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित धार्मिक पुस्तकों के अलावा और कुछ नहीं पढ़ता था। मेरी मित्र मंडली भी नहीं थी कि उनसे बातें करके कुछ दुनियादारी की बातें सीखीं जाएँ। खैर, मैंने तुरंत संघ लोक सेवा आयोग कार्यालय को एक रुपये का मनीआर्डर 15 फरवरी 1972 को इस अनुरोध के साथ भेज दिया कि मुझे संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा का फार्म भेज दिया जाए। यह भी ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ उसका उत्तर मुझे मिल गया क्योंकि ऐसे पत्रों पर या तो ध्यान नहीं दिया जाता या फिर बहुत विलम्ब से जबाव आता है। मेरे पत्र का उत्तर भेजने वाले अधिकारी संभवतः मेरे ऊपर हँस रहे होंगे कि इस मूर्ख को यह भी नहीं पता कि किस परीक्षा का फार्म चाहिए। प्रथम श्रेणी के अधिकारी के पद का इच्छुक है और इतना भी ज्ञान नहीं है कि कौन सा फार्म मँगाना है। ईश्वर की कृपा से वहाँ से अवर सचिव (अन्डर सेक्रेट्री) के दिनांक 13-03-1972 के पत्रांक 1646 में लिखा था कि आपका एक रुपये का मनीआर्डर वापिस किया जा रहा है, इसकी पावती की प्रतीक्षा किए बिना आप दूसरा एक रुपये का मनीआर्डर भेजें तथा यह स्पष्ट करें कि किस परीक्षा का फार्म चाहिए। इस पत्र के साथ दो परिपत्र संलग्न थे, एक इंजीनियरी सेवा परीक्षा 1972 और दूसरा भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) 1972।

मैं इस पत्र को लेकर पुनः सिंचाई विभाग के असिस्टेंट इंजीनियर श्री चौबेजी के पास गया। उन्होंने मुझसे विस्तार से चर्चा की। उन्होंने तो

आई.ए.एस. परीक्षा की सलाह दी, पर मैंने निवेदन किया कि मैं सीधा सादा व्यक्ति पता नहीं कहाँ फँसा दिया जाऊँगा, मैं तो इंजीनियर ही भला। उन्होंने भी सहमति दी। दूसरे ही दिन मैं सात्धार से गीदम (32 किलोमीटर) पैदल चलकर पहुँचा क्योंकि मुझे टेलीग्राम से मनीआर्डर भेजना था, क्योंकि यह सुविधा नजदीक के डाकघर में नहीं थी, केवल वहीं पर थी। उल्लेखनीय है कि इंजीनियरी सेवा परीक्षा 1972 के लिए फार्म जमा करने की तारीख 17-04-1972 थी। यदि साधारण मनीआर्डर भेजता तो समय पर फार्म जमा करने में संदेह था क्योंकि मैं सीधे फार्म नहीं भेज सकता था। विभाग की ओर से उनकी टिप्पणी के साथ भेजना आवश्यक था। इस प्रकार मुझे समय से फार्म मिल गया और पूर्ण करके भेज दिया। इसके साथ ही संघ लोक सेवा आयोग की उपर्युक्त परीक्षा देने की अनुमति प्रदान करने हेतु विभाग को आवेदन प्रस्तुत कर दिया और अनुमति भी समय पर प्राप्त हो गई।

अगस्त 1972 में लिखित परीक्षा थी। सबसे नजदीक परीक्षा केन्द्र भोपाल था जो मैंने पहली पसंद के रूप में फार्म में भरा था। मुझे वही मिल गया। डिग्री कोर्स की अंतिम परीक्षा मैंने नवंबर 1971 में ही उत्तीर्ण की थी, अतः सभी विषयों के सूत्र याद थे तथा गणना करने का अभ्यास भी था। इससे परीक्षा के प्रश्न पत्र हल करने में सुगमता हुई। जगदलपुर से कहीं भी जाने के लिए इंद्रावती नदी को पार करना होता है। उस समय उस पर बना हुआ पुल निचले स्तर का था, जिससे अधिक बाढ़ आने पर वह पानी में डूब जाता था। इसे ईश्वर की कृपा नहीं तो क्या कहें कि अगस्त में जाते समय पुल खुला था जिससे समय पर परीक्षा केन्द्र पहुँच गया, पर लौटते समय अधिक वृष्टि के कारण पुल डूब गया था और मुझे दो दिनों तक बस्तर कस्बे में रुकना पड़ा। उल्लेखनीय है कि जिला बस्तर है, पर उसका मुख्यालय जगदलपुर शहर में है। बस्तर एक छोटा कस्बा है।

इतने सब संयोग ईश्वर की कृपा से जुटे कि लिखित परीक्षा निर्विघ्न सम्पन्न हो गई। अब इन्टरव्यू की तैयारी में लग गया। उस समय अंग्रेजी का इतना बोलबाला था कि संघ लोक सेवा आयोग द्वारा लिए जा रहे

इन्टरव्यू में एक शब्द भी हिन्दी का नहीं बोला जा सकता था। अब स्थिति बिल्कुल भिन्न है। कुछ परीक्षाओं को छोड़कर अधिकांश परीक्षाओं (आई.ए.एस. की परीक्षा सहित) में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध है। मुझे चिन्ता हुई कि अंग्रेजी में किसी भी विषय पर धारावाहक बोलना कैसे सीखें, तभी ईश्वरीय प्रेरणा से मुझे आभास हुआ कि एक ट्रान्जैस्टर खरीदा जाए और नित्य अंग्रेजी के समाचार सुने जाएँ। साथ ही यह भी ध्यान में आया कि इन्टरव्यू में अभ्यर्थी की रुचि का विषय पूँछकर उस पर वार्तालाप होता है। मेरी रुचि तो श्रीरामचरितमानस और गीता में थी ही, अतः मैंने गीताप्रेस से प्रकाशित अंग्रेजी में अर्थ वाली श्रीरामचरितमानस और गीता की पुस्तकें मँगा लीं। ट्रान्जेस्टर से अंग्रेजी में समाचार सुनना और श्रीरामचरितमानस का अंग्रेजी में अर्थ पढ़कर उसे आत्मसात करना अब मेरा नियम सा बन गया।

जनवरी 1973 के प्रथम सप्ताह में लिखित परीक्षा का परिणाम आ गया और मुझे दिल्ली से पत्र आया कि लिखित परीक्षा में आपका चयन हो गया है, इन्टरव्यू के लिए यथासमय (इन ड्यू कोर्स ऑफ टाइम) बुलाया जाएगा। पत्र से यह आभास हुआ कि इंटरव्यू कॉल आने में महीने दो महीने का समय तो लग ही जाएगा, तथापि ईश्वरीय प्रेरणा ने कुछ ऐसी व्यवस्था करने का प्रयास किया कि कॉल लैटर मेरे पास तक पहुँच सके क्योंकि मुझे सात्धार से करीब 300 किलोमीटर दूर एक सर्वे के लिए भेजने को कहा गया था। अभी तक जो पत्राचार संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली से हुआ, उसमें उनकी ओर से पत्र साधारण डाक से आए थे जो मुझे मिलते रहे, पर इंटरव्यू कॉल लैटर तो रजिस्टर्ड आएगा, ऐसा बताया गया। हमारी डाक सात्धार से 8 किलोमीटर दूर बारसूर-डाकघर से आती थी और साधारण पत्र तो पोस्ट मास्टर हमारे मजदूरों को, जो रोज हमारे कैंप में काम करने बारसूर से आते थे, वे दे दिया करते थे, पर रजिस्टर्ड पत्र बिना प्राधिकृत पत्र के नहीं देते थे, अतः मैंने एक मजदूर के नाम प्राधिकृत पत्र बनाकर पोस्ट मास्टर को पहले से दे दिया कि संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली से आया पत्र अमुक व्यक्ति को दे दिया जाए और उनसे कहा कि यह पत्र जब मिल जाए मेरी पत्नी को

दे देना। घर में भी यह समझा दिया था कि अगर दिल्ली से कोई पत्र आए तो हमारे परिचित सिंचाई विभाग के किसी इंजीनियर को देकर उनसे अनुरोध करें कि पत्र शीघ्रातिशीघ्र जगदलपुर हमारे डिवीजन में पहुँचा दें, वहाँ से कुछ प्रबंध हो जाएगा। यह सब व्यवस्था करने के दूसरे दिन मेरे बड़े पुत्र की तबीयत अचानक अधिक खराब हो गई और हम कोई खतरा नहीं उठाना चाहते थे, अतः हमने तुरंत जगदलपुर जाने की तैयारी कर ली। ईश्वर की कृपा से उसी दिन हमारे असिस्टेंट इंजीनियर श्री बी.डब्ल्यू. कश्वेकर आ गए और बोले कि यहाँ का काम निपटाकर आज शाम को ही मैं जगदलपुर चला जाऊँगा, मेरे साथ चलो। हम लोग उनके साथ चल दिए और उन्हीं के घर पर रुके। अगले दिन बच्चे को डॉक्टर के पास ले गए। वह एक-दो दिन में ठीक हो गया।

अब हम वापिस सात्धार जाने का विचार कर ही रहे थे कि जिस सर्वे पर मुझे भेजा जाना था, उसका समय हो गया। इस हेतु मेरे वरिष्ठ सहकर्मी श्री दिवाकर पात्रा को सात्धार से बुला लिया गया था और जीप के साथ ट्रॉली में सब सामान रखकर जाने को तैयार थे, तब मुझे डी.ई. साहब (श्री जी.डी.अग्रवाल) ने बुलाकर कहा कि 'महाराज' आप पात्रा के साथ इसी समय सर्वे के लिए निकल जाएँ। आपके परिवार को मैं कल सात्धार छोड़ आऊँगा। उन पर और मेरे असिस्टैंट इंजीनियर पर मुझे विश्वास था कि ये अवश्य ही सुरक्षित मेरे परिवार को सात्धार पहुँचा देंगे। मैं श्री पात्रा के साथ जीप में सवार होकर जगदलपुर से लगभग 300 किलोमीटर दूर सर्वे कैंप की ओर चल दिया। सर्वे कैंप मुख्य सड़क से करीब 50 किलोमीटर दूर था और उस पर केवल निजी वाहन या वन विभाग के ट्रक चलते थे। आवागमन का और कोई साधन नहीं था। हम निश्चिंत होकर सर्वे करने लगे।

अब घटनाक्रम देखिए जिससे यह निश्चित आभास होता है कि यह स्पष्ट रूप से भगवान की कृपा से ही संभव हो सका। डी.ई. साहब अपने वचनों के पक्के थे, उन्होंने दूसरे दिन ही मेरी पत्नी और बच्चे को सात्धार पहुँचा दिया। सात्धार कैंप में रात्रि विश्राम के पश्चात् दूसरे दिन वे वापिस जगदलपुर जाने को तैयार थे। उनका बिस्तर गाड़ी में रख

दिया गया था, वे चाय पी रहे थे। इतने में एक मजदूर ने मेरे नाम का एक रजिस्टर्ड पत्र लाकर मेरी पत्नी को दिया। उन्होंने उस पर दिल्ली की मुहर देखी तो समझ गईं और कहा कि यह पत्र तुरंत डी.ई. साहब को दे दो, वे निकलने ही वाले हैं। उसने जैसे ही वह पत्र डी.ई. साहब को दिया तो उन्होंने तुरंत उसे खोलकर पढ़ा तो वह मेरा इंटरव्यू कॉल लैटर था तथा इंन्टरव्यू की तिथि भी बहुत नजदीक थी। डी.ई. साहब ने उस मजदूर से कहा कि महाराज की पत्नी को बोलो कि वे अपने मकान से बाहर बरामदे में आ जाएँ, उनसे बात करनी है। डी.ई. साहब ने कहा कि महाराज का दिल्ली से इंटरव्यू कॉल आया है, मैं इसे उनके पास समय पर पहुँचा दूँगा। आपको कुछ कहना हो और कुछ रुपये देने हों तो पत्र लिख दीजिए, मैं एक घंटे बाद जाऊँगा। वे जानती थीं कि सर्वे कैंप में मेरे पास इतने रुपये नहीं होंगे कि मैं दिल्ली जाने आने की यात्रा कर सकूँ, अत: उन्होंने किसी से उधार लेकर एक सौ रुपये भिजवाए और पत्र में लिख दिया कि वापिस कानपुर होते हुए आएँ, वहाँ से मेरे पिताजी से वापिसी की यात्रा के लिए रुपये ले लें। उल्लेखनीय है कि सात्धार जैसे स्थान पर सीमित खर्च था, अत: वेतन मिलने पर आवश्यक खर्च के लिए रुपये रखकर शेष हम अपने गाँव पिताजी को भेज देते थे, इस कारण दिल्ली की यात्रा के लिए ऐसा प्रबंध करना पड़ा था। मैं समझता था कि इंटरव्यू कॉल एक-दो माह बाद आएगा, अत: अगले माह का वेतन पूरा रख लेंगे। उल्लेखनीय है कि उस समय हमारा वेतन 300 रुपये प्रति माह था, जबकि प्रथम श्रेणी अधिकारी का वेतन भी 450 रुपये मासिक हुआ करता था।

डी.ई. साहब दूसरे दिन ही हमारे कैम्प की ओर चल दिए, क्योंकि इंटरव्यू की तारीख नजदीक थी। रात्रि में मेरे सहकर्मी श्री पात्रा को स्वप्न आया कि मेरा इंटरव्यू कॉल लैटर आया है। मैंने कहा आया होगा तो आता रहे, यहाँ इतनी दूर कौन देने आएगा, जैसी ईश्वरेच्छा। हम लोग रोज की तरह सर्वे करने चले गए। हमारी जीप और ड्राइवर सर्वे कैम्प में रहे। हम लोग पैदल ही सर्वे पर जाते थे, क्योंकि सर्वे स्थल पास में ही था। शाम को जब हम आए तो दूर से देखा कि कैम्प के सामने एक

और जीप खड़ी है। हम सोचने लगे कि देखो डी.ई. साहब को शायद हमारे ऊपर विश्वास नहीं है, हमारे पीछे–पीछे निरीक्षण करने आ धमके। पास पहुँचकर पता चला कि वे मेरा इंटरव्यू कॉल लैटर लेकर आए हैं। उन्होंने मुझे बधाई देते हुए कहा कि यह कॉल लैटर है और यह आपकी पत्नी का पत्र है जिसमें कुछ रुपये भी रखे हैं। कल सुबह आपको हम मुख्य सड़क पर छोड़ देंगे, वहाँ से आप बस से रायपुर चले जाएँ और रायपुर से दिल्ली ट्रेन से चले जाएँ। उन दिनों आरक्षण की इतनी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। सामान्य डिब्बे में आराम से सीट मिल जाया करती थी।

मैं इंटरव्यू से एक दिन पूर्व शाम को दिल्ली पहुँच गया और चाँदनी चौक के एक होटल में रुक गया। सर्दी का समय था। गरम पैंट और स्वेटर मेरे पास था, सोचा एक टाई खरीदी जाए, क्योंकि प्रथम श्रेणी अधिकारी का इंटरव्यू देना है। पाँच रुपये की एक ठीक–ठाक टाई खरीद ली और दूसरे दिन सुबह 10 बजे धौलपुर हाउस पहुँच गया। एक अभ्यर्थी साक्षात्कार देकर निकला तो उनसे पूँछा कि किस प्रकार के प्रश्न पूँछते हैं। उन्होंने जो बताया उससे मैं हताश हो गया कि पाँच सदस्यों के बोर्ड के समक्ष एक–सवा घंटे तक अंग्रेजी में किस तरह वार्ता कर सकूँगा, क्योंकि उस समय एक भी शब्द/वाक्य हिन्दी में नहीं बोल सकते थे। सबसे ज्यादा चिंता सामान्य ज्ञान के प्रश्नों की थी, क्योंकि तकनीकी क्षेत्र का अध्ययन तो अंग्रेजी माध्यम से किया था, उसके संदर्भ में तो उत्साह था। हरि स्मरण कर रहा था कि बुलावा आ गया। जाते ही तकनीकी प्रश्न पूँछे गए जिनका उत्तर ठीक से देता गया। अब एक सदस्य ने सामान्य ज्ञान के संबंध में चर्चा की। पूरे इंटरव्यू का यही भाग बहुत महत्त्वपूर्ण था, अतः इसे प्रश्नोत्तर की तरह से निम्नांकित प्रकार से प्रस्तुत कर रहा हूँ:–

प्रश्नः आपकी रुचि किस सामान्य विषय में है?

उत्तरः जब कभी फुर्सत का समय होता है मैं धार्मिक पुस्तकें पढ़ता हूँ।

प्रश्नः कौन सा ग्रन्थ आपको सबसे प्रिय है?

उत्तरः गोस्वामी तुलसीदासकृत 'रामायण'।

प्रश्नः रामायण तो महर्षि वाल्मीकि ने लिखी है?

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामायण' का नाम 'श्रीरामचरितमानस' रखा है।

प्रश्न: रामायण काल का कौन सा सिविल इंजीनियरी कार्य प्रसिद्ध है?

उत्तर: समुद्र पर भारत से श्रीलंका तक तैरता हुआ पत्थरों का पुल (फ्लोटिंग ब्रिज)

इस संदर्भ में उन महाशय से काफी समय तक विचार विमर्श होता रहा और मुझे ऐसा आभास हुआ कि वे मेरे सभी उत्तरों से संतुष्ट थे। इसके बाद उन्होंने आगे यह प्रश्न किया।

प्रश्न: आप जंगल में, आबादी से बहुत दूर एक सर्वे कैम्प में रहते हो। अध्ययन के अलावा आप अपना समय पुस्तकें पढ़ने के अलावा और कैसे बिताते हो?

उत्तर: मैंने एक कीर्तन मंडली गठित कर ली है। मैं हारमोनियम बजाता हूँ। एक सदस्य ढोलक बजाते हैं। मजीरा, झीका आदि की व्यवस्था भी है। हम लोग प्रत्येक सोमवार-गुरुवार को रात्रि 8 बजे लगभग 2 घंटे कीर्तन करते हैं।

यह सब सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए और जब दूसरे सदस्य तकनीकी प्रश्न पूँछते थे और जब मैं कुछ भ्रमित सा हो जाता था तब वे मुझे रोकर पुन: विचार करके सही उत्तर देने के लिए प्रेरित करते रहे। इस प्रकार से मुझे लगा कि कोई भी प्रश्न न तो अनुत्तरित रहा और न गलत हुआ। एक सदस्य ने अंतिम प्रश्न इस प्रकार से पूछा-

प्रश्न: हमारी पृथ्वी घूम रही है, तो हम सब एक-दूसरे से क्यों नहीं टकराते?

उत्तर: जिस गति से जिस दिशा में पृथ्वी घूम रही है, हम सभी भी उसी गति से उसी दिशा में घूम रहे हैं, इसलिए आपस में नहीं टकराते।

प्रश्न: इसका क्या आशय है?

उत्तर: दोनों के संदर्भ में सापेक्ष्य गति (रिलेटिव वैलोसिटी) शून्य है।

इसके बाद इंटरव्यू बोर्ड के अध्यक्ष ने कहा-धन्यवाद, अब आप जा

सकते हैं।

ईश्वर की कृपा से ही इन्टरव्यू बहुत अच्छा रहा और मुझे विश्वास हो गया कि अवश्य ही मेरा चयन हो जाएगा। जुलाई 1973 को परिणाम आया तो मैंने देखा कि इंटरव्यू में 300 में से 180 अंक प्राप्त हुए जबकि सामान्यतया इंटरव्यू में 100 अंक प्राप्त कर पाना भी बहुत मुश्किल होता है, ऐसा मुझे कई लोगों ने बताया था।

उपर्युक्त सभी घटनाक्रमों पर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि बिना ईश्वर की विशेष कृपा से यह संभव नहीं था। मुझे केन्द्रीय जल आयोग में सहायक निदेशक/सहायक अधिशासी अभियंता का ऑफर यथासमय प्राप्त हुआ और मैंने जून 1974 को दिल्ली में कार्यभार ग्रहण किया। समय-समय पर पदोन्नति होती रही और 30 नवंबर 2006 को मुख्य अभियन्ता (पदेन कमिश्नर, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार) पद से सेवा निवृत्त हो गया। छटवें केन्द्रीय वेतन आयोग ने सिफारिश की कि 'केन्द्रीय जल इंजीनियरी' सेवा को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) से पैरिटी (समानता) प्रदान की जाए। इसे भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया, अतः सेवा निवृत्ति के पश्चात् मुझे अपर सचिव, भारत सरकार (प्रमुख सचिव, राज्य सरकार) के पद पर प्रोन्नत करके उच्चतर प्रशासनिक ग्रेड स्वीकृत किया गया। यह सब ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ।

यहाँ पर विस्तार भय से विभिन्न घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं कर रहा हूँ, पर इंजीनियरी डिग्री परीक्षा पास करने के पश्चात् से जो भी घटनाक्रम इसमें वर्णित किए हैं, उनमें से यदि एक भी कड़ी टूट जाती तो संघ लोक सेवा आयोग की कठिनतम परीक्षा उत्तीर्ण होना संभव नहीं था। एक के बाद एक कड़ी ईश्वर की कृपा से ही ऐसे जुड़ती गई जैसे कोई पहले से सुनियोजित ढंग से एक के बाद एक कड़ी जोड़ रहा हो। इसमें स्पष्ट रूप से ईश्वर की कृपा है और इसी से मैं लक्ष्य तक पहुँच सका।

इस पूरे घटनाक्रम में मुझे कदम-कदम पर भगवत्कृपा का अनुभव हुआ।

9. प्राकृतिक चिकित्सा का संबल मिला

सन् 1972 में मेरी पत्नी 'श्रीमती कुसुम' को साँस लेने में कुछ तकलीफ हुई जो कुछ दिनों के एलोपैथी उपचार से ठीक तो हो गई, पर 1973 में इस बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया। उस समय 'बैटनीसोल' नामक गोली डॉक्टर ने लिखी जो रोज लेने पर आराम मिलता था। आजकल तो इस गोली को डॉक्टर एक सप्ताह से अधिक समय के लिए नहीं देते हैं, क्योंकि इससे हृदय पर दुष्प्रभाव पड़ता है। उन दिनों मेरे एक सहकर्मी श्री दिवाकर पात्रा ने मुझे श्री बिट्ठलदास मोदी द्वारा लिखित ''रोगों की सरल चिकित्सा'' नामक पुस्तक दी जिसमें श्वास संबंधी रोग निवारणार्थ कई प्राकृतिक विधियाँ लिखी थीं। हमने उसे पढ़कर उपचार प्रारंभ किया, जिससे कुछ लाभ हुआ और फिर 1977 तक विशेष तकलीफ नहीं हुई। इससे मुझे 'प्राकृतिक चिकित्सा' के प्रति रुचि जाग्रत हुई और मैंने सन् 1978 में आरोग्य मंदिर गोरखपुर से 'डॉक्टर ऑफ नैचुरोपैथी' का कोर्स करने के लिए पंजीकरण करा लिया तथा कोर्स की पुस्तकें मँगाकर पढ़ने लगा। लगभग दो वर्ष में मैंने पूरी तैयारी कर ली, पर व्यावहारिक ज्ञान (प्रैक्टीकल ट्रेनिंग) के लिए दो माह की छुट्टी नहीं मिल पा रही थी। बिना व्यावहारिक ज्ञान के उपचार करने में कुछ त्रुटियाँ हो जाती थीं, इस कारण श्रीमतीजी की तबीयत बिगड़ती गई। उस समय एलोपैथी के अलावा होमोपैथी और आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली से भी इलाज कराया, पर आराम नहीं मिला, अतः हम श्रीमती को लेकर जून 1990 में आरोग्य मंदिर, गोरखपुर पहुँचे। मात्र 15 दिनों के प्राकृतिक उपचार से आशातीत लाभ हुआ। कुछ पारिवारिक उलझनों के कारण हमें वापिस नोएडा आना पड़ा। उस समय मेरी पोस्टिंग दिल्ली में थी। इस घटनाक्रम से प्राकृतिक चिकित्सा में मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया और मैंने निश्चय किया कि जितनी जल्दी हो सके व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करके

प्राकृतिक चिकित्सा में डिग्री प्राप्त कर लूँ ताकि श्रीमतीजी का तथा अन्य इच्छुक लोगों का उपचार दक्षता पूर्वक कर सकूँ। समस्या दो माह की छुट्टी की थी, पर ईश्वर की कृपा से यह इस प्रकार से सुलझी:-

आरोग्य मंदिर, गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी मासिक पत्रिका 'आरोग्य' प्रकाशित होती है, जिसका मैं आजीवन सदस्य था। इसके दिसंबर 1994 के अंक में 'व्यावहारिक ज्ञान' का समय एक माह 'फरवरी 1995' का प्रकाशित हुआ, जबकि प्रति वर्ष यह दो माह, जनवरी-फरवरी में होता था। एक माह के अवकाश के लिए मैंने आवेदन किया और वह स्वीकृत हो गया, अत: मैंने व्यावहारिक ज्ञान की फीस भी जमा करा दी। 'आरोग्य' के जनवरी 1995 के अंक में सूचना जारी हुई कि पिछले अंक में त्रुटिवश व्यावहारिक ज्ञान का समय एक माह का प्रकाशित हुआ है, यह पूर्व वर्षों की भाँति दो माह का होगा, केवल कुछ अपरिहार्य कारणवश समय बदल दिया गया है। अब यह जनवरी-फरवरी की बजाय फरवरी-मार्च में होगा। दो माह का अवकाश बड़ी मुश्किल से वरिष्ठ अधिकारी से विशेष अनुरोध करने पर मिल सका और मैंने 1995 में "डॉक्टर ऑफ नेचुरोपैथी" की डिग्री प्राप्त कर ली। तत्पश्चात् नियमानुसार "राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा अकादमी" (नेशनल एकेडैमी ऑफ नेचरक्योर), दिल्ली में एक प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में पंजीकरण भी करवा लिया। इसके बाद में श्रीमतीजी का, स्वयं का और जो भी प्राकृतिक चिकित्सा में रुचि रखते हैं, उनको उपचार हेतु सलाह देता रहता और यह कार्य अभी भी कर रहा हूँ। यह ईश्वर की कृपा ही है कि मुझे प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी मिल सकी, जिससे मैं आज 75 वर्ष की उम्र में भी बिना किसी औषधि के स्वस्थ जीवनयापन कर रहा हूँ और श्रीमती जी भी कुछ प्राकृतिक चिकित्सा और कुछ एलोपैथी दवाओं के सहारे अस्थमा जैसे रोग से संघर्ष करते हुए भी स्वस्थ हैं। कई लोग मेरे मार्गदर्शन में प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली से उपचार करके रोगमुक्त हुए हैं। विस्तार भय से उसका विवरण नहीं दे रहा हूँ तथापि एक स्वास्थ्यार्थी का तो बड़ी आँत के निचले हिस्से का ऑपरेशन टल गया और आज लगभग 16 वर्षों बाद

भी वे प्राकृतिक चिकित्सा के सहारे स्वस्थ हैं। इस समय वे भारत सरकार में एक अधिकारी के पद पर तैनात हैं। यदि कोई चाहें तो मैं उनका फोन नंबर दे सकता हूँ। इसे भी मैं भगवत्कृपा ही समझता हूँ कि मैं किसी के काम आ सका। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि यदि निष्ठापूर्वक लगन के साथ प्राकृतिक नियमों का पालन किया जाए तो शरीर के अंदर सभी रोगों से लड़ने की क्षमता सृजित हो जाती है और यदि मौसम बदलने पर कुछ तीव्र रोग जैसे जुकाम, बुखार, दस्त आदि हो भी जाते हैं, तो वे भी मामूली प्राकृतिक उपचारों से शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

इस प्रकार से प्राकृतिक चिकित्सा का संबल प्राप्त होने में मैं भगवान की कृपा समझता हूँ।

प्रथम सुख निरोगी काया

'स्वस्थ' रहना हमारे हाथ में है। कुछ अपवाद छोड़कर सभी बच्चे स्वस्थ पैदा होते हैं, पर जब उन्हें बचपन से ही माँ का पर्याप्त समय दुग्धपान नहीं मिलता है और आगे चलकर भी खान-पान, आहार-विहार आदि अनियमित हो जाता है, तब जीवनी शक्ति क्षीण हो जाती है। यही कारण है कि ऐसे लोग रोगों से घिरे रहते हैं। 'योग' अर्थात् महर्षि पांताजलि का अष्ट योग अपनाने से शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, साथ ही जीवन के परम लक्ष्य भगवत्प्राप्ति का भी पथ प्रशस्त होता है। इस संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता में लिखा है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्ठस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगे भवति दुखहा।। (6/17)

अर्थात् दु:खों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्ठा करने वाले का और यथायोग्य सोने और जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

शेष पृष्ठ 58 पर...

10. जब एक अपरिचित बना देवदूत

यह घटना मई 1974 के अंतिम सप्ताह की है। उस समय मेरी पोस्टिंग जगदलपुर, मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) में थी। संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) द्वारा आयोजित परीक्षा में उत्तीर्ण होने के परिणामस्वरूप मेरी पोस्टिंग केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली में सहायक निदेशक के पद पर हो चुकी थी और मुझे जून 1974 के अंदर दिल्ली जाना था, इस कारण मैं अपने परिवार को अपने गाँव पहुँचाने के उद्देश्य से पत्नी एवं दो छोटे बच्चों को लेकर जगदलपुर से रायपुर की रात्रि सेवा वाली बस में बैठ गया। मेरी तबीयत बिल्कुल ठीक थी। पूरे दिन दफ्तर में काम करके शाम को हल्का नाश्ता करके हम लोग बस में सवार हुए थे। जगदलपुर से कांकेर तक की यात्रा में एक बड़ी घाटी पड़ती है जिसमें अक्सर लोगों को उलटी हो जाया करती है, पर मुझे कुछ नहीं हुआ, क्योंकि मैं तो 1967 से 1974 के बीच दस-पंद्रह बार यात्रा कर चुका था। मैं निश्चिन्त होकर बैठा था, पर जैसे ही कांकेर में बस रुकी मुझे हाजत हुई और मैं पास के शौचालय चला गया। मुझे पतला दस्त हुआ और साथ में एक उलटी। बस वहाँ पर करीब आधा घंटा रुकती थी और यात्री वहाँ पर रात्रि का भोजन करते थे। बस एक होटल के सामने रुकी थी। हम तो अपना भोजन साथ में लिए हुए थे। पत्नी ने कहा भोजन कर लेते हैं। मैंने कहा मुझे ठीक नहीं लग रहा है, थोड़ा रुक जाओ। इतना कहते ही मुझे फिर हाजत हुई और फिर उलटी के साथ-साथ फिर से दस्त भी हो गया। मैंने ईश्वर का स्मरण करते हुए विचार किया कि अब क्या करूँ? मुझे ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि आगे की यात्रा स्थगित कर दो। मैंने पत्नी से कहा कि मेरा विचार आगे यात्रा न करने का है। उन्होंने भी सलाह दी कि यदि आपको अच्छा नहीं लग रहा है तो आज रात यही होटल में रुक लेते हैं, कल चले चलेंगे।

हमने बस से अपना सामान उतार लिया और होटल में जाकर पता

किया तो एक कमरा मिल गया। हम उस कमरे में रुक गए और विचार कर ही रहे थे कि भोजन करके विश्राम किया जाए कि मुझे फिर हाजत हुई और जो शौचालय में गया, उल्टी–दस्त का ऐसा सिलसिला चला कि मैं वहीं से चिल्लाया कि मेरी हालत बहुत खराब है। पत्नी मुझे शौचालय से बिस्तर पर लाईं और फिर कमरे में ही यह सब होने लगा। मैं बेहोश सा हो गया था। मुझे बताया गया कि मुझे खून की उल्टी–दस्त होने लगे थे, तब मेरा बड़ा पुत्र जो चार साल का था, होटल के भोजन कक्ष में जाकर रोते हुए पुकारने लगा कि मेरे पिताजी खून की उल्टी करने लगे हैं, कोई हमारी मदद करने की कृपा करें। उस समय रात्रि के लगभग साढ़े दस बजे थे। कुछ लोग भोजन कर रहे थे। उनमें से एक सज्जन (हमारे लिए तो देवदूत सिद्ध हुए) हमारे कक्ष में आए और पत्नी से बोले कि अपने दोनों बच्चों को लेकर कमरे से बाहर आइए। सामान यहीं पर रखकर ताला लगा दीजिए। आपके पति को मैं उठाकर रिक्शे में बैठाता हूँ। रिक्शा बाहर खड़ा है। इससे पूर्व उन सज्जन ने किसी को भेजकर पता लगवाया कि शायद कोई प्राइवेट डॉक्टर मिल जाए तो ले आएँ, पर कोई न मिला, तब सरकारी अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया। उन्होंने हमें सरकारी अस्पताल पहुँचाया ही नहीं, बल्कि चिकित्सा का पूरा प्रबंध भी स्वयं किया।

अस्पताल में उस समय केवल एक नर्स थी। उन सज्जन ने कहा कि इन्हें तुरन्त ड्रिप लगाओ, इनकी हालत बिगड़ती जा रही है। नर्स ने कहा मुझे पता नहीं ड्रिप का सामान कहाँ है। उन सज्जन ने इधर–उधर देखकर कहा कि इस अलमारी में है, चाबी लाओ। उन्होंने अलमारी खोलकर सब सामान निकालकर सामने रख दिया। अब प्रश्न था कि इन्जैक्शन लगाने की व्यवस्था कैसे हो क्योंकि उस समय डिस्पोजल सिरेन्ज नहीं हुआ करती थी। काँच की सिरेन्ज को खौलते पानी में डालकर पुनः उपयोग हेतु तैयार किया जाता था। उन सज्जन ने खुद स्टोव जलाकर इन्जैक्शन हेतु सिरेन्ज तैयार करके दी और उपयुक्त इन्जैक्शन भी किसी अलमारी में से ढूँढ़ कर लाए और तब नर्स से कहा कि अब इन्जैक्शन लगाकर ड्रिप भी चढ़ा दीजिए। मेरी हालत देखकर

उस नर्स को भी दया आ गई होगी और उसने उचित उपचार किया जिसके परिणामस्वरूप मेरे उल्टी-दस्त रुक गए और होश भी आ गया। पता नहीं कितनी रात हो गई होगी और जब उन सज्जन ने देख लिया कि मैं खतरे से बाहर हूँ तभी वे अस्पताल में मेरे बगल में ही कुर्सी पर बैठे।

प्रातः समय मेरी तबीयत सामान्य होने लगी थी। मैंने उन सज्जन से अब उनका परिचय पूँछा। उन्होंने बताया कि वे बुंदेलखण्ड के रहने वाले 'शुक्ला' ब्राह्मण हैं। यहाँ सर्विस करते हैं। हमने भी अपना परिचय दिया। तत्पश्चात् शुक्लाजी करीब 10 बजे मेरी पत्नी और बच्चों को साथ लेकर अस्पताल से होटल के कमरे की सफाई कराने गए। वहाँ पर लोग चर्चा कर रहे थे कि रात में जो मरीज यहाँ से अस्पताल गया था वह बचा कि नहीं। हालत बहुत नाजुक थी, बचना मुश्किल था। आगे ईश्वरेच्छा। इसी वार्तालाप के बीच मेरी पत्नी उस कमरे की सफाई करने लगीं, जिसमें रात्रि को हम रुके थे। होटल का मालिक बड़ी उत्सुकता से पूँछता है कि बेटी आपके पति की कैसी हालत है। उन्हें बताया गया कि वे ठीक हैं। इसके बाद होटल के मालिक स्वयं मुझे देखने अस्पताल आए और मुझे ठीक हालत में देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने बताया कि आपकी हालत देखकर कल रात कोई भी आपके पास आने की हिम्मत नहीं कर रहा था, क्योंकि आपको हैजा के लक्षण थे। सभी नाक-मुँह दबाकर बचते हुए जा रहे थे। जो सज्जन आपको अस्पताल ले आए और आपका इलाज कराया, वे आपके लिए मानो भगवान बनकर आए थे। मैं भी उन्हें हार्दिक साधुवाद देता हूँ। होटल के मालिक जो बहुत बुजुर्ग थे, ने आगे यह भी कहा कि बेटा तुम बहुत भाग्यशाली हो जो भगवान की कृपा से बच गए, क्योंकि कल रात होटल में जिसने भी आपको देखा था, यही कह रहे थे कि इस आदमी का बचना मुश्किल है। ईश्वर ही कोई चमत्कार कर दें तो ही बच सकेगा। मैंने होटल के मालिक से कहा कि जो सज्जन रात्रि में हमें अस्पताल ले आए थे, वे हमारे लिए ईश्वर की कृपा से देवदूत बनकर आए थे। उन्होंने जो प्रयास किए, उसी के परिणामस्वरूप मेरी जान बच सकी। यह ईश्वर की कृपा ही है अन्यथा इस अनजाने कस्बे में हम कहाँ-कैसे

उपचार कराते।

श्री शुक्लाजी ने मेरी पत्नी और बच्चों को होटल में भोजन कराया तथा होटल का कमरा खाली करवाकर उन्हें अस्पताल छोड़ गए और मेरे लिए खिचड़ी का प्रबंध कर दिया। उल्लेखनीय है कि श्री शुक्लाजी तो अविवाहित थे, तभी रात में दस बजे होटल में भोजन कर रहे थे। जब हमने बताया कि हम पटैरया हैं तो उन्होंने कहा कि उनके मित्र भी पटैरया हैं जो यहीं पर रहते हैं, शाम को उनको लेकर आऊँगा। शाम के समय श्री शुक्लाजी अपने मित्र और उनकी पत्नी सहित आए और हमारे लिए भोजन भी लाए। दूसरे दिन श्री शुक्लाजी के मित्र श्री पटैरयाजी मेरी पत्नी और बच्चों को अपने घर पर ले गए तथा स्नानादि के पश्चात् भोजन कराया और शाम के लिए टिफिन दे दिया। तीसरे दिन तक मेरी तबीयत सामान्य हो गई थी और मैं यात्रा करने योग्य हो गया। हमने शुक्लाजी से आग्रह किया कि आप अपना बुंदेलखण्ड का स्थाई पता लिखवा दीजिए और दोपहर को हम जाने वाले हैं, उस समय अवश्य दर्शन दे दीजिएगा। उन्होंने न तो अपना और न अपने मित्र श्री पटैरयाजी का पता दिया और न हमारे जाने के समय बस स्टैण्ड पर आए। हम तो यही मानते हैं कि ईश्वर की कृपा से वे हमारे लिए देवदूत बनकर आए और मुझे मौत के मुँह से निकाल लिया।

इस घटना में निम्नांकित तथ्य विचारणीय हैं:-

(1) ईश्वर की प्रेरणा से ही हमने कांकेर में यात्रा स्थगित करके होटल में एक कमरा ले लिया। यदि आगे यात्रा जारी रखी होती तो अनर्थ हो सकता था।

(2) ईश्वर की कृपा से ही श्री शुक्लाजी देवदूत बनकर आए और मेरी जान बच सकी।

(3) यदि शुक्लाजी इन्जैक्शन एवं ड्रिप लगवाने का तत्काल प्रबंध न करते तो अनर्थ हो सकता था।

इस प्रकार से इस घटना में मुझे प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के कृपा के प्रत्यक्ष दर्शन हुए।

11. कंपनी सेक्रेट्री की परीक्षा का प्रवेश पत्र

मेरी बेटी प्रीती ने कम्पनी सेक्रेट्री के फाउंडेशन कोर्स की मई 1995 की परीक्षा के लिए फार्म भरा। फीस जमा करके उसकी रसीद मैंने रख ली। परीक्षा के एक दिन पूर्व तक उसने परीक्षा के प्रवेश–पत्र की प्रतीक्षा की और जब नहीं आया तो दूसरे दिन सुबह 10 बजे लोदी रोड स्थित कम्पनी सेक्रेट्री के कार्यालय में फोन किया तो उन्होंने बताया कि यदि परीक्षा की फीस जमा करने का प्रमाण उन्हें दिखा दिया जाए तो तुरन्त प्रवेश–पत्र जारी कर दिया जाएगा। परीक्षा दोपहर 2 बजे से साउथ एक्सटेंशन केन्द्र पर थी। सिर्फ 4 घंटे का ही समय था। समस्या यह थी कि रसीद मेरे पास थी और मैं रीवा (मध्य प्रदेश) के पास बाणसागर परियोजना के निरीक्षण हेतु टूर पर था। उस समय मेरी पोस्टिंग दिल्ली में थी और विभिन्न राज्यों की सिंचाई परियोजनाओं का निरीक्षण करके रिपोर्ट भारत सरकार एवं संबंधित राज्य सरकारों को देनी होती थी। दौरे पर जाते समय मैं संबंधित वरिष्ठ अधिकारी के कार्यालय का फोन नम्बर घर पर दे जाता था। मेरे निवास पर भी सरकारी फोन लगा था। उस समय आजकल की तरह मोबाइल फोन नहीं होते थे। शहर से बाहर के फोन एस0टी0डी0 कोड लगाकर किए जाते थे और मुश्किल से मिलते थे, क्योंकि सीमित लाइनें होने के कारण व्यस्तता रहती थी, पर ईश्वर की कृपा से 4 घंटे के अंदर ही किस तरह कार्य पूर्ण हुआ, उसका विवरण निम्नांकित है।

बेटी ने बाणसागर परियोजना के चीफ इंजीनियर से सुबह साढ़े दस बजे बात की तो पता चला कि परियोजना स्थल से मैं लौटकर नहीं आया। सवा बारह बजे मैं रीवा कार्यालय पहुँचा तब सब समाचार मिला। उल्लेखनीय है कि जो अधिकारी मुझे निरीक्षण कराने ले गए थे, उनका विचार था कि रास्ते में ही लंच करके आस–पास के कुछ दर्शनीय स्थल देखकर शाम तक रीवा चलें, पर मैंने मना कर दिया। मेरे मन में घर

का हाल–चाल जानने की उत्सुकता थी, अतः सीधे रीवा पहुँचे। मैंने अपने कार्यालय दिल्ली फोन किया तो मेरे निजी सचिव श्री जीत सिंह ने फोन उठा लिया, यह भी भगवत्कृपा से ही संभव हुआ क्योंकि जब अधिकारी दौरे पर होते हैं तब सामान्यतया निजी सचिव कभी–कभी तो दफ्तर भी नहीं आते, क्योंकि उनका और कोई नियंत्रण अधिकारी नहीं होता। मैंने उन्हें बताया कि फीस जमा करने की रसीद मेरी मेज के दाहिने दराज में ऊपर ही रखी है और दराज की चाभी मेरी अलमारी में है, किंतु अलमारी की चाभी मेरे पास है। दौरे पर जाते समय निजी सचिव को बता कर गया था कि गोपनीय फाइलें अलमारी में हैं और यदि संसद प्रश्नों के संदर्भ में आवश्यकता पड़े तो उप निदेशक की निगरानी में ताला तुड़वाकर दूसरी चाभी बनवा लेना। निजी सचिव ने बताया कि मैंने ताला तुड़वाकर दूसरी चाभी बनवा ली है जो अब उप निदेशक के पास है, उनसे लेकर रसीद निकाल लेता हूँ। साढ़े बारह बजे तक यह कार्य हो गया। यहाँ पर यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अलमारी की दूसरी चाभी का बन जाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अलमारी का ताला तुड़वाकर दूसरी चाभी न बन गई होती तो फिर कुछ नहीं हो सकता था क्योंकि लंच का समय था, उस समय कोई भी सरकारी कारीगर नहीं मिल सकता था जो ताला तोड़कर दूसरी चाभी बना दे। अब मैंने निजी सचिव से कहा कि आप रसीद लेकर लोदी रोड जाकर बेटी का प्रवेश पत्र बनवाएँ और बन जाने पर साउथ एक्सटेंशन परीक्षा केन्द्र पहुँचें, मेरी बेटी वहीं मिलेगी। इधर प्रीती से कहा कि तुम सीधे परीक्षा केन्द्र पहुँचो, श्री जीत सिंह वहीं तुम्हें प्रवेश पत्र दे देंगे। सभी कार्य समय पर हो गए, पर श्री जीत सिंह से प्रवेश पत्र 2 बजकर 35 मिनट पर मिल सका जबकि परीक्षा 2 बजे प्रारंभ हो चुकी थी और विलम्ब से आने वालों के लिए अधिकतम 30 मिनट की अवधि निर्धारित थी। परीक्षा निरीक्षक ने कहा कि तुम अधिकतम सीमा से भी 5 मिनट देर से आई हो, अतः अब अनुमति नहीं दी जा सकती। यह सुनकर प्रीती रोने लगी और उसे रोता देखकर परीक्षा निरीक्षक को दया आ गई और उसने परीक्षा देने की अनुमति दे दी। प्रीती उसी परीक्षा में

फाउंडेशन कोर्स के चारों पेपरों में पास हो गई। यह सब ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ।

इस संबंध में निम्नांकित तथ्य उल्लेखनीय हैं:-

(1) मेरा बाणसागर परियोजना से सवा बारह बजे बाणसागर परियोजना के चीफ इंजीनियर, रीवा (मध्य प्रदेश) के कार्यालय पहुँच जाना,

(2) निजी सचिव को फोन लगाया तो उनका अपनी सीट पर बैठा हुआ मिल जाना,

(3) अलमारी की दूसरी चाभी का बनवा लेना,

(4) लंच के कुछ समय पूर्व उप निदेशक का अपनी सीट पर मिल जाना और उनसे चाभी लेकर दराज में से रसीद निकालना,

(5) निजी सचिव द्वारा तुरंत लोधी रोड जाकर प्रवेश पत्र बनवाना,

(6) बेटी का समय पर परीक्षा केन्द्र पहुँचना,

(7) और अधिकतम 30 मिनट की समय-सीमा के बाद भी विलम्ब को नज़र अंदाज करके परीक्षा में बैठने की अनुमति मिल जाना।

उपर्युक्त सभी कार्य भगवत्कृपा से ही संभव हुए। यदि उपर्युक्त सात कड़ियों में से एक भी कड़ी समय पर न जुड़ती तो यह कार्य संभव नहीं था।

पर यह ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ।

...पृष्ठ 51 का शेष

हम अपनी दिनचर्या में सम्यक् सुधार से तथा जीर्ण रोग होने पर पंचतत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु के समुचित प्राकृतिक उपचार से सदा स्वस्थ रह सकते हैं।

12. ईश्वर की कृपा से भवन निर्माण पूर्ण हुआ

मैंने जून 1974 में दिल्ली में भारत सरकार की सेवा प्रारंभ की। कुछ समय बाद साथी अधिकारियों ने मुझे बताया कि आपको सेवाकाल में अधिकांश समय दिल्ली में ही रहना होगा, अतः प्लॉट या फ्लैट लेने का विचार कर लें। इस हेतु भारत सरकार से आसान ब्याज दर पर ऋण मिल जाता है। इस बात को मैंने ध्यान में रखा और एक प्लॉट हेतु 1977 में 'केन्द्रीय सरकारी सेवा सहकारी भूमि तथा गृह निर्माण समिति में 1500 रुपये जमा करा दिए। इस समिति की सदस्यता हेतु मेरे नाम से सदस्यता शुल्क 10 रुपये बहुत पहले ही जमा करा दी गई थी। उपर्युक्त समिति ने वर्तमान नोएडा में 1400 बीघा जमीन खरीद ली थी और अपनी कॉलोनी विकसित करने का विचार ही कर रहे थे कि उत्तर प्रदेश शासन ने मई 1976 में ''न्यू ओखला इंडस्ट्रियल डबलपमैंट अथॉर्टी (नोएडा)' का गठन किया और समिति की पूरी जमीन अधिग्रहण कर ली। समिति उच्चतम न्यायालय पहुँची और कोर्ट के आदेशानुसार समिति को नोएडा के सैक्टर 31, 36 तथा कुछ अन्य सैक्टरों में प्लॉट आवंटित किए गए। सन् 1986 में मुझे सैक्टर-36 में डी-11 प्लॉट मिला। मैंने तुरंत भारत सरकार से ऋण हेतु आवेदन किया जो स्वीकृत हो गया और हमने मार्च 1987 तक उक्त प्लॉट में भूमितल (ग्राउंड लोर) बना लिया जिसमें जून 1987 में आगरा से स्थानान्तरण पर हम अपने मकान में आकर रहने लगे।

शनैः-शनैः परिवार में वृद्धि होने पर जगह कम पड़ने लगी तो उसी के ऊपर पहली मंजिल बनाने का विचार किया ही था कि ईश्वर की कृपा से एक आदेश जारी हुआ कि जो कर्मचारी भारत सरकार से पहली बार भवन निर्माण हेतु ऋण ले चुके हैं, वे किसी राष्ट्रीय बैंक से नियमानुसार एक निर्धारित सीमा के अंदर दूसरी बार भी ऋण ले सकते हैं। इसका लाभ उठाते हुए मैंने केनरा बैंक से 3,50,000 रु0 ऋण के

लिए आवेदन कर दिया और 50,000 रु0 जी0पी0एफ0 से निकाल कर पहली मंजिल पर भवन निर्माण जुलाई 1997 में प्रारंभ कर दिया, क्योंकि मुझे विश्वास था कि बैंक से ऋण तो मिल ही जाएगा। पंद्रह–बीस दिन में दीवारें बन गईं पर छत नहीं पड़ सकी, क्योंकि बैंक से कर्ज स्वीकृत नहीं हो सका, इसका कारण केन्द्रीय जल आयोग से प्लॉट के गिरवी रखे कागजात नहीं मिल सके थे। भारत सरकार के हाल ही में जारी किए गए आदेशों के अनुसार मकान बनवाने हेतु किसी बैंक से दूसरा ऋण लेने का मेरा यह विभाग में पहला मामला था। प्रशासनिक प्रभाग में बैठे लोग सहयोग नहीं कर रहे थे। उनका कहना था कि जब तक आपका कर्ज अदा नहीं हो जाएगा, मकान के कागजात बैंक को नहीं दिए जा सकते हैं। मेरे पास इतने धन की व्यवस्था नहीं थी कि भारत सरकार से लिया 1,20,000 रु0 का ऋण अदा कर दूँ। इस बीच एक दिन इतनी अधिक वर्षा हुई कि पूरे मकान में नीचे पानी भर गया क्योंकि पहली मंजिल पर छत नहीं पड़ी थी और भूमितल पर किचन के सामने खुली जगह थी। यह दृश्य देखकर हम लोग बहुत दुखी हुए और ईश्वर से प्रार्थना की कि कोई न कोई रास्ता निकालें ताकि भवन निर्माण पूर्ण हो सके।

उक्त घटना के दूसरे दिन मैं सचिव, केन्द्रीय जल आयोग से मिला और ईश्वर की कृपा से उन्होंने बीच का रास्ता निकाला। वे बोले हम आपके प्लॉट के मूल कागजात तो वापिस नहीं कर सकते, पर एक प्रमाण–पत्र देते हैं कि आपकी सेवानिवृत्ति अर्थात 30 नवंबर 2006 तक कागजात भारत सरकार के पास गिरवी रखे रहेंगे। यह प्रमाण–पत्र लेकर मैं बैंक गया और वे इससे संतुष्ट होकर ऋण स्वीकृत करने को तैयार हो गए। गणना करने पर उन्होंने कहा कि 800 रु0 प्रति माह की किश्त आप भारत सरकार के ऋण को अदा करने के लिए दे रहे हैं। साढ़े तीन लाख रुपये के ऋण की मासिक किश्त आप अदा नहीं कर पाएँगे, क्योंकि वेतन के हिसाब से हमारी किश्त अदा करने की आपकी क्षमता नहीं है। एक समस्या सुलझी तो दूसरी प्रकट हो गई, पर वह भी ईश्वर की कृपा से इस प्रकार से सुलझी। मैंने बैंक मैनेजर को समझाया कि

कुछ समय तक हम मकान का कुछ भाग किराए पर दे देंगे जिससे आपका ऋण पूरा हो जाएगा। इस तर्क से संतुष्ट होकर उन्होंने अपने विशेषाधिकार का उपयोग करते हुए मुझे साढ़े तीन लाख का कर्ज स्वीकृत कर दिया जिससे दिसंबर 1997 में भवन निर्माण पूर्ण हो गया और किराएदार भी मिल गए जिससे बैंक की पहली किश्त अदा करने के पूर्व ही उतना किराया मिल गया। **इस प्रकार भगवत्कृपा से ही भवन निर्माण पूर्ण हो सका।**

सात्धार के समीप आदिवासियों का नृत्य (सन् 1970)
संदर्भ (अध्याय 05)

13. मानस मंत्रों से अभीष्ट की प्राप्ति

यह घटनाक्रम सन् 1987–88 का है, तब मैं आगरा से स्थानांरित होकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली आया। दफ्तर रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली में था। सन् 1987 में स्थानांतरण से पूर्व मैंने सरकार से ऋण लेकर सैक्टर 36 नोएडा में मकान तो बनवा लिया था, पर बसावट न के बराबर थी। इस कारण वह मकान किराए पर तो कोई ले नहीं सकता था और जो हमने भवन निर्माण हेतु सरकार से ऋण लिया था उसकी किश्त वेतन से कटने लगी थी। इस कारण हमारी वित्तीय क्षमता इतनी नहीं थी कि दिल्ली में मकान किराए पर लेकर रह सकें, अतः अपने मकान में रहने का निश्चय किया। सैक्टर 36 के आस–पास से कोई बस दिल्ली जाने वाली चलती नहीं थी, सैक्टर 19 नोएडा से ही सभी बसें मिलती थीं। उस समय डी0टी0सी0 की एक स्पेशल बस दिल्ली जाने के लिए सुबह ठीक 8 बजे सैक्टर 19 से मिल जाती थी जो वहाँ से वापिस नोएडा के लिए शाम को 6 बजे मिलती थी। मैं इसी बस से आता–जाता था। सैक्टर 19 से सुबह 8 बजे बस पकड़ने के लिए संक्षिप्त पूजा–पाठ करके शेष मानसिक पूजा–पाठ बस में करता था। एक दिन डी0टी0सी0 की स्पेशल बस में जब मेरा पूजा–पाठ का क्रम पूर्ण हो चुका था, एक सज्जन मेरे पास आकर मुझसे चर्चा करने लगे। मस्तक पर तिलक और सिर पर चोटी देखकर वे बहुत कुछ तो मेरे बारे में अनुमान लगा चुके होंगे, तभी उन्होंने मुझसे वार्तालाप करना प्रारंभ किया, अन्यथा कोई किसी अनजान व्यक्ति से इस प्रकार वार्तालाप प्रारंभ नहीं करता। वे सज्जन ग्राम निठारी के पं. दिनेश चंद्र जी शर्मा थे।

शर्माजी ने बताया कि उन्होंने ग्राम निठारी में 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति' का गठन किया है और वे समय–समय पर श्रीरामचरितमानस का अखण्ड पाठ कराते हैं। आगामी रविवार–शनिवार को ग्राम निठारी में ही पाठ का आयोजन है जो शनिवार प्रातः 9 बजे से रविवार प्रातः 9–10

बजे तक चलेगा और तत्पश्चात् कीर्तन होगा। मैं उनके द्वारा बताए गए स्थान पर रविवार सुबह 10 बजे पहुँचा तब तक पाठ तो पूर्ण हो चुका था, पर कीर्तन चल रहा था। मैंने कीर्तन में भाग लिया और भोजन-प्रसाद ग्रहण करके चला आया। इसके बाद तो कई बार पाठ में शामिल हुआ और फिर समिति से जुड़ गया। कुछ समय बाद यह विचार किया गया कि समिति का पंजीकरण कराया जाए, प्रति वर्ष श्रीराम जन्ममहोत्सव आयोजित किया जाए और इस अवसर पर एक वार्षिक स्मारिका प्रकाशित की जाए जिसमें समिति की गतिविधियों के साथ-साथ श्रीरामचरितमानस पर आधारित लेख प्रकाशित किए जाएँ। इस क्रम में पहला अंक विक्रमी संवत् 2051 (सन् 1994-95) में प्रकाशित हुआ। वार्षिक अंक 28 विक्रमी संवत् 2078 (सन् 2021-22) में मुद्रित।

समिति का उत्तर प्रदेश सरकार से पंजीकरण दिनांक 25-11-1992 को हो चुका था, अतः हमें विज्ञापन भी प्रकाशनार्थ प्राप्त होने लगे, जिससे स्मारिका की छपाई वित्तीय दृष्टि से आसान हो गई। अगस्त 2015 में 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति' का "श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति" में विलय हो गया।

कल्याण के सन् 2002 के जून एवं सितम्बर के अंकों में श्रीरामचरितमानस के मंत्रों को सिद्ध करने की विधि, जप करने की विधि के साथ सिद्ध मंत्रों की एक सूची दी थी जिसे श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति (पंजीकृत) की वार्षिक स्मारिका के अंक 11 वि0 संवत् 2061 (सन् 2004-2005) में प्रथम बार प्रकाशित किया गया। तत्पश्चात् प्रतिवर्ष स्थाई स्तंभ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कई लोगों ने इससे अपना अभीष्ट प्राप्त किया है। मेरा भी अनुभव यही रहा कि जब-जब किसी कठिन/असंभव से लगने वाले कार्य को पूर्ण करने हेतु इन मंत्रों का सहारा लिया, आशातीत लाभ हुआ। कुछ मंत्रों का जिनसे मैंने और मेरे परिचितों ने लाभ उठाया, विवरण इस प्रकार से है (चौपाइयों/दोहों का संदर्भ कोष्ठक में है):-

1 परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी।। (1/105/6)

मोरि सुधारहिं सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती।। (1/28/3)

2 संकट निवारणार्थ

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।। (5/27/4)

3 रोग निवारणार्थ

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।। (7/21/1)

4 पुत्री के लिए सुयोग्य वर प्राप्ति हेतुः

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (1/236/7)

5 जीविका उपार्जन (सर्विस) हेतुः

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/197/7)

6 संतान प्राप्ति हेतुः

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।। (1/193/3)

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।। (1/200)

7 आपसी सद्‌भाव (प्रेम) बढ़ाने के लिएः

सब नर करहिं परस्पर पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। (7/21/2)

8. असमंजस की स्थिति में परम कल्याण हेतु।

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/132/7)

इन मंत्रों को श्रीरामचरितमानस पाठ (सम्पूर्ण अथवा केवल सुंदरकाण्ड) में सुंपट लगाकर अथवा श्रीहनुमान चालीसा के एक सौ पाठ करते समय

सुंपट लगाकर भी मैंने अभीष्ट फल प्राप्त किया है। श्रद्धा–विश्वास के साथ श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों/दोहों को मंत्रवत् मानकर जप–स्मरण करने से निश्चित रूप से अभीष्ट फल प्राप्त होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इस संदर्भ में कुछ अनुभवों का विवरण देना उचित समझता हूँ।

मेरे परिवार और मेरे परिचितों को 'मानस–मत्रों' से जो अभीष्ट फल प्राप्त हुआ, उसका क्रमवार वर्णन दिया जा रहा है। विवरण देने से पूर्व पाठकों से निवेदन है कि इसे अन्यथा न लें, क्योंकि मैं अपने परिवार का कुछ ऐसा विवरण दे रहा हूँ जो कि सामान्यतया सार्वजनिक नहीं किया जाता है। पाठकों के मन में 'मानस–मंत्रों' के प्रति प्रबल विश्वास जाग्रत हो, इस उद्देश्य से निम्नांकित विवरण प्रस्तुत है :–

मेरी पत्नी सन् 1972 से अस्थमा की बीमारी से पीड़ित हैं जिसका उल्लेख अध्याय 9 में किया जा चुका है। मैंने उनकी बीमारी दूर हो, इस उद्देश्य से क्रमांक–3 पर लिखित मंत्र का जप किया, इसके परिणामस्वरूप आज भी बीमारी पर नियंत्रण है। कई बार मैं ऐसी उलझन में पड़ गया कि क्या किया जाए, कोई स्पष्ट मार्ग नहीं दिखाई पड़ा, तब मैंने क्रमांक 8 पर लिखित मंत्र का जप किया और मुझे स्पष्ट संकेत मिल गया कि मुझे इस परिस्थिति में क्या करना चाहिए। सातवीं कक्षा से ही मैं परीक्षा पूर्व क्रमांक 1 पर लिखित मंत्र का जप कर लेता था, हालाँकि मुझे उस समय यह नहीं पता था कि यह परीक्षा में पास होने का मंत्र है। इसका पता मुझे तब चला जब कल्याण के सन् 2002 के मासिक अंक जून एवं सितंबर पढ़े। उल्लेखनीय है कि इस मंत्र के प्रभाव से मैं हमेशा अच्छे नम्बरों से पास होता रहा।

हमारे ज्येष्ठ पुत्र 'गिरीश' का अध्ययन बीच में इस तरह अटक गया था कि 'स्नातक' की परीक्षा पूर्ण करने में कई बाधाएँ आती रहीं। बारहवीं कक्षा के बाद उन्होंने इंजीनियरी डिग्री करने के लिए लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित 'इन्स्टीट्यूशन ऑफ इलैक्ट्रॉनिक एण्ड टैलीकम्यूनिकेशन इंजीनियर्स' के सैक्शन 'ए' की परीक्षा के एक ही बार में तीन पेपर पास

कर लिए। इससे आशा लगी कि चार साल में डिग्री हो जाएगी, पर बीच में ही इन्होंने एक कम्प्यूटर ट्रेनिंग में पार्ट टाइम प्रशिक्षण लेना प्रारंभ कर दिया और उसी के दो सहपाठियों के साथ एक कम्पनी रजिस्टर कराके 'कम्प्यूटर असैम्बिल' करने का कार्य प्रारंभ कर दिया। काम अच्छा चला, पर वित्तीय प्रबंध गड़बड़ाने के कारण कम्पनी बंद करनी पड़ी। तत्पश्चात् कम्प्यूटर से संबंधित सर्विस ज्वाइन कर ली। इस समय हमने मंत्र क्र0सं0 5 का जप प्रारंभ कर दिया और कालांतर में इसका सुपरिणाम सामने आया जिसका विवरण इस प्रकार से है:-

गिरीश का तकनीकी ज्ञान तो अच्छा था, पर स्नातक न होने के कारण उनकी अच्छी सर्विस नहीं लग रही थी। 'स्नातक' डिग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से बी.बी.ए. के पत्राचार कोर्स में प्रवेश ले लिया और प्रथम वर्ष में उत्तीर्ण होने पर द्वितीय वर्ष में प्रवेश मिल गया, पर इस बीच कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का 'वन टाइम बी.ए.' का विज्ञापन निकला जिसके अनुसार बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण करने के तीन साल उपरान्त कोई भी तीनों वर्षों के पेपर एक साथ दे सकते हैं। बेटे ने इसी का फार्म भर दिया और परीक्षा के समय लगभग एक माह कुरुक्षेत्र में रहकर तीनों वर्षों के पेपर एक साथ दिए और पास हो गया। इस प्रकार से दिसंबर 1996 में स्नातक डिग्री प्राप्त कर ली। तत्पश्चात् सी.एन.ई. (सर्टीफाइड नैटवर्क इंजीनियर) का कोर्स भी कर लिया तथा बहुत से कोर्स कर लिए इससे बेहतर सर्विस मिल गई। इसके बाद 2006 में एच.सी.एल. कम्पनी में बी0टैक0 डिग्री न होने पर भी अनुभव और सर्टीफिकेशन के आधार पर सर्विस मिल गई और फिर 2010 से 2016 तक वे प्रतिनियुक्ति पर अमेरिका भी रहे और बाद में एच.सी.एल. से भी सर्विस छोड़कर उससे भी अच्छी सर्विस ज्वाइन कर ली। मैं यह सब 'मानस-मंत्र' के जप का प्रभाव ही समझता हूँ।

हमारे छोटे पुत्र 'उमेश' का विवाह हुए तीन वर्ष हो गए थे, पर कोई संतान नहीं हुई। डॉक्टरी उपचार कराया, तब डॉक्टर ने कहा कि दम्पती में कोई कमी नहीं है, अब जब ईश्वर की कृपा होगी तभी संतान सुख प्राप्त होगा। यह सुनकर हमने मंत्र सं0 6 को विधिपूर्वक सिद्ध करके

विश्वासपूर्वक जप किया जिसके परिणामस्वरूप ईश्वर की कृपा से 17-12-2003 को हमारे पोता हुआ और फिर 11-11-2010 को पोती हुई। हमारे एक परिचित के भी संतान नहीं थी, उन्होंने भी उक्त मंत्र को सिद्ध करके श्रद्धा-विश्वास पूर्वक जप किया और उन्हें भी संतान सुख प्राप्त हुआ।

मेरी बेटी के विवाह में बड़ी समस्या आ रही थी, तब हमने क्रमांक 8 एवं 2 पर लिखित मंत्रों को सिद्ध करके जप किया, जिससे उसका विवाह सानंद संपन्न हुआ और विवाह के पश्चात् भी जो संकट आए वे भी ईश्वर की कृपा से दूर हो गए। यह सब मानस-मंत्रों का ही प्रभाव है।

मेरे एक सहपाठी की पुत्री का विवाह के उपरान्त संबंध विच्छेद हो गया था और उम्र 40 वर्ष के लगभग हो गई थी, उन्होंने क्र0सं0 4 पर लिखित मानस-मंत्र का जप किया। उसके परिणामस्वरूप जून 2021 में उनकी पुत्री का पुनर्विवाह सानंद सम्पन्न हो गया।

मेरे एक सुपरिचित ने बताया कि उनके इकलौते पुत्र का विवाह तो हो गया है, अच्छी पोस्ट पर है, पर सास-बहू की आपस में बिल्कुल नहीं बनती है। मैं रोज-रोज के झगड़े से तंग आ चुका हूँ। मैंने उन्हें क्रमांक 7 पर लिखित मानस-मंत्र का जप करने को कहा। उन्होंने श्रद्धापूर्वक जप किया, जिसके परिणामस्वरूप उनके पुत्र का पुणे ट्रांसफर हो गया। दूर रहने से सास-बहू के संबंध अच्छे हो गए। मैं इसे 'मानस-मंत्र' का ही प्रताप समझता हूँ।

उल्लेखनीय है कि मंत्र जप में मुख्य नियम श्रद्धा-विश्वास का है। कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें बैठकर (पूजा स्थल पर) जप करने का समय नहीं मिला तो चलते-फिरते या कार्य करते मानसिक जप किया, उससे भी उन्हें अभीष्ट फल प्राप्त हुआ।

ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, पर विस्तार भय से इस प्रसंग को यहीं विराम देता हूँ।

14. विदेश यात्रा प्रकरण

केन्द्रीय जल आयोग में तैनात हर अधिकारी की इच्छा रहती है कि उसे विदेश यात्रा का अवसर प्राप्त हो, पर बहुत कम को अवसर मिल पाता है। मेरे भी मन में यह इच्छा तो थी, पर कभी भी इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना नहीं की, हालाँकि जब कभी मेरे जीवन में कोई संकट आया मैंने भगवान से प्रार्थना की और संकट छूमंतर हो गया। ईश्वर की कृपा से ही मुझे तीन बार विदेश यात्रा का अवसर मिला हालाँकि इस हेतु मैंने कभी भी ईश्वर से प्रार्थना नहीं की, पर भगवान की कृपा से मेरे अन्तर्मन की इच्छा भी पूर्ण हो गई। मैं तीन बार विदेश यात्रा पर गया–एक बार प्रशिक्षण हेतु और दो बार भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के रूप में। विवरण इस प्रकार से है:–

14.1 प्रशिक्षण हेतु अमेरिका यात्रा:–

सन् 1980 की बात है मेरी पोस्टिंग झाँसी बाढ़ पूर्वानुमान मंडल में उप निदेशक के पद पर थी। उन्हीं दिनों दिल्ली से मेरे उच्च अधिकारी निरीक्षण हेतु झाँसी आए। उनके निरीक्षण होने पर ऐसा लगा कि वे मेरे कामकाज से खुश थे। बात आई–गई हो गई और मेरा स्थानान्तरण 31–10–1980 को आगरा मंडल में अधिशासी अभियंता के पद पर हो गया। सन् 1983 के प्रारंभ में मुझे दिल्ली बुलाया गया और सूचित किया कि आपको इसी वर्ष प्रशिक्षण हेतु अमेरिका जाना होगा। पासपोर्ट, वीजा आदि के फार्म भरकर मैं वापिस आगरा आ गया। पता चला कि 1980 में ही संयुक्त राष्ट्र संगठन के एक कार्यक्रम के अंतर्गत अपने देश से 4 अधिकारियों को 'जल विज्ञान' में प्रशिक्षण हेतु अमेरिका भेजा जाना था और इसके लिए सन् 1980 में जो अधिकारी दिल्ली से झाँसी मेरे कामकाज के निरीक्षण हेतु आए थे, उन्होंने ही उस समय मेरे नाम की संस्तुति कर दी थी। ईश्वर की कृपा से हम लोग जुलाई 1983 में अमेरिका की केलीफोर्निया यूनिवर्सिटी गए और वहाँ तीन माह के

प्रशिक्षण के पश्चात् हमें 'जल विज्ञान' में स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। इसके बाद 'बाढ़ पूर्वानुमान' के व्यावहारिक ज्ञान के लिए अमेरिका के पोर्टलैंड शहर में एक माह के लिए भेजा गया।

यहाँ पर मेरे रूमपार्टनर स्व. श्री के.पी. सिंह, पूर्व मुख्य अभियंता, के.ज.आ. थे जिनकी प्रेरणा से सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस ऑडियो रिकॉर्ड की। यह रिकार्डिंग श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की वेबसाइटः www.shriramcharit.com पर सुनी जा सकती है।

इस प्रकार चार माह अमेरिका में रहने के पश्चात् हम लोग स्वदेश आ गए।

14.2 ऑस्ट्रेलिया यात्राः-

सन् 2000 में मेरी पोस्टिंग दिल्ली में मुख्य अभियन्ता के पद पर थी। उन दिनों 'सिंचाई परियोजनाओं' की बैंचमार्किंग का कार्य मेरे अधीनस्थ निदेशालय में प्रारंभ हुआ। यह कार्य सिंचाई के क्षेत्र में उन दिनों पहली बार प्रारंभ हुआ था। इस कार्य के लिए विदेश से कुछ अधिकारी दिल्ली आए थे और उनके सौजन्य से हम लोगों ने भी यह विधा सीख ली तथा कई राज्यों में इसका प्रचार-प्रसार किया। महाराष्ट्र राज्य में इसका प्रयोग सघनता से हुआ जिसके परिणामस्वरूप उनकी सिंचाई क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। मेरे उच्च अधिकारी ने इस प्रकरण में एक रिपोर्ट तैयार करने को कहा ताकि इसे किसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इस क्षेत्र में भारत की उपलब्धि स्वरूप में कोई उच्च अधिकारी प्रस्तुत कर सकें। लेख तैयार किया गया। संयोगवश आस्ट्रेलिया में सम्मेलन की सूचना मिली, वहाँ लेख भेज दिया तथा वहाँ से निमंत्रण भी आ गया कि किसी वरिष्ठ अधिकारी को इस पर चर्चा हेतु भेजा जाए। हुआ यह कि उक्त तिथि से एक माह पूर्व मेरे उच्च अधिकारी को किसी अन्य कार्यक्रम में भाग लेने के लिए विदेश जाना पड़ा और भारत सरकार के आदेशों के अनुसार यदि किसी अधिकारी को तीन माह के अंदर दूसरी बार विदेश यात्रा पर जाना हो तो विदेश मंत्रालय की स्वीकृति लेनी आवश्यक थी। मेरे उच्च अधिकारी इस दृष्टिकोण से अब आस्ट्रेलिया नहीं जा सकते थे, अतः मुझसे कहा गया कि आप चले

जाएँ। ईश्वर की कृपा से विदेश जाने की सारी औपचारिकताएँ समय पूर्ण हो गईं और मैंने अक्तूबर 2003 में आस्ट्रेलिया के पर्थ शहर जाकर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

14.3 बीजिंग, चीन की यात्राः-

सन् 2004 के आस-पास मुझे केन्द्रीय जल आयोग के 'सिंचाई संगठन' का अतिरिक्त प्रभार दिया गया जो 2005 तक मेरे पास ही रहा। इस संगठन में 'इन्टरनेशनल कमीशन ऑन इरीगेशन एण्ड ड्रेनेज' का कार्य भी होता है। इस नाते मुझे उक्त संस्था के वर्किंग ग्रुप 'हिस्ट्री ऑफ इरीगेशन' का सदस्य भी नामित कर दिया गया। उस समय मेरा मुख्य प्रभार 'सिंचाई परियोजनाओं का निष्पादन एवं प्रबंध संगठन' का था। इससे मैंने भारत में सिंचाई परियोजनाओं पर एक विस्तृत लेख इस ग्रुप में भेज दिया जो स्वीकृत हो गया। इस बीच सन् 2005 में बीजिंग, चीन में उपर्युक्त संस्था का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित जिसमें भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के रूप में मुझे भी जाने का अवसर मिला। यह ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ, क्योंकि यदि मुझे सिंचाई संगठन का अतिरिक्त प्रभार न मिलता तो इस विदेश यात्रा पर जाने का प्रश्न ही नहीं था। इस प्रकार उपर्युक्त तीनों यात्राएँ भी ईश्वर की कृपा से संभव हो सकी।

बीजिंग (चीन) में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सितंबर 2005)

15. विभिन्न दुर्घटनाओं में भगवत्कृपानुभूति

विभिन्न दुर्घटनाओं में ईश्वर की कृपा से ही मेरी रक्षा हुई। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है:-

15.1 उफनती नदी में से बाल-बाल बचे

सितंबर 1968 में, जब मेरी पोस्टिंग इन्द्रावती नदी के बाएँ किनारे सात्धार में थी, हम चार लोग इन्द्रावती नदी के दाएँ किनारे पर किसी काम से शाम के समय नाव द्वारा गए। नदी उफान पर थी, पर दो धाराओं के बीच में कम वेग वाले स्थान पर नाव को जलधारा के ऊपरी ओर चढ़ाते थे, फिर अगली धारा में स्वत: नाव नीचे चली जाती थी। इस प्रकार हम नदी के उस पार चले और जब तक लौटने का समय हुआ तब तक अँधेरा हो गया, इससे यह नहीं समझ पा रहे थे कि दो धाराओं के बीच की जगह कहाँ है और हमारी नाव बहकर नीचे जाने लगी। बाएँ किनारे की ओर लाने का बहुत प्रयास किया गया पर नाव नीचे ही बहती गई। हमारे कैम्प से करीब दो-तीन किलोमीटर नीचे करीब 40 फीट गहरा जल प्रपात (वाटर फाल) है जहाँ पूरी नदी उसमें गिरती है। भय था कि यदि नाव जल्दी ही बाएँ किनारे तक न पहुँच सकी तो हम लोग जल प्रपात में समा जाएँगे। ईश्वर को पुकारने के अलावा और कोई उपाय नहीं था। भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ली और हम जल प्रपात से ऊपर की ओर किनारे लग गए। अब प्रश्न था कि ऐसे जंगल में जहाँ वन्य प्राणियों और सर्पादि का भी खतरा था, किस प्रकार अपने कैम्प तक पहुँचेंगे। इधर मेरी माताजी और पत्नी रो रही थीं कि अब क्या होगा। इतने में हम लोग सकुशल कैम्प पहुँच गए। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से ही हम उफनती नदी में से बाल-बाल बच गए।

15.2 झाँसी के समीप सड़क दुर्घटना:-

बात अगस्त 1979 की है तब मेरी पोस्टिंग झाँसी में बाढ़ पूर्वानुमान

मंडल में उप निदेशक के पद पर थी। हम तीन लोग धसान नदी पर बाढ़ पूर्वानुमान स्टेशन के निरीक्षण पर गए। लौटते समय रात हो गई। पानी भी बरस रहा था। मैंने जीप चालक को समझाया कि सावधानी से धीरे चलो, पर जैसे ही मुझे एक झपकी सी आई उसने एक एमबैस्डर गाड़ी के पीछे जीप तेज गति से चलाना शुरू कर दिया। वह गाड़ी तो आगे निकल गई पर तेज गति के कारण हमारी जीप बरुआ सागर के आस–पास एक तीव्र मोड़ के पहले फिसल कर पलट गई। सभी को कुछ चोटें आईं, पर मेरी नाक में अधिक चोट लगी। रात्रि के 9.30 का समय था। उस समय उस रोड पर और वाहन भी नहीं चल रहे थे कि हमारी सहायतार्थ कोई आ सके। अब ईश्वर कृपा देखिए। पहले तो यह कि यदि हमारी जीप तीव्र मोड़ के पास फिसलती तो नीचे करीब 25 फीट गहरी खाई में गिर जाती, पर इसके पहले ही पलटी, दूसरी कृपा यह कि जो एमबैस्डर हमसे आगे–आगे जा रही थी, थोड़ी देर में वह लौटकर आ गई और उसमें से एक अधिकारी उतरे और बोले कि मुझे यही आशंका थी कि आपकी गाड़ी संभवतः दुर्घटनाग्रस्त हो गई, क्योंकि आप लोग हमारी कार के पीछे–पीछे आ रहे थे और अचानक गायब हो गए। वे अधिकारी बाँदा के चीफ मेडीकल ऑफिसर थे। उन्होंने हम लोगों को अपनी कार में बिठाया और झाँसी में प्रारंभिक उपचार के पश्चात् हमें हमारे निवास पर पहुँचा दिया। **आज भी मेरी नाक पर उस दिन की चोट का निशान है जो भगवत्कृपानुभूति करा रहा है।**

15.3 पानीपत के पास सड़क दुर्घटनाः–

जुलाई 1985 में मैं करनाल डिस्चार्ज साइट का निरीक्षण करके उपमंडल दिल्ली के सहायक अभियंता के साथ दिल्ली लौट रहा था। उसी दिन मुझे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से आगरा जाने के लिए रात सात बजे की ट्रेन पकड़नी थी। ड्राइवर तेजी से जीप चला रहा था। पानी भी बरस रहा था। मेरे मन में विचार आया कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए और वही हुआ। कुछ ही देर बाद पानीपत के पास हमारी जीप सड़क से फिसलकर बाई ओर पलट गई। मैं सबसे बाहरी सीट पर खिड़की के पास बैठा था, अतः मेरे ऊपर सहायक अभियंता और उनके ऊपर

ड्राइवर गिरा। इस कारण सबसे ज्यादा चोट मुझे लगी। कुछ ही देर में पीछे आ रही बस से मैं और सहायक अभियन्ता दिल्ली आ गए। प्राथमिक उपचार के बाद दर्द निवारक (पेन किलर) इंजेंक्शन व दवा से कुछ आराम हो गया। सुबह मैं रेलगाड़ी से दोपहर तक आगरा पहुँच गया, तब तक डिवीजन में संदेश चला गया था और ड्राइवर मुझे लेने के लिए प्लेटफार्म पर आ गया। ट्रेन से उतरकर दो कदम ही चला था कि पसली में असहनीय वेदना हुई। मैं तुरन्त ही एक प्राइवेट अस्पताल चला गया, जहाँ एक्सरे देखकर डॉक्टर ने बताया कि आपकी पसली टूट गई है। यह ईश्वर की कृपा समझिए कि यह टूटते-टूटते बच गई और यदि टूट जाती तो हृदय को खराब कर देती। आप बहुत बच गए हैं। उन्होंने छाती पर एक पट्टी बाँध दी और कहा कि नहाते समय इसको खोल सकते हैं, पर इसके तुरंत बाद बाँध लें और आपको 21 दिन तक बैड रैस्ट करना होगा। ईश्वर की कृपा से लगभग एक माह में ठीक हो गया, पर दर्द बना रहा जो करीब दो वर्ष बाद ठीक हुआ।

इस प्रकार इस दुर्घटना में भी ईश्वर की कृपा से ही मैं बाल-बाल बच गया।

15.4 नोएडा में सड़क दुर्घटना:-

जो घटना घटित होना होती है वह तो होकर रहती है, पर प्रभु कृपा से उसकी तीव्रता कम हो जाती है। यही हाल सन् 2016 में मेरे साथ हुआ। मेरा बड़ा पुत्र गिरीश अमेरिका से मार्च 2016 में आने वाला था, किंतु उसे लगा कि जल्दी घर जाना चाहिए और वह जनवरी के अंतिम सप्ताह में नोएडा आ गया। फरवरी 2016 के प्रथम सप्ताह में रात्रि के समय मैं कुछ कार्यवश नोएडा के सैक्टर-36 से सैक्टर-37 जा रहा था। सड़क पार करने हेतु नियमानुसार पहले रुका और फिर दोनों ओर दृष्टि डाली। वह एक तरफ से वाहन चलने वाला रोड है। मैंने देखा कि लाल बत्ती पर सब वाहन रुके हुए हैं। जहाँ मैं सड़क पार करना चाहता था वह स्थान लाल बत्ती से लगभग एक सौ मीटर दूरी पर था, तो सोचा जब तक कोई वाहन आएगा मैं आसानी से सड़क पार कर लूँगा। सड़क पर घुप्प अँधेरा था, क्योंकि स्ट्रीट लाइट की रोशनी सघन वृक्षों की आड़

से सड़क पर नहीं पड़ रही थी। मैंने दौड़कर सड़क पार करनी चाही। उस समय एक पल के लिए मेरे मन में विचार आया कि यदि कोई वाहन ट्रॉफिक नियमों का उल्लंघन करते हुए लालबत्ती लाँघ कर आ भी जाए, तो उसकी हैड लाइट की रोशनी से अपना बचाव कर सकूँगा, आगे प्रभु इच्छा।

मैं सड़क पार कर ही रहा था कि एक मोटरसाइकिल वाला जिसकी हैड लाइट खराब थी लालबत्ती लाँघकर आ गया। उसने बड़े जोर से मुझे टक्कर मारी। मोटरसाइकिल का हैन्डल मेरी बाईं जाँघ के ऊपरी भाग में लगा और मैं गिर गया। ईश्वर की कृपा रही कि हैंडल जाँघ के एक तरफ लगा और यदि थोड़ा सा आगे हैंडल लगता तो मेरा क्या हाल होता, कुछ कहा नहीं जा सकता। दूसरी बात यह रही कि जमीन पर गिरते समय मेरा सिर जमीन से ऊपर उठा रहा, इससे सिर सुरक्षित रहा। मोटरसाइकिल वाला मुझे छोड़कर जाने वाला ही था, ऐसा मुझे बताया गया क्योंकि मुझे तो दर्द के मारे होश ही नहीं था कि कौन क्या कह रहा है या कर रहा है। इतने में मेरा एक परिचित व्यक्ति पीछे से आ गया और उसने मोटरसाइकिल वाले को पकड़ लिया तथा कहा ये अंकल सैक्टर–36 के डी ब्लॉक में रहते हैं, पहले इनको घर पहुँचाओ फिर जो करना हो करना। मेरी हालत ऐसी थी कि मैं एक कदम नहीं चल सकता था। उन दोनों ने मुझे टाँगकर मेरे निवास पर पहुँचाया और वापिस चले गए। रात्रि के समय दवा निवारक (पेन किलर) देकर मुझे सुलाने का प्रयास किया, किंतु रात्रि बारह बजे मेरा मुख इतना सूज गया कि एक आँख मुद गई, पर तब तक पेन किलर का असर हो गया था और मुझे नींद आने लगी। मैंने बेटे से कहा कि रात में परेशान न हो, सुबह अस्पताल ले जाना। दूसरे दिन अस्पताल में एक्सरे कराने पर पता चला कि जाँघ में कमर के पास ऐसा फ्रेक्चर है कि जिस पर प्लास्टर चढ़ाया नहीं जा सकता है, इन्हें दो माह बैड रैस्ट करना पड़ेगा। तीन दिन में अस्पताल से छुट्टी मिल गई, तब तक बाहरी चोटें काफी ठीक हो चुकी थीं।

घर आकर मुझे बिस्तर पर लिटा दिया गया और कुछ देर बाद मैंने

बेटे का सहारा लेकर बाथरूम जाने का प्रयास किया तो असहनीय पीड़ा हुई। उन्होंने कहा डॉक्टर की सलाह के अनुसार अब आपको बिस्तर से नहीं उठना है। इस प्रकार 15 दिन तक बिस्तर में ही पड़ा रहा। यह भी ईश्वर की कृपा थी कि मेरी श्रीमती जी जिनकी अस्थमा की बीमारी के कारण तबीयत खराब थी, अचानक ठीक हो गईं और उन्होंने पंद्रह दिनों तक मेरी ऐसी सेवा की जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे। पंद्रह दिन बाद बेटे ने वाकर ला दिया जिससे मैं बाथरूम जाने लगा और करीब डेढ़ माह बाद एक छड़ी के सहारे चलने लगा। वह छड़ी भी ईश्वर की कृपा से मैंने श्रीराम नवमी के दिन छोड़ दी। उस दुर्घटना से मैं पूर्व में वर्णित अन्य दो सड़क दुर्घटनाओं की तरह बाल–बाल बच गया। इस दुर्घटना में तो स्पष्ट रूप से भगवत्कृपा का आभास हुआ।

16. जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों का संक्षिप्त विवरण

इस रचना का मुख्य उद्देश्य मेरे उन अनुभवों को संकलित करना है जिनसे मुझे ईश्वरीय सत्ता में विश्वास दृढ़ होता गया तथा सुखदायिनी या कष्टप्रद कोई भी घटना हो किसी न किसी रूप में उससे भगवत्कृपानुभूति हुई। मेरे परम मित्र श्री राधा कृष्ण पाठक, दतिया (मध्य प्रदेश) अपने जीवन के अनुभवों के साथ-साथ अपनी जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों का विवरण लिख रहे हैं। उनसे हुई वार्ता से प्रेरणा प्राप्त कर मैं भी अपनी जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, **यद्यपि पहले यह अध्याय जोड़ना नहीं चाहता था क्योंकि इसमें केवल हमारा पारिवारिक विवरण ही हैं।**

वर्ष (सन्)विवरण

1946 मेरी माताजी (स्व0 श्रीमती रामा देवी पटैरया) को जगदम्बा मैया ने अर्द्धनिद्रा में आशीर्वाद दिया था जिसके परिणामस्वरूप मेरा जन्म ग्राम बलचौर, जिला हमीरपुर (अब महोबा) उ0प्र0 में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी शुक्रवार विक्रमी संवत् 2003 तदनुसार 29 नवंबर 1946 को हुआ था, पर स्कूल में जन्म तिथि 03-11-1946 लिखी गई क्योंकि मेरे पिता स्व0 श्री दुर्गा प्रसाद पटैरया ने मास्टर जी को भारतीय संवत्सर के अनुसार जन्म तिथि बताई थी। उन्होंने गणना करके अंदाज से जन्म तिथि लिख दी।

1953 मेरे जन्म स्थान ग्राम बलचौर में मार्च 1953 में प्राइमरी स्कूल खुला और हम करीब पंद्रह-बीस बच्चे पढ़ने जाने लगे। एक ग्रामवासी ने अपने मकान का बरामदा स्कूल के लिए दे दिया था, धूप और बरसात में हम लोग उसमें बैठ

जाते थे अन्यथा खुले में बैठकर पढ़ाई होती थी।

1957 जुलाई 1957 में हम दो बच्चों ने मैं और मेरे चचेरे भाई श्री मोहनलाल पटैरया ने कक्षा 5 उत्तीर्ण कर ली। वे तुरंत कुलपहाड़, जिला हमीरपुर (अब महोबा) में छटवीं कक्षा में पढ़ने के लिए चले गए, पर मेरी पढ़ाई बंद हो गई क्योंकि मेरे पिताजी बोर्डिंग का खर्च वहन नहीं कर सकते थे।

1958 जुलाई 1958 में मेरे दूसरे चचेरे भाई स्व0 श्री मुकुन्द लाल पटैरया के साथ मुझे कुलपहाड़ पढ़ने भेज दिया गया, क्योंकि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1958–59 शिक्षा सत्र से सरकारी स्कूल (कखा छटवी कक्षा) की फीस माफ हो गई और निवास का प्रबंध बिहारीजी के मंदिर में निःशुल्क हो गया था। जुलाई 1959 में परीक्षा परिणाम मिला। मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया, किंतु आगे की पढ़ाई बंद हो गई, क्योंकि स्व0 श्री मुकुन्द पटैरया ने किसी के बहकावे में आकर आगे पढ़ाई करने से मना कर दिया, हालाँकि आगे उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ।

1959 मेरी पढ़ने में बहुत रुचि थी, आगे पढ़ना चाहता था। मेरी विशेष रुचि देखकर मेरे पिताजी ने मुझे मेरी नानीजी के पास सिंगरावनकलाँ भेज दिया और नौगाँव, जिला छतरपुर (म0प्र0), जो वहाँ से 5 किलोमीटर की दूरी पर है, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में सातवीं कक्षा में प्रवेश दिला दिया। मध्य प्रदेश शासन द्वारा ग्यारहवीं कक्षा तक की फीस माफ कर दी गई थी, इससे मैं निश्चिंत हो गया कि 'हायर सैकेन्ड्री' तो कर लूँगा क्योंकि केवल किताबों का मामूली खर्च था जो मेरे पिताजी वहन कर सकते थे।

मैं बड़ी लगन से पढ़ाई करने लगा कि कहीं फेल न हो जाऊँ क्योंकि ऐसा हुआ तो उसी दिन से मुझे सिंगरावनकलाँ से भगा दिया जाएगा। ईश्वर की कृपा से स्कूल के पाँचों

सैक्शन में सातवीं कक्षा में मुझे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ और तभी से मुझे सरकार से वजीफा (स्कॉलरशिप) मिलना प्रारंभ हो गया जो कक्षा 11 तक मिलता रहा क्योंकि ईश्वर की कृपा से हर कक्षा में प्रथम स्थान आता रहा।

वह दिन जब सातवीं कक्षा का परीक्षा–परिणाम सुनाया गया, शायद मेरे जीवन की सर्वाधिक खुशी का दिन था, क्योंकि मैं आशंकित था कि कहीं फेल न हो जाऊँ, पर परिणाम सुनकर ईश्वर की कृपा का स्मरण कर भाव–विभोर हो गया था।

1961 कुछ अपरिहार्य कारण से मुझे सिंगरावनकलाँ से हटना पड़ा। मैं नौगाँव में एक कमरा किराए पर लेकर रहने लगा और ट्यूशन करके खर्च चलाता रहा। इस प्रकार कक्षा 9 से डिप्लोमा कोर्स तक की पढ़ाई नौगाँव (म0प्र0) में हुई।

1964 1) जून 1964 में मेरी छोटी बहिन रानीबाई का शुभ विवाह हुआ।

2) जुलाई 1964 में हायर सेकेन्ड्री पास करने के पश्चात् मुझे नौगाँव पॉलीटैकनिक में ''सिविल इंजीनियरी' में प्रवेश मिला। मैरिट लिस्ट में मेरा प्रथम स्थान था, इससे वहाँ भी मुझे वजीफा (स्कॉलरशिप) स्वीकृत हो गया जो पूरे कोर्स में अर्थात् दिसंबर 1966 तक मिलता रहा। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से मुझे कभी भी पढ़ाई में आर्थिक अभाव नहीं रहा। अनेक कठिनाइयाँ आईं, पर ईश्वर की कृपा से सभी को पार करता हुआ लक्ष्य तक पहुँच गया।

1965 नौगाँव में जनवरी 1965 में मेरा परिचय डॉ0 महेश लाल डिड्डी से हुआ और उनके कीर्तन मंडल का सदस्य बन गया। उन अनन्य शिव भक्त को मैंने गुरु वरण कर लिया। उनकी कृपा से मुझे हर घटना में भगवत्कृपानुभूति होने लगी।

1966 1) 30 मई 1966 को मेरा विवाह पिपरामाफ, जिला हमीरपुर

(अब महोबा), निवासी स्व0 श्री जगत प्रसाद शर्मा (नायक) एवं स्व0 श्रीमती ललिता देवी की सुपुत्री 'कुसुम' से हो गया, हालाँकि उस समय मैं डिप्लोमा कोर्स भी पूर्ण नहीं कर पाया था।

2) दिसंबर 1966 में डिप्लोमा कोर्स पूर्ण हुआ। मध्य प्रदेश तकनीकी बोर्ड में मेरा चतुर्थ स्थान रहा, इसी कारण बिना आवेदन किए मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में मेरी सर्विस लग गई थी।

1967 12 जून 1967 सोमवार को नौगाँव में मेरे गुरुजी डॉ0 महेश लाल डिड्डी द्वारा नव निर्मित शिव मंदिर में रुद्राभिषेक हुआ। उसी दिन मुझे नियुक्ति-पत्र मिला और 19-06-1967 को मैंने जगदलपुर में कार्यभार ग्रहण किया।

1968 नवंबर 1968 में ए.एम.आई.ई. (सैक्शन ए) की परीक्षा दी।

1970 हमारे प्रथम सुपुत्र 'गिरीश' का जन्म 20-02-1970 को नौगाँव (म0प्र0) में हुआ।

1971 नवंबर 1971 में ए.एम.आई.ई. (सैक्शन बी) की परीक्षा दी जिसमें उत्तीर्ण हो गया। इस प्रकार इंजीनियरी डिग्री पूर्ण हो गई।

1972 मेरी दूसरी छोटी बहिन 'शान्ती देवी' का शुभ विवाह हुआ।

1973 1) हमारे द्वितीय सुपुत्र 'उमेश' का जन्म 21-04-1973 को जिला महोबा (उ0प्र0) में हुआ।

2) दिनांक 21-05-1973 को मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में सहायक अभियंता (सिविल) के पद पर चयन होने पर जगदलपुर (मध्य प्रदेश अब छत्तीसगढ़) में कार्यभार ग्रहण किया।

1974 1) मई 1974 में यात्रा के दौरान कांकेर (मध्य प्रदेश अब छत्तीसगढ़) में गंभीर रूप से बीमार हुआ, पर ईश्वर की कृपा से ठीक होकर अपने गृह ग्राम में पहुँचकर पत्नी और

बच्चों को पहुँचाया क्योंकि शीघ्र ही दिल्ली जाना था।

2) जून 1974 में मध्य प्रदेश विद्युत मंडल से कार्यभार मुक्त होकर 'केन्द्रीय जल आयोग' नई दिल्ली में सहायक निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण किया।

3) जुलाई-अक्तूबर 1974 में श्री लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडैमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी में प्रशिक्षण प्राप्त किया। मूलत: यह प्रशिक्षण भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) तथा समवर्गी सेवाओं के लिए ही होता था, किंतु उस समय यह 'इंजीनियरी सेवा' के लिए भी अनिवार्य था। कुछ समय बाद यह 'इंजीनियरी सेवा' के लिए बंद कर दिया गया।

4) नवंबर 1974 में मैं अपने परिवार को दिल्ली ले आया और बड़े पुत्र गिरीश का के0जी0 कक्षा में एडमीशन करा दिया।

1975 जुलाई 1975 से मार्च 1976 तक अपने दो निकटतम संबंधियों को अपने साथ ही दिल्ली में रखकर 'सेनेटरी इंस्पैक्टर' का प्रशिक्षण दिलवाया।

1977 दिनांक 22 जुलाई 1977 को दिल्ली में सुपुत्री 'प्रीती' का जन्म हुआ।

1978 दिनांक 30-12-1978 को पदोन्नति पर दिल्ली में उप निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण किया।

1979 1) मई 1979 में केन्द्रीय जल आयोग के बाढ़ पूर्वानुमान मंडल, झाँसी में उप निदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

2) अगस्त 1979 में धसान नदी के एक स्थल का निरीक्षण करके लौटते समय रात्रि के 9.30 बजे जीप दुर्घटना में हम ईश्वर की कृपा से बाल-बाल बचे।

1980 दिनांक 01 नवंबर 1980 में स्थानान्तरण पर आगरा मंडल में अधिशासी अभियन्ता के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

1983 जुलाई से सितंबर 1983 में संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम के अंतर्गत अमेरिका की 'केलीफोर्निया यूनीवर्सिर्टी' में 'जल विज्ञान' में प्रशिक्षण प्राप्त करके स्नातकोत्तर प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। तत्पश्चात् अक्तूबर 1983 में अमेरिका के पोर्टलैंड शहर में बाढ़ पूर्वानुमान का व्यावहारिक ज्ञान ग्रहण किया।

1985 1) जुलाई 1985 में पानीपत के पास सड़क दुर्घटना में मैं ईश्वर की कृपा से बाल-बाल बचा।

2) दिनांक 14 सितंबर 1985 को नई दिल्ली में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा मुझे भारत सरकार का सर्वोच्च 'राजभाषा सम्मान' प्रदान किया गया।

1986 पूज्य माताजी श्रीमती रामा पटैरया का 09-01-1986 को देहान्त हो गया।

1987 जून 1987 में आगरा से स्थानांतरित होकर अपने नव निर्मित मकान डी-11, सैक्टर-36, नोएडा में शिफ्ट किया। जुलाई 1987 में केन्द्रीय जल आयोग के मुख्यालय दिल्ली में उप निदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण किया तथा अगस्त 1989 तक 'संपादक भगीरथ' के पद का भी कार्य किया।

1988 सितंबर 1988 में 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति' से जुड़े। इस समिति का अगस्त 2015 में 'श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) में विलय हो गया। यह समिति आज भी कार्यशील है।

1989 दिनांक 22 अगस्त 1989 को 4 वर्ष की प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) में उप सचिव, भारत सरकार के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

1990 निवासियों के सहयोग से सी-ब्लॉक, सैक्टर-36, नोएडा में 'गीता रामायण समिति' का पंजीकरण कराके श्रीराम मंदिर

का निर्माण प्रारंभ किया गया।

1991 दिनांक 04 मार्च 1991 को स्वरचित कविताओं का संग्रह हिन्दी अकादमी, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से 'भक्ति पुष्प' प्रकाशित हुआ।

1993 गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उप सचिव पद से कार्यभार मुक्त होकर 22-10-1993 को केन्द्रीय जल आयोग में निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार सँभाला।

1994 1) जनवरी 1994 में नियमित रूप से निदेशक पद पर प्रोन्नत।

2) दिनांक 14 जून 1994 को हमारे ज्येष्ठ सुपुत्र गिरीश का शुभ विवाह ग्राम-हिलुआ, जिला महोबा निवासी श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी, एस0डी0ओ0, सिंचाई विभाग, (म0प्र0 शासन) एवं श्रीमती जानकी देवी की सुपुत्री 'रमा' से हुआ।

1995 1) फरवरी-मार्च में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करके (पंजीकरण 1978 में करा लिया था) गोरखपुर स्कूल ऑफ नेचुरल थेराप्यूटिक्स से प्राकृतिक चिकित्सा और योग में डिग्री (एन.डी., वाई.डी.) प्राप्त की।

2) दिनांक 27 जून 1995 को पूज्य पिताजी श्री दुर्गा प्रसाद पटैरया का देहान्त हो गया।

1992-1996 केन्द्रीय सरकारी सेवा सहकारी भूमि तथा गृह निर्माण समिति लि0 के कार्यकारी निदेशक के पद का कार्य किया। इस दौरान सैक्टर-31 एवं 36, नोएडा में सामुदायिक केन्द्रों का निर्माण हुआ।

1997 1) दिनांक 16 अगस्त 1997 को स्थानांतरण पर केन्द्रीय जल आयोग आगरा के प्रबोधन निदेशालय में निदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

2) दिनांक 06-11-1997 को हमारे ज्येष्ठ सुपुत्र गिरीश की सुपुत्री 'मान्या' का जन्म हुआ।

1999 दिनांक 18 फरवरी 1999 को हमारे कनिष्ठ सुपुत्र उमेश का शुभ विवाह बाँदा (उ0प्र0) निवासी स्व0 श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा (पूर्व विधायक, उ0प्र0 विधान सभा) एवं स्व0 श्रीमती लता शर्मा की सुपुत्री 'सुगन्धिता' से हुआ।

2000 1) दिनांक 04 मार्च 2000 महा शिवरात्रि के दिन हमारे ज्येष्ठ सुपुत्र गिरीश के बेटे 'वरद' का जन्म हुआ।

2) दिनांक 14-09-2000 को दिल्ली में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में "राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सम्मान" प्राप्त हुआ।

3) दिनांक 27 दिसम्बर 2000 को पदोन्नति पर केन्द्रीय जल आयोग के मुख्यालय दिल्ली में मुख्य अभियंता (चीफ इंजीनियर) पदेन कमिश्नर, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

2003 1) भारत सरकार से अनुदान प्राप्त स्वयंसेवी संस्था केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद का महामंत्री नामित। सन् 2005-06 में इसका उपप्रधान एवं सन् 2007 से इसकी परामर्शदातृ समिति का सदस्य चयनित। इस संस्था की ओर से भारत सरकार के कई मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियों में नामित।

2) दिनांक 01-09-2003 को अखिल भारतीय जिझौतिया ब्राह्मण महती सभा का अध्यक्ष नामित।

3) अक्तूबर 2003 में पर्थ, आस्ट्रेलिया में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए शोध लेख प्रस्तुत किया।

4) दिनांक 17-12-2003 को हमारे कनिष्ठ सुपुत्र 'उमेश' के सुपुत्र 'ओजस' का जन्म हुआ।

2005 1) दिनांक 30 अप्रैल 2005 को हमारी सुपुत्री प्रीती का स्व0

श्री इंद्रजीत कौल एवं श्रीमती सुषमा कौल (कश्मीरी पंडित) के सुपुत्र 'बिपिन कौल' से विवाह सम्पन्न हुआ।

2) सितम्बर 2005 में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के रूप में बीजिंग, चीन में इंटरनेशनल कमीशन ऑन इरीगेशन एण्ड ड्रेनेज के सम्मेलन में भाग लिया। 'हिस्ट्री ऑफ इरीगेशन' ग्रुप के एक सदस्य के रूप में उत्कृष्ट निष्पादन (बैस्ट परफोरमैंस) के लिए प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

2006 1) दिनांक 21 अप्रैल 2006 को हमारी सुपुत्री 'प्रीती' की प्रथम सुपुत्री 'वदन्या' का जन्म हुआ।

2) दिनांक 30 नवंबर 2006 को सरकारी सेवा से निवृत्त हुए।

2007 मार्च 2007 में ग्राम-बलचौर, जिला महोबा (उ0प्र0) स्थित अपने पैतृक मकान का जीर्णोद्धार कराया।

2010 1) अप्रैल 2010 में हमारे ज्येष्ठ सुपुत्र 'गिरीश' की पोस्टिंग अमेरिका में हुई।

2) दिनांक 11 नवंबर 2010 को मुंबई में हमारे कनिष्ठ सुपुत्र 'उमेश' की सुपुत्री 'काव्या' का जन्म हुआ।

3) दिनांक 14 सितंबर 2010 को स्वरचित कविताओं का संग्रह 'सप्त-सुमन' प्रकाशित हुआ।

2011 दिनांक 22 जून 2011 को हम दोनों (पति-पत्नी) ज्येष्ठ सुपुत्र गिरीश के पास अमेरिका गए और वहाँ करीब 6 माह रहे।

2014 दिनांक 13 फरवरी 2014 को गुड़गाँव (गुरुग्राम) में हमारी सुपुत्री प्रीती की द्वितीय सुपुत्री 'काइरा' का जन्म हुआ।

2016 1) जनवरी 2016 में हमारे ज्येष्ठ सुपुत्र 'गिरीश' अमेरिका से सपरिवार वापिस आए और मैं फरवरी 2016 के प्रथम सप्ताह में एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया, दो माह तक बिस्तर पर रहा। यह ईश्वर की कृपा ही है कि दुर्घटना

के पूर्व वे वापिस आ गए और मेरी हर प्रकार से सेवा की। उल्लेखनीय है कि हमारे कनिष्ठ सुपुत्र 'उमेश' की अमेरिका पोस्टिंग होने के बाद गिरीश ने अपने 'ग्रीन कार्ड' पर आगे कार्रवाई नहीं की और हमारी सेवा के उद्देश्य से स्वदेश वापिस आ गए।

2) मई 2016 में विवाह की स्वर्ण जयंती पर हम दोनों (पति-पत्नी) नेपाल गए और भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन कर आनंद प्राप्त किया।

2021 दिनांक 08-12-2021 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) के सौजन्य से यह पुस्तिका प्रकाशित हुई।

एक इष्ट-मंत्र-ग्रन्थ

भगवान के सभी नाम रूपों में समानता समझकर सभी के प्रति आदरभाव होना चाहिए, पर इष्टदेव एक ही मानें और सभी नाम-रूपों में उसी की छवि देखें। गोस्वामी तुलसीदासजी के इष्टदेव मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम थे। वे मथुरा-वृंदावन भी गए और जब उन्होंने बाँके बिहारीजी के दर्शन किए तब यह कहा-

भली बनी छवि आपकी भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक नमत है धनुषबान लो हाथ॥

कहते हैं-अपने जन के मान हित श्याम बनें रघुनाथ'।

उल्लेखनीय है कि सोने से विभिन्न आभूषण बनाए जाते हैं, क्योंकि भिन्न-भिन्न लोगों की पसंद अलग-अलग होती है, किंतु सभी आभूषणों के मूल में तो सोना ही है। इसी प्रकार किसी को पेड़ा पसंद है तो किसी को जलेबी, पर इनके मूल में तो चीनी ही है। ऐसे ही अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान की सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। वे ही सभी नाम-रूपों में व्यक्त हो रहे हैं। साधक अपनी रुचि के अनुसार किसी विशेष नाम-रूप की उपासना करता है। साधक

शेष पृष्ठ 86 पर...

नानीजी का डाँटना कल्याणकारी बना

जुलाई सन् 1959 की बात है जब मैं अपनी नानीजी के पास सिंगरावनकलाँ, जिला–छतरपुर (म0प्र0) में रहते हुए नौगाँव में सातवीं कक्षा में पढ़ता था। सिंगरावन कलाँ से कुछ अन्य विद्यार्थी भी रोज 5 किलोमीटर पैदल चलते हुए मेरे साथ जाते थे। एक दिन सभी ने विचार किया कि हम नदी तरफ घूमने जाएँगे। हम लोग नदी किनारे बैठकर गप–शप करते रहे, समय का ध्यान ही नहीं रहा और रात्रि के आठ बज गए। आने पर नानी जी ने बहुत डाँटा और कहा कि तुम ऐसा ही रोज करोगे क्या? तुम्हारा यह भी सहारा नहीं कि शाम को जब गाय आती है तो उसको बाँध दो। बस! इतना सुनना था कि मैंने तत्क्षण संकल्प किया कि आज के बाद कभी भी किसी के साथ नहीं जाऊँगा। इसका परिणाम यह हुआ कि मुझे पढ़ाई के लिए अधिक समय मिलने लगा और नानी जी इतनी प्रसन्न थीं कि उन्होंने मुझे सिंगरावन कलाँ से हटाने का विरोध भी किया था, पर होनहार जो होनी होती है, होकर रहती है। जुलाई 1961 में मुझे नौगाँव जाकर अपने रहने की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ी। प्रारंभ में तो दुखी हुआ, पर ईश्वर की कृपा से यही कल्याणकारी सिद्ध हुआ।

...पृष्ठ 85 का शेष

के लिए यह आवश्यक है कि अपनी रुचि के अनुसार एक इष्टदेव का वरण करे और फिर तदनुसार एक मंत्र और एक ग्रन्थ को आत्मसार करें, हालाँकि जैसा उपर्युक्त वर्णित है, सभी नाम–रूपों एवं मंत्रों–ग्रन्थों में आदरभाव रखना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि आप श्रीरामजी को अपना इष्टदेव वरण करते हैं तो "ॐ राम रामाय नमः" या "श्रीराम जय राम जय जय राम" इष्ट मंत्र और 'श्रीरामचरितमानस' इष्ट ग्रन्थ हो सकता है। इस प्रकार मेरे विचार से साधक को एक इष्ट–मंत्र–ग्रन्थ को अपनाकर साधनारत होना चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणिकता

ज्योतिष शास्त्र वेद का प्रधान अंग माना जाता है। यह एक विशुद्ध वैज्ञानिक शास्त्र है। इसका जितना ही गहराई से विवेचन किया जाए, तथ्य प्राप्त करने में उतनी ही सुविधा होती है, किंतु गंभीर अध्ययन और विवेचन के अभाव में केवल व्यवसायिक दृष्टिकोण के कारण भ्रम के अवसर उपस्थित होते हैं। ग्रहों की गतिविधि तथा स्थिति के उचित एवं मार्मिक अवलोकन द्वारा जो तथ्य उपलब्ध किए जा सकते हैं वे अवश्य ही लाभकारी सिद्ध होंगे। फिर उनमें संदेह का अवसर नहीं रह सकता है। इसी प्रकार सामुद्रिक शास्त्र (हस्त रेखा विज्ञान) एवं अंक ज्योतिष शास्त्र भी प्रमाणिकता से भविष्य कथन में सक्षम हैं। इस संदर्भ में मेरा अनुभव इस प्रकार से है:–

(1) अगस्त 1959 में जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ रहा था मेरा मस्तक देखकर ग्राम सलैया, जिला छतरपुर (म0प्र0) निवासी एक शास्त्रीजी ने कहा था कि यह बालक आगे चलकर बहुत बड़ा अधिकारी बनेगा। उनकी इस बात का मुझे तब ध्यान आया जब मैंने जून 1974 में भारत सरकार में प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी के रूप में कार्यभार सँभाला।

(2) मेरा हाथ देखकर एक ज्योत्षी ने बताया कि लगभग 40 वर्ष की उम्र में एक दुर्घटना में आपकी मृत्यु का योग है और यदि ईश्वर की कृपा से बच गए तो फिर आपकी दीर्घायु होगी। जुलाई 1985में (मेरी उम्र उस समय 39 वर्ष की थी) पानीपत के पास हुई सड़क दुर्घटना में मेरी पसली क्रेक हो गई थी। डॉक्टर ने बताया कि आपका हृदय चमत्कारिक रूप में बच गया। इस प्रकार यह भविष्यवाणी सत्य निकली।

(3) जब कभी मेरे परिवार में कोई परेशानी आई, हमने पं0 दिनेश चंद्र

शर्माजी (फोनः 9811056467) को जन्मपत्री दिखाई और उन्होंने जो जप, पूजा-पाठ आदि बताया, हमने पूर्ण श्रद्धा-विश्वास के साथ उसे किया, जिससे हर बार अभीष्ट फल प्राप्त हुआ।

इस प्रकार से मेरा मानना है कि ज्योतिष शास्त्र एवं सामुद्रिक शास्त्र में विश्वास करना चाहिए, पर इस हेतु किसी सक्षम विद्वान से ही संपर्क किया जाए।

श्रीरामजी के प्रति आस्था दृढ़ हुई

जुलाई 1960 को ग्राम सिंगरावनकलाँ में देवी जी के मंदिर के सामने एक जात्रा (इसमें कुछ भूत-प्रेत किसी व्यक्ति के सिर आते हैं) का कार्यक्रम था। यह रात्रि के आठ बजे के बाद होनी थी। मैंने जाने के लिए नानाजी से अनुमति भी ले ली थी और जाने को तैयार ही था कि इस बीच मेरे मामाजी नौगाँव से आ गए। मुझे जाता हुआ देखकर टोका कि कहाँ जा रहे हो। मैंने पूरा वृतांत सुनाया क्योंकि मुझे जात्रा में बहुत श्रद्धा थी और इसे मैं एक धार्मिक कृत्य समझता था। मामाजी ने विस्तार से समझाया कि ये भूत-प्रेतों की पूजा तो तामसी लोग करते हैं। गीता में यही लिखा है। साक्षात् देवी कभी किसी के सिर नहीं आतीं हैं। जोगिनी या भूत-प्रेतों की आत्माएँ ही किसी मानव के अंदर प्रवेश करके उनसे अपनी इच्छानुसार बुलवाती हैं। तुम इन सब प्रपंचों में मत पड़ो। सुना है तुम नानीजी को रोज रामायण सुनाते हो, तब तुम श्रीरामजी की ही उपासना क्यों नहीं करते? उनके समझाने पर मैं जात्रा में नहीं गया और उसी दिन मैंने श्रीरामजी को अपना इष्टदेव वरण कर लिया। **यह ईश्वर की कृपा ही है कि मेरी आस्था श्रीरामजी में और दृढ़ हो गई।**

विजय मंत्र

श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम॥

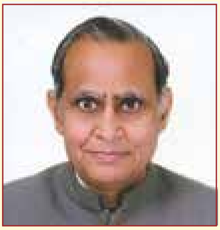

लेखक परिचय

जन्म - ग्राम - बलचौर, जिला - महोबा (उत्तर प्रदेश), नवम्बर (1946)

शिक्षा - हिन्दी माध्यम से उच्चतर माध्यमिक परीक्षा (1964), सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा (मध्य प्रदेश में चतुर्थ स्थान) 1967, सिविल इंजीनियरी में स्नातक डिग्री (1971), अमेरिका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय से 'जल विज्ञान' में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र (1983) तथा गोरखपुर स्कूल ऑफ नेचुरल थेराप्यूटिक्स, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग में डिग्री (1995)।

अनुभव :

(क) **तकनीकी क्षेत्र :** सन् 1967 से 1974 तक मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में ओवरसियर/सहायक इंजीनियर के पद पर कार्य किया। जून 1974 में 'केन्द्रीय जल इंजीनियरी सेवा' से केन्द्रीय जल आयोग में सेवा प्रारम्भ की और नवंबर 2006 में मुख्य इंजीनियर के पद से सेवा निवृत्त। तत्पश्चात् भारत सरकार द्वारा उच्चतर प्रशासनिक ग्रेड (H.A.G.) स्वीकृत।

(ख) **राजभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्र** (1) उपसचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)के पद पर कार्य किया। (1989-93)

(2) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के महामंत्री एवं उपप्रधान के रूप में कार्य किए।

(3) भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहे/हैं।

(4) विभिन्न धार्मिक/सामाजिक संस्थाओं की कार्यकारिणी के सदस्य रहे/हैं।

लेखन-संपादन कार्य :

भागीरथ, विज्ञान गंगा तथा अन्य पत्रिकाओं के संपादक रहे/हैं। समाचार पत्रों/पत्रिकाओं/राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 52 लेख (34 हिन्दी तथा 18 अंग्रजी में) प्रकाशित। स्वरचित कविताओं का संग्रह भक्ति पुष्प (1991) एवं सप्त सुमन (2010) प्रकाशित।

सम्मान प्राप्ति :

राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सितंबर, 1985 में माननीय प्रधानमंत्री जी से **राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र** प्राप्त किया। सितम्बर, 2000 में इस हेतु **अन्तरराष्ट्रीय संस्था द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित किया गया।**

9 789355 660428